देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वाको पाताल कुंडली नामकिनों ॥ अथ पाताल कुंडलीको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर तीन गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ आगें तीन गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ फेर तीन गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर दोय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ ओर च्यार लघुअशब्द होय । तहां प्रथम आवापक । १ । दुसरो बिक्षेपक । २ । तीसरो निष्क्रामक । ३ । चोथों प्रवेशक । ४ । ऐसो जो ताल ताहि पातालकुंडली जांनिये ॥ यह ताल गुनचालिस तालो है ॥ अथ पातालकुंडलीको सरूप लिख्यते । ३ऽ । ३ऽ । ऽ३ । ३३ऽऽऽऽ३ऽऽऽऽ३ । ऽ । ३ऽ । । ऽऽऽ । ३ ० ० । (। । । ।) अथ पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलू कहत हे ॥ ताथै । ततत्थ ततत्त थैथै ३ थाथा किटकिट ऽ किट किट । किटथों ताथों ततथों ३ ततत तत्था ऽ ताहं । हंतो ताहं ऽ ताकिन किनकिन तकुदं ३ कुकुथों । थुंथुं गाथुं गाथुं ३ थुंगा ताधिमि तताधिमि ३ तत तत धिमिधिमि ऽ धिमिधिमि ततत्तत ऽ मटकिट किटकिट ऽ मटकिट ताता थोंगा ३ ततत्तत थोंगा ऽ थोंथों थोंगा ऽ था था थुमकिट ऽ धुमुकिट थडिथरि कुंथरि ३ कुकुथरि । कुकुथा थैथा ऽ थाथै । थाथै थाधल धलधल ३ धलधल धलधल ऽ धलधल । धलधल । धल धल गिनधधि ऽ गनधधि गनथों ऽ ततत्तत थैता ऽ किटकिट । किटतत किटतत किटथों ३ तत० थों० ततथों । कुकुथरि । थोंथरि । ततदिधि । गणथों । इति पातालकुंडली ताल संपूर्णम् ॥

पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो. ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताथै	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तितत्त थेई थेई	ततथै तततत थैथै	प्लुत ताल मात्रा (३ २ ।॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३.	थेई तितत्त	थाथा किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई	किट किट	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई तितत्त थेई थेई	किटथों ताथों ततथों	प्लुत ताल मात्रा (३ ५ ।॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
६.	थेई तितत्त	तेतत तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
७.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई तितत्त	हंतो ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो. ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	थेई तिततत थेई थेई	ताकिन किन किन तकुर्द	प्लुत ताल मात्रा (३ ९ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१०.	थेई	कुकुथों	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
११.	थेई तिततत थेई थेई	थुंथुं गाथुं गाथुं	प्लुत ताल मात्रा (३ ११ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकं हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१२.	थेई तिततत थेई थेई	थुंगा ताधिमि तताधिमि	प्लुत ताल मात्रा (३ १२ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१३.	थेई तिततत	ततत धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १३ ॥ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
१४.	थेई तिततत	धिमिधिमि ततत	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ॥ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
१५.	थेई तिततत	मटकिट किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ॥ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
१६.	थेई तिततत थेई थेई	मटकिट ताता थोंगा	प्लुत ताल मात्रा (३ १६ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदा झालो

पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो, ३९.

ताल.	थचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१७.	थेई तिततत	ततवत थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १७ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
१८.	थेई तिततत	थोंथों थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
१९.	थेई तिततत	थाथा धुमकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १९ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२०.	थेई तिततत थेई थेई	धुमुकिट थडि थरि कुंथरि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २० ॥)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२१.	थेई	कुकुथरी	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई तिततत	कुकुथा थैथा	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ॥	गरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२३.	थेई	थाथै	लघु ताल मात्रा । २३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२४.	थेई तिततत थेई थेई	थाथै थाधल धलधल	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २४ ॥)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो

पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो, ३९.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समज्या.
२५.	थेई तिततत	धलधल धलधल	गुरु ताल मात्रा ऽ २५ ॥ᐤ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२६.	थेई	धलधल	लघु ताल मात्रा । २६ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२७.	थेई	धलधल	लघु ताल मात्रा । २७ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२८.	थेई तिततत	धलधल गिन धधि	गुरु ताल मात्रा ऽ २८ ॥ᐤ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२९.	थेई तिततत	गनधधि गनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २९ ॥ᐤ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३०.	थेई तिततत	तततत थता	गुरु ताल मात्रा ऽ ३० ॥ᐤ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३१.	थेई	किटकिट	लघु ताल मात्रा । ३१ ।	लघुकी सहनाणी अंक ह सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३२.	थेई तिततत थेई थेई	किटतत किटतत किटथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३२ ॥ᐤ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा बिंदी झालो

पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो, ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३३.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ३३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधी
३४.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ३४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधी
३५.	थेई	ततथों	लघु ताल मात्रा । ३५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३६.	थेई	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । ३६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ताई –। निशब्द...आवापक...दाहिणो हाथ वाहणी त्रफ चलावनों
३७.	थेई	थोंथरि	लघु ताल मात्रा । ३७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ।–निशब्द...बिक्षेपक...दाहिणो हाथ दाहिणीत्रफ चलावनों पतिककी त्रफ
३८.	थेई	ततदिधि	लघु ताल मात्रा । ३८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ⊤ निशब्द...निष्कामक...दाहिणो हाथ उपरनें चलावनों
३९.	थेई	गणथों	लघु ताल मात्रा । ३९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ⊥ निशब्द...प्रवेशक...दाहिणो हाथ निचेंनो चलावनों

इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालो, ४४.

अथ इंद्रलोककुंडलीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनम विचारके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमे

वरतिवेको चंचत्पुटादि पांचों तालनसों। लघु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके देशी ताल उत्पन्न करि-वाको। इंद्रलोककुंडली नाम किनो। यह ताल चवालीस तालो है। अथ इंद्रलोककुंडलीको लछन लिख्यते॥ जामें दोय लघु होय। लघु एक मात्राको जांनिये॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ ओर तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ ओर तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ फेर तीन प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ आगे दोय प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ फेर दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ ओर दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ और एक प्लुत एक लघु होय एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ ओर च्यार जामें लघु अशब्द होय। तहां पहिले आवापक होय। १। ओर दूसरो विक्षेपक। २। तीसरो निष्कामक। ३। चोथो प्रवेशक होय। ४। ऐसो जो ताल ताहि इंद्रलोककुंडली जांनिये॥ यह ताल चवालिस तालोहै। ४४। अथ इंद्रलोक-कुंडलीको स्वरूप लिख्यते। । ऽ । ३ ऽ ऽ ऽ । ३ । ऽ ३ ऽ ऽ ऽ ३ ३ ३ । ३ ३ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ३ ऽ ऽ । ३ । ऽ । । । ऽ (।।।।)

अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिकों लौकिकमें परमलु कहतेहैं थरिकिट। थरिकिट। ततथरि थिरिकिट ऽ किटथरि। ततथरि ताकिट ताकिट ३ किटतत किटथों ऽ ताहं ताहं ऽ ताकिट किटकिट ऽ तांतां। ततकिट ततत किटथों ३ ताहं। थोंगा थोंकिट ऽ थोंता किटतत किटतत ३ किटता किटता ऽ तत्था ताहं ऽ तत्था ततत ऽ तत्था धुमुधुमु धुमुकिट ३ तगधिमि धिमिधिमि धिमि-किट ३ धुगुद्दां धुगुद्दां धुगुद्दां ३ धुगुद्दां। धुगुद्दां धिधिगन गनथों ३ तकधिमि धिमिधिमि गनथों ३ ताहं ताहं ऽ जगजग जगजंग ऽ गजमट। मटकिट मटकिट ऽ किटकिट किटकिट ऽ किटथों। थोंगा। तगधिमि तगधिमि तगतग ३ धिमिधिमि तांधिमि ऽ तगधिमि तगतग ऽ धिमिधिमि। तांधिमि धिमितग ताथों ३ थोंगा। तकथों थोंगा ऽ ताहं। तकथों। थोंगा। धिमिधिमि थोंगा ऽ ताहं। ताहं। धिधिगन। थोंथों। इति इंद्रलोककुंडली संपूर्णम्॥

इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालो, ४४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत	तत्थरि थिरिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा दोय हाथको विंदी झालो
४.	थेई	किटथरि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई तिततत थेई थेई	ततथरि ताकिट ताकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
६.	थेई तिततत	किटतत किटथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
७.	थेई तिततत	ताहं ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
८.	थेई तिततत	ताकिट किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो

त्रैलोककुंडली ताल चवालीस ताली, ४४.

ताल.	चचकार.	परमेलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	थेई	तांतां	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा एक
१०.	थेई तिततत थेई थेई	ततकिट ततत किटथां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १० ॥ᴗ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
११.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा एक
१२.	थेई तिततत	थोंगा थोंकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ॥ᴗ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
१३.	थेई तिततत थेई थेई	थोंगा किटतत किटतत	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १३ ॥ᴗ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१४.	थेई तिततत	किटता किटता	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।ᴗ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो माश्रा दोय विंदी झालो
१५.	थेई तिततत	तत्था ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ॥ᴗ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो
१६.	थेई तिततत	तत्था ततत	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ॥ᴗ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो

इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालो. ४४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या
१७.	थेई तितत्त थेई थेई	तत्था धुमुधुमु धुमुकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १७ ॥°)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
१८.	थेई तितत्त थेई थेई	तगधिमि धिमि धिमि धिमिकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १८ ॥°)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
१९.	थेई तितत्त थेई थेई	धुगुड्दां धुगुड्दां धुगुड्दां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १९ ॥°)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२०.	थेई	धुगुड्दां	लघु ताल मात्रा । २० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा एक
२१.	थेई तितत्त थेई थेई	धुगुड्दां धिधि गन गनथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २१ ॥°)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२२.	थेई तितत्त थेई थेई	तकधिमि धिमि धिमि गनथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २२ ॥°)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२३.	थेई तितत्त	ताहं ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।°	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय बिंदी झालो
२४.	थेई तितत्त	जगजग जग जग	गुरु ताल मात्रा ऽ २४ ।°	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे मात्रा दोय बिंदी झालो

इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालों, ४४.

ताल.	चपकार.	परनलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२५.	थेई	गजपट	लघु ताल मात्रा । २५ ।	लघुंकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
२६.	थेई तिततत	मटकिट मटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २६ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२७.	थेई तिततत	किटकिट किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २७ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२८.	थेई	किटथों	लघु ताल मात्रा । २८ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
२९.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । २९ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
३०.	थेई तिततत थेई थेई	तगधिमि तग धिमि तगतग	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३० ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
३१.	थेई तिततत	धिमिधिमि तांधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३१ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे मात्रा दोय बिंदी झालो
३२.	थेई तिततत	तगधिमि तगतग	गुरु ताल मात्रा ऽ ३२ ॥०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो

इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालो, ४४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३३.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ३३ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
३४.	थेई तितत थेई थेई	तांधिमि धिमि- तग ताथों	प्लुत ताल मात्रा ([illegible] ३४ ॥)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
३५.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ३५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३६.	थेई तितत	तकथों थोंगः	गुरु ताल मात्रा ऽ ३६ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३७.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३८.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ३८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३९.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ३९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४०.	थेई तितत	धिमिधिमि थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ ४० ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो

इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालो, ४४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्था.
४१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ४१ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा एक नि:शब्द–आवापक
४२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ४२ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा एक नि:शब्द–विक्षेपक
४३.	थेई	धिधिगन	लघु ताल मात्रा । ४३ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा एक नि:शब्द–निष्क्रामक
४४.	थेई	थों थों	लघु ताल मात्रा । ४४ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा एक नि:शब्द–प्रवेशक

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालो, ३६.

अथ ब्रह्मांडकुंडली तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको चंचत्पुटादिक पांच तालनसों । अणु चोथाई मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंन मात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । लेके देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको ब्रह्मांडकुंडली ताल नामकिनों ॥ अथ ब्रह्मांडकुंडली तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक अणु होय अणुकी चोथाई मात्रा । दोय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । तीन दविराम होय दविरामकी पोंन मात्रा । ओर चार लघु होय लघुकी एक मात्रा । फेर छह लविराम होय । लविराम डेड

मात्राको । ओर जामें आठ गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । फेर बारह प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ऐसो जो ताल ताहि । ब्रह्मांडकुंडली ताल जांनिये ॥ यह ताल छत्तीस तालोहै ॥ अथ ब्रह्मांडकुंडली तालको स्वरूप लिख्यते ॥ ᴗ ० ० ꣸ ꣸ ꣸ । । । ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ ꣸ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमलु कहतेहै त ᴗ तकु० धिमि० तकुंकु ꣸ धलां ꣸ धलां ꣸ थाथों । ततथों । तत धिमि। थरिथों । तकुकुधलां ꣸ तगतधलां ꣸ धिमिथरि कुकु ꣸ डकुथरिकुक ꣸ थरि नमगिण ꣸ दोधिमिथों ꣸ दांधिमि थोंथों ऽ तगदां नगतग ऽ थरिकुकु नमगिण ऽ दांदां तकधिमि ऽ धिमिधिमि थोंगन ऽ किरटकिटथों ऽ नकथरिकिटथों ऽ दांदांकिटथों ऽ थाधिमि किटनग दिगदिग ꣸ दिगिदिगि दांतकु किटतकु ꣸ झेंझे थोंगिणि टिटिकिट ꣸ तगतग तगतधि धिकथों ꣸ तधितधि तगधिक धिकथों ꣸ तगतग तगधिमि नगथों ꣸ ततहत ताहत तहकिट ꣸ तहकुत हकुकुकु तकथों ꣸ टकुटकु टहकुकु कुटथों ꣸ टकुटकु टकुकुकु टकुझें ꣸ तकुधिमि धिमिझें झेंथरि ꣸ तकुकुकु धिधिगण थोंथों ꣸ इति ब्रह्मांडकुंडली ताल संपूर्णम् ॥

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालो, ३६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ति	त	अणु ताल मात्रा ऽ १ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा चोथाई
२.	ते	तकु	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधि
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधि

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालों. ३६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	तत	तकुकु	दवि. ताल मात्रा ऽ ४ ≡	दविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
५.	तत	धलों	दवि. ताल मात्रा ऽ ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
६.	तत	धलां	दवि. ताल मात्रा ऽ ६ ≡	दविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा पोण
७.	थेई	थाथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
८.	थेई	ततथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
९.	थेई	ततथिमि	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
१०.	थेई	थरिथों	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
११.	तथेई	तकुकु धलां	लविं. ताल मात्रा ो ११ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा देढ

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालो, ३६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१२.	तथेई	तगतधलां	लवि. ताल मात्रा ो १२ ।=	लविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा देड
१३.	तथेई	धिमिथरि कुकु	लवि. ताल मात्रा ो १३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक सो मात्रा देड
१४.	तथेई	मकुथारि कुकु	लवि. ताल मात्रा ो १४ ।=	लविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा देड
१५.	तथेई	थरिनम गिण	लवि. ताल मात्रा ो १५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा देड
१६.	तथेई	दो धिमिथों	लवि. ताल मात्रा ो १६ ।=	लविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा देड
१७.	थेई तितत	दांधिमि थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १७ ।o	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो झालो
१८.	थेई तितत	तगदां नमतग	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।।o	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
१९.	थेई तितत	थरिकुकु नमगिन	गुरु ताल मात्रा ऽ १९ ।।o	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालो, ३६.

ताल.	थपकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२०.	थेई तिततत	दांदां तकधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२१.	थेई तिततत	धिमिधिमि थोंगन	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२२.	थेई तिततत	किरंट किटथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२३.	थेई तिततत	नकथरि किटथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२४.	थेई तिततत	दांदां किटथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २४ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२५.	थेई तिततत थेई थेई	थाधिमि किट नग दिगदिग	प्लुत ताल मात्रा (३ २५ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२६.	थेई तिततत थेई थेई	दिगिदिगि दां-तकु किटतकु	प्लुत ताल मात्रा (३ २६ ॥०)	प्लुतकी। सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२७.	थेई तिततत थेई थेई	झेझे थों गिणि टिटिकिट	प्लुत ताल मात्रा (३ २७ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालो. ३६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२८.	थेई तिततत थेई थेई	तगतग तगत धि धिकथा	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २८ ॥ ०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२९.	थेई तिततत थेई थेई	तधितधि तगधि क धिकथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २९ ॥ ०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३०.	थेई तिततत थेई थेई	तगतग तगधि गि नगथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३० ॥ ०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३१.	थेई तिततत थेई थेई	ततहत ताहत तहकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३१ ॥ ०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३२.	थेई तिततत थेई थेई	तहकुत हकुकुकु तकथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३२ ॥ ०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३३.	थेई तिततत थेई थेई	टकुटकु टहकु कु कुटथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३३ ॥ ०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३४.	थेई तिततत थेई थेई	टकुटकु टकुकुकु टकुझें	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३४ ॥ ०)	प्लुतकी सड्नाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३५.	थेई तिततत थेई थेई	तकु धिमि धि मिझें झेंथरि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३५ ॥ ०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालो, ३६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३६.	थेई तितत्त थेई थेई	तकुकुकु धिधि गण थोंथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३६ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो

अथ अहिभेष ताल आठ तालो, ८.

अथ अहिभेष तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजनि उन मार्गे तालनमें विचारिकें। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको॥ द्रुत आधि मात्राको गुरु दोय मात्राको लेके॥ देशी ताल उत्पन्न करि। वांको अहिभेष नामकिनो॥ अथ अहिभेष तालको लछन लिख्यते॥ जामें एक द्रुत होय। एक गुरु होय। फेर एक द्रुत होय। फेर एक गुरु होय। एक द्रुत होय। एक गुरु होय। ओर एक द्रुत होय। फेर एक गुरु होय॥ या रीतिसो गीतादिकमें सुख उपजावे। सो अहिभेष ताल जांनिये॥ यह ताल आठ तालो है॥ अथ अहिभेष तालको सरूप लिख्यते ० ऽ ० ऽ ० ऽ ० ऽ॥ अथ पाटाक्षर लिख्यते॥ तकु० धिमिधिमि तत्था ऽ तकु० थातक धिमिकिट ऽ थै० धीकिटधीकिट ऽ तकु० धिधिगन थोंथों ऽ इति अहिभेष ताल संपूर्णम्॥

अथ अहिभेष ताल आठ तालो, ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तकु	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधी
२.	थेई तितत्त	धिमिधिमि तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ॥ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

अहिभेष ताल आठ तालो, ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३.	ते	तकु	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा आधि
४.	थेई तिततत	थातक धिमि किट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथकी झालो
५.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई तिततत	धींकिट धी किट	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
७.	ते	तकु	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
८.	थेई तिततत	धिधिगन थों थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हातको झालो झालोंपे भान

अहिगति ताल सात तालो, ७.

अथ अहिगति तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवको चंचत्पुटादिक पांचोतालनसों सातोअंगलेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वाको अहिगति ताल नाम कीनों ॥ अथ

अहिगति तालको लछन लिख्यते ॥ जातालमें एक प्लुत होय । ओर एक गुरु होय । एक लविराम होय । एक लघु होय । एक दविराम होय । ओर एक द्रुत होय । एक अणु होय । यस उलटी रीत सो गीतादिकमें सुख उपजावें । सो अहिगति ताल जानिये ॥ अथ अहिगति तालको स्वरूप लिख्यते ॥ ꣿ ऽ ꣾ । ० अथ पाटाक्षर लिख्यते । याहिको लौकिकमें परमलू कहत है। धिमितां धिमितां तांधिमि ꣿ किटकिकि टकिकिट ऽ ताकिट किट ꣾ थोंगा । तिंते ꣿ ते० ति ✓ । इति अहिगति ताल संपूर्णम् ॥

अहिगति ताल सात तालो, ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत्त थेई थेई	धिमितां धिमि-तां तांधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ꣿ १ ।।ꣿ)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
२.	थेई तितत्त	किटकिकि टकिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	तथेई	ताकिट किट	लवि. ताल मात्रा ꣾ ३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा देड
४.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	तत	तिंते	दवि. ताल मात्रा ꣿ ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण

अहिगति ताल सात तालो, ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
६.	ते	ते	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	ति	ति	अणु ताल मात्रा ⌣ ३ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो चोथाई मात्रा मात्रापें मान

हेमाचल ताल आठ तालो, ८.

अथ हेमाचल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत आधिमात्राको दविराम पोंनमात्राकों लेके । देशीताल उत्पन्न करि । वाको हेमाचल नाम किनों । अथ हेमाचल तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । एक दविराम होय । फेर एक द्रुत होय । फेर एक दविराम होय । फेर एक द्रुत होय । एक दविराम दोय । और एक द्रुत होय । एक दविराम होय । या रितसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो हेमाचल ताल जानिये ॥ यह ताल आठ तालो है ॥ अथ हेमाचल तालको सरूप लिख्यते ०ꜗ०ꜗ०००० अथ पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमलु कहतहें थै ० तथै ꜗ थु ० तथै ꜗ जक ० नकुकु ꜗ धि ० तथां ꜗ इति हेमाचल ताल संपूर्णम् ॥

हेमाचल ताल आठ तालो, ८.

ताल.	बधकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	तत	तथै	दवि. ताल मात्रा ꣳ २ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
३.	ते	थु	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	तत	तथै	दवि. ताल मात्रा ꣳ ४ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
५.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	तत	नकुकु	दवि. ताल मात्रा ꣳ ६ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
७.	थे	धि	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
८.	तत	तथां	दवि. ताल मात्रा ꣳ ८ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण

विष्णुताल चोबीस तालो, २४.

अथ विष्णुतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनमार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको चंचत्पुट आदिक पांच तालनमेंसो लघु एक मात्राकों गुरु दोय मात्राको लेके देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वाकों विष्णुताल नाम किनों ॥ अथ विष्णुतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । ओर दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा । फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । दोय गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । ओर दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा। एक गरु होय गुरुकी दोय मात्रा । आगे एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । फेर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । दोय गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । फेर तीन गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । या रितसों गीतादिकमें सब उपजावे ॥ सो विष्णुताल जांनिये ॥ यताल चोबीस तालो है ॥ अथ विष्णुतालको सरूप लिख्यते ||| ऽ ||| ऽ | ऽऽ ||| ऽऽ | ऽ | ऽऽऽऽऽ अथ पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहतहै तकथरि । ततधिमि । धिधिगण । कुकुदां कुकुदां ऽ धिमिकिट । धिमिकिट । तकथों । दांकिट दांकिट ऽ तत्थों । किटकिट थाकिट ऽ धधिगन धिधिकिट ऽ धाधिगन । धदिगन । तकथों । धिधिगिन तकथों ऽ धिधिकिट धांकिट ऽ धधिगिन । कुकुथरि कुकुथरि ऽ कुकुदां । धिधिकिट धांकिट ऽ धिधिकिट धांकिट ऽ धिधिकिट धांकिट ऽ धिधिकिट धांकिट ऽ धिधिकिट गिनथों ऽ ॥ इति विष्णुताल संपूर्ण ॥

विष्णुताल, चोबीस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकथरि	लघु ताल मात्रा । १ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

विष्णुताल चोवीस तालो, २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई	ततधिमि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	धिधिगण	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तितवव	कुकुदां कुकुदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
५.	थेई	धिमिकिट	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	धिमिकिट	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई तिततत	दांकिट दांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
९.	थेई	तरथों	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

विष्णुताल, चोवीस तालो २५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी आक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१०.	थेई तितत	किटकिट थाकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
११.	थेई तितत	धधिगन धिधिकिट	गुरु ताल मात्र ऽ ११ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
१२.	थेई	धधिगन	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१३.	थेई	धदिगन	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेई तितत	धिधिगिन तकथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
१६.	थेई तितत	धिधिकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
१७.	थेई	धधिगिन	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

विष्णुताल, चोवीस ताली २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१८.	थेई तिततत	कुकुथरि कुकुथरि	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाली
१९.	थेई	कुकुदां	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२०.	थेई तिततत	धिधिकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाली
२१.	थेई तिततत	धिधिकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाली
२२.	थेई तिततत	धिधिकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाली
२३.	थेई तिततत	धिधिकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाली
२४.	थेई तिततत	धिधिकिट गिनधां	गुरु ताल मात्रा ऽ २४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाली

पक्षिराज ताल आठ तालो.

अथ पक्षिराज तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों ॥ द्रुतलघुलेके । देशीताल उत्पन्न करि । वाकों पक्षिराज नाम किनों ॥ अथ पक्षिराज तालको लछन लिख्यते ॥ जामें प्रथम एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । फेर एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक द्रुत होय एक लघु होय एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो पक्षिराज ताल जांनिये ॥ यह ताल आठ तालो हैं ॥ अथ पक्षिराज तालको सरूप लिख्यते ०। ०। ०। ०।अथ पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमलू कहतहे ॥ जग० तकथों । तग० ताहं । कु कु० कुकुथरि । नग० गणथों । इति पक्षिराज ताल संपूर्णम् ॥

अथ पक्षिराजताल, आठ तालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथमे द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक मात्रा आधि
२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक मात्रा एक
३.	ते	तंगं	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल आडी लिक दोय आधि मात्रा

पक्षिराजताल आठ तालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा ‌। ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक
५.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक
७.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो आधि मात्रा
८.	थेई	गणथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक मात्रापे मान

गारूगीताल, चोतालो ४.

अथ गारूगी तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत आधि मात्राको दविराम पोंन मात्राको लेके देशी ताल उत्पन्न करि । वांको गारूगी ताल नामकिनों ॥ अथ गारूगी तालको लछन लिख्यते ॥ यामें तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । ओर एक दविराम होय दविरामकी पोंन मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो गारूगी ताल जांनिये ॥ ये ताल चोतालो हे ॥ अथ गारूगी तालको सरूप लिख्यते ० ० ० ० अथ

गारूगी तालका पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लौकिकमें परमलू कहतहैं ॥ जग० जग० तत० तकक्कु ० अथ चचत्कार लिख्यते तै०तै० तै० तित ० इति गारूगी ताल संपूर्णम् ॥

गारूगी ताल, चौतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तै	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक आडी होय है सो आधि मात्रा
२.	तै	जग	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक है सो मात्रा आधि
३.	तै	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक आधि मात्रा
४.	तत	तकक्कु	द्रुवि.ताल मात्रा ॅ ४ =	द्रुविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक है सो मात्राएण है इहां विश्रामते मान

झॉबड ताल तितालो.

अथ झॉबड तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको लघु एकमात्राको द्रुविराम पोन मात्राको लेके । दृशी ताल उत्पन्न करि ॥ वाको झॉबड ताल नाम किनों ॥ अथ झॉबडतालको लछन लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक द्रुविराम होय द्रुविरामकी पोण मात्रा । या रितसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो झॉबड ताल जांनिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ झॉबडतालको सरूप लिख्यते ॥० अथ झॉबडतालको पा-

ठाक्षर लिख्यत ॥ याहिको लोकिकमे परमलू कहतहें ॥ ताहं । ताहं । तत्तकथों ० अथ चचकार लिख्यते थेई थेई तिथेई ॥ इति झोंबडताल संपूर्णम् ॥

झोंबड ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समत्वा.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक
३.	तिथेई	तत्तकथों	दवि. ताल मात्रा ० ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा पाण मात्रापेमान

नीलझोंबडी ताल तितालो.

अथ नीलझोंबडी तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिक गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको। गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वाको नीलझोंबडी ताल किनों ॥ अथ नीलझोंबडी तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । ओर दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो नीलझोंबडी ताल जांनिये । अथ नीलझोंबडी तालको सरूप लिख्यते ऽ॥ अथ नीलझोंबडीतालको पाटाक्षर लिख्यते । याहिको लोकिकमें परमलू कहत हें ॥ दांदां थरिथरिं ऽ कुकुथरि । गणथों । अथ चचकार लिख्यते थेई तिततत ऽ थेई । थेई । **इति नीलझोंबडी ताल संपूर्णम् ॥**

नीलझोंबडी ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	दांदांथरिथरि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ॥०	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक है सो मात्रा दोय बिंदीझालो
२.	थेई	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक है सो मात्रा एक
३.	थेई	गणथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक है मात्रा एक मात्रापे मान

चक्रताल चोदहतालो.

अथ चक्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको द्रुत आधिमात्राको लघु एक मात्राकोलेके । देशी ताल उत्पन्नकरि ॥ वाको चक्रताल नाम किनो ॥ अथ चक्रतालको लछन लिख्यते ॥ यामें च्यार द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा । ओर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । फेर तीन द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा । ओर एक लघु होयँ लघुकी एक मात्रा । फेर दोय द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा । एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा । फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो चक्रताल जांनिये॥ यह ताल चोदहतालो हे ॥ अथ चक्रतालको सरूप लिख्यते ००००।०००।००।०। अथ चक्रतालको पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमल कहत हें जग० जग० नक० थै० ताथै । थरि० कुकु० धिमि० दांथै । दां० दां० धिधिकिट । धिधि० गनथा । इति चक्रताल चोदहतालो १४ ॥

अथ चक्रताल, चोदह तालो १४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक मात्रा आधि
२.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक मात्रा आधि
३.	ते	नक	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक मात्रा आधि
४.	ते	थै	द्रुत तालमात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताललीक मात्रा आधि
५.	थेई	तार्थै	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताललीक मात्रा एक
६.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताललीक मात्रा आधि
७.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताललीक मात्रा आधि
८.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताललीक मात्रा आधि

चक्रताल, चोदहतालो १४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	थेई	दां थै	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा एक
१०.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा आधि
११.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा आधि
१२.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा एक
१३.	ते	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक मात्रा आधि
१४.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक मात्रापें मान

त्रिकुंडव ताल, चोदह तालो.

अथ त्रिकुंडव तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गे तालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेंमें ॥ द्रुतआधि मात्राको दविराम पोंनमात्राको लेकें देशीताल उत्पन्न करि । वाको त्रिकुंडव नाम किनो ॥ अथ त्रिकुंडव तालको लक्षण

लिख्यते ॥ जामे चार द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । एक दविरामँ होय दविरामकी पोंन मात्रा । तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक दविराम होय दविरामकी पोंन मात्रा । फेर दोय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । एक दविराम होय दविरामकी पोंन मात्रा । एक द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा । फेर एक दविराम होय दविरामकी पोंन मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो त्रिकुंडव ताल जांनिये ॥ यह ताल चोदह तालो हे ॥ अथ त्रिकुंडव तालको सरूप लिख्यते ००००̆०००००००̆०० अथ त्रिकुंडव तालको पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमे परमलू कहतहे दां० दां०त्रक० तकि० तकुकु ̆ ता० थै० थरि० घलां ̆ ता० थो० तथों ̆ धी० तथौं ̆ इति त्रिकुंडवताल संपूर्णम् ॥

त्रिकुंडवताल, चोदह तालो १४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	त्रक	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	तत	तकुकु	दवि, ताल मात्रा ̆ ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण

त्रिकुंडवताल, चोदह तालो १४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
६.	ते	ता	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
८.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
९.	तत	धलां	द्वि. ताल मात्रा ॆ० ९ ≡	द्वविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
१०.	ते	ता	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
११.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१२.	तत	तथों	द्वि. ताल मात्रा ॆ० १२ ≡	द्वविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
१३.	ते	धी	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

त्रिकुंडवताल, चोदह तालो १४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१४.	तत	तथौं	दवि. ताल मात्रा ० १४ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण इहां मान

स्वर्णमेरुताल, सैंतीस तालो ३७.

अथ स्वर्णमेरु तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको। चंचत्पुट आदिकें पांचों तालनमेंसों लघु एक मात्राको गुरु दोय मात्राको द्रुत आधि मात्राको प्लुत तीन मात्राका दविराम पोंण मात्राको लेकें देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वाको स्वर्णमेरु ताल नाम किनों ॥ अथ स्वर्णमेरु तालको लक्षण लिख्यते ॥ यामें एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। एक गुरु हाय गुरुकी दोय मात्रा। तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। आगे एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। और एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा। फेर तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। फेर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा। ओर तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। फेर दोय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। ओर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। और एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा। फेर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा। आगे दोय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। और एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा। फेर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा। ओर तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। ओर एक दविराम होय दविरामकी पोंण मात्रा। ओर दोय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक दविराम होय दविरामकी पोंण मात्रा। एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। फेर दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा। ओर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा। या रीतसों गितादिकमें सुख उपजावे। सो स्वर्णमेरु ताल जानिये ॥ यह ताल सैंतीस तालो है ॥ ३७ ॥

अथ स्वर्णमेरु तालको सरूप लिख्यते ॥ ऽ००० | ऽ००० | ऽ००० | ०० | ऽ̆ऽ०० | ऽ̆ऽ००० ̆०० ० ̆०० ॥ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलू कहत हे ॥ तत्था । तत्था तत्था ऽ थरि ० कुद ० कुकु ० दंथा । थातक तकतक ऽ तक० दक० था० किटकिट । किटकिट किटकिट ऽ था० था० थों० थोंथों । थों ० गा ० तार्थो । धुमुधुमु धुमुधुमु थांथां ऽ̆ ततडां तातक ऽ तक ० धिमि ० तकथों । धिकितक धिकतक तकथां ऽ̆ तेते तेथै ऽ ते ० ते ० थै ० तथै ०̆ धिधि ० नग ० धलां ०̆ धिमि ० थोंगा । थोंगा । धिधिगन थोंथों ऽ ॥ इति स्वर्णमेरुताल संपूर्णम् ॥

स्वर्णमेरुताल, संतीस तालो ३७.

ताल.	चर्चकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तत्था	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत	तत्था तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	कुद	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

स्वर्णमेरुताल, सॅतीस तालो ३७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
६.	थेई	दंथा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई तितत	धातक तकतक	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
८.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
९.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१०.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
११.	थेई	किटकिट	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	थेई तितत	किटकिट किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
१३.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

स्वर्णमेरुताल, सेंतीस तालो ३७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१४.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० १४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१५.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० १५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१६.	थेई	थोंथों	लघु ताल मात्रा । १६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१७.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० १७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१८.	ते	गा	द्रुत ताल मात्रा ० १८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१९.	थेई	ताथों	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२०.	थेई तितताततत थेई थेई	धुमुधुमु धुमुधुमु थांथां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २० ।।़)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२१.	थेई तितताततत	ततडां तातक	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।़	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

स्वर्णमिश्रताल, सैंतीस तालो ३७.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२२.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० २२ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० २३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२५.	थेई तितत्त थेई थेई	धिकितक धिक- तक तकथां	प्लुत ताल मात्रा (३ २५ ।।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२६.	थेई तितत्त	तेते तेथै	गुरु ताल मात्रा ऽ २६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२७.	ते	ते	द्रुत ताल मात्रा ० २७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२८.	ते	ते	द्रुत ताल मात्रा ० २८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२९.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० २९ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

स्वर्णमेरुताल. सैंतीस तालो ३७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३०.	तत	तथै	दवि. ताल मात्रा ० ३० ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
३१.	ते	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० ३१ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३२.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ३२ =	द्रुतकी सहनाणी अंक ह सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३३.	तत	धलां	दवि. ताल मात्रा ० ३३ =	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
३४.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३५.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ३५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३६.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ३६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३७.	थेई तितत	धिधिगिन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो झालोपे मान

शंखताल, दृशतालो.

अथ शंखतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको चंचत्पुट आदिके पांच तालनमेंसों द्रुत आधि मात्राको। लविराम डेड मात्राको। गुरु दोय मात्राको। अणु चोथाई मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको शंखताल नाम किनों ॥ अथ शंखतालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक लविराम होय लविरामकी डेड मात्रा। तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा। दोय अणु होय अणुकी चोथाई मात्रा। फेर एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। ओर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो शंखताल जांनिये ॥ यह ताल दृशतालो है। अथ शंखतालको स्वरूप लिख्यते ० ो ०००ऽ ◡ ◡ ०। अथ शंखतालको पाठाक्षर लिख्यते ॥ यांहीको लोकिकमें परमलू कहत है ॥ तां० तक तकथों ो जग० जग० थै० तकदां तकदां ऽ धि ◡ धि ◡ धिमि० गनथों। इति शंखताल संपूर्णम् ॥

शंखताल, दृश तालो १०.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	तथेई	तक तकथों	लवि.ताल मात्रा ो २ ।=	प्रथम लविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेड
३.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि

शंखताल, दश तालो १०.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई तिततत	तकदां तकदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
७.	ति	धि	अणु ताल मात्रा ़ ७ —	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चोथाई
८.	ति	धि	अणु ताल मात्रा ़ ८ —	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चोथाई
९.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१०.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापे मान

दूसरी शंखताल, इग्यारतालो ११.

अथ दूसरी शंखतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको

चंचत्पुट आदिक पांचो तालनमें सो द्रुत आधि मात्राको। दविराम पोंन मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको। लविराम डेड मात्राको। अणु आधि मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको शंखताल नामकिनों॥ अथ शंखतालको लछन लिख्यते॥ जामें दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ ओर एक दविराम होय। दविरामकी पोंन मात्रा॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ ओर एक लविराम होय। लविरामकी डेड मात्रा॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ ओर एक दविराम होय। दविरामकी पोंन मात्रा॥ एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ एक अणु होय। अणुकी पाव मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो शंख ताल जांनिये॥ यह ताल ग्यारहतालो है॥ अथ शंखतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ॑ ऽ ऽ ऽ ॑ ॥ ॑ ० ◡ अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको टोकिकमें परमलु कहत है था० थै० तथै॑ तकधिकि तकधिकि ऽ धांधिमि धांधिमि धांधिमि ॑ तकिटत किटतक ऽ तकनकथों ॑ थोंगा। धलां॑ जग० ति ◡॥ इति दूसरी शंखताल संपूर्णम्॥

दूसरी शंखताल, इग्यार ताल ११.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	तत	तथै	द्रुत ताल मात्रा ॑ ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण

शंखताल, इग्यार तालो ११.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तिततत	तकधिकि तकधिकि	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।़	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
५.	थेई तिततत थेई थेई	धांधिमि धांधि-मि धांधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
६.	थेई तिततत	तकिटत किट तक	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
७.	तथेई	तक तकथों	लवि. ताल मात्रा ๅ ७ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
८.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	तत	धलां	दवि. ताल मात्रा ९ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
१०.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
११.	ति	ति	अणु ताल मात्रा ˘ ११ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चोथाई मात्रापें मान

संयोगताल, चोदहतालो.

अथ संयोगतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों चंचत्पुट आदिके पांच तालमेंसों द्रुत आधि मात्राको । अणु चोथाई मात्राको । दविराम पोंण मात्राको । लघु एक मात्राको । दविराम पोंण मात्राको। लघु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी तालउत्पन्न करि॥ वांको संयोग ताल नाम किनो ॥ अथ संयोग तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ ओर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय जामें अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा॥ फेर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक दविराम होय। दविरामकी पोंण मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक लविराम होय। लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो संयोगताल जांनिये ॥ यह ताल चोदह तालो है ॥ अथ संयोग तालको स्वरूप लिख्यते ऽऽ ।।० ० ० ० ० ०।। ऽऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलू कहत है ॥ धितकिधि धितकित किधिथों ऽ धिमिधिमि धिमिथों ऽ धकिट धकिट । तकथों । तथों ० जग० धि ० धि ० किट० धलां ० तत्थों । तत्तत्थों । धाकिट धाकिट ऽ धलतध लांधिमि तकथों ऽ इति संयोगताल संपूर्णम् ॥

अथ संयोगताल, चोदह तालो १४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत थेई थेई	धितकिधि धित कित किधिथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥३)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो

संयोमताल. चोदह तालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई तिततत	धिमिधिमि धिमिथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ံ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	तथेई	धकिट धकिट	लवि. ताल मात्रा ।े ३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	तत	तथों	दवि. ताल मात्रा ०े ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
६	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	ति	धि	अणु ताल मात्रा ᵕ ७ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चोथाई
८.	ति	धि	अणु ताल मात्रा ᵕ ८ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चोथाई
९.	ते	किट	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधी

संयोगताल, चोदह तालो.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१०.	तत	धलां	दवि. ताल मात्रा ꣿ १० ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
११.	थेई	तत्थों	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	तथेई	तत्तत्थों	लवि. ताल मात्रा । १२ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
१३.	थेई तितत	थाकिट धाकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १३ ।ꣿ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
१४.	थेई तितत थेई थेई	धलतध लांधिमि तकथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १४ ।।ꣿ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालोंपें मान

त्रिवर्तकताल, षट्तालो ६.

अथ त्रिवर्तक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । लघु एक मात्राको द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । यांको त्रिवर्तक ताल नाम किनो ॥ अथ त्रिवर्तक तालको लछन लिख्यते ॥ यामें दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा । दोय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । फेर दोय लघु होय

लघुकी एक मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो त्रिवर्तक ताल जांनिये ॥ यह ताल षटतालो है ॥ अथ त्रिवर्तक तालको स्वरूप लिख्यते ॥ ०० ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलू कहत है ताहं । ताहं । जग० जग० ताथों । गनथों । इति त्रिवर्तक ताल संपूर्णम् ॥

अथ त्रिवर्तक ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चपकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक है सो मात्रा एक
३.	तें	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	तें	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	थेई	तात्थों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लिक है सो मात्रा आधि
६.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक मात्रायें मान

नारायणताल, षट्तालो ६.

अथ नारायणतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको नारायणताल नामकिनो ॥ अथ नारायणतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो नारायणताल जांनिये ॥ यह ताल छह तालो हे ॥ अथ नारायणतालको स्वरूप लिख्यते ० ० । ऽ । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहीकों लोकिकमें परमलू कहत है दां० दां० थरिकिट । किणनग गनथोंऽ थरिथों । धिधिकिट किटथोंऽ इति नारायणताल संपूर्णम् ॥

नारायणताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

नारायणताल, पदतालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तितत	किणनग गनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ठ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
५.	थेई	थरिथा	लघु ताल मात्रा । ५ ।	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
६.	थेई तितत	धिधिकिट किटथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ठ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालों झालोंपे मान

विष्णुताल, चौतालो ४.

अथ विष्णुतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको । चंचत्पुट आदिक पांच तालमेसों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको विष्णुताल नाम किनों ॥ अथ विष्णुतालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो विष्णुताल जांनिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ विष्णुतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ॥ ऽ अथ पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है थांकिटि थांकिटि ऽ गिडिदां । गिडिदां । तकतक धधिगन थोंथों ऽ इति विष्णुताल संपूर्णम् ॥

विष्णुताल. चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	थांकिटि थांकिटि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ं	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	थेई	गिडिदां	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई	गिडिदां	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
४.	थेई तिततत थेई थेई	तकतक धधिगन थोंथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ४ ।।ं)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालोंपे मान

गद्यताल, तितालो ३.

अथ गद्यतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको। चंचत्पुट आदिके पांच तालनमेसों लघु एक मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको गद्यताल नाम-किनों ॥ अथ गद्यतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो गद्यताल जांनिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ गद्यतालको स्वरूप लिख्यते ।। ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है धिमितक। धिमिधिमि। धिधिकिट धिधिकिट गनधों ऽ इति गद्य-ताल संपूर्णम् ॥

गद्यताल, तितालो ३.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	तत्त्वा.
१	थेई	धिमितक	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत थेई थेई	धिधिकिट धिधिकिटतनथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३ ॥।)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालापें मान

नर्तकताल, चोतालो ४.

अथ नर्तकतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेकें ॥ देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको नर्तकताल नामकिनों ॥ अथ नर्तकतालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ ओर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो नर्तक ताल जांनिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ नर्तकतालको स्वरूप लिख्यते ० । ० ॆ। अथ पाठाक्षर लिख्यते तां० तकथों । तां० तत्तकथों ॆ। इति नर्तकताल संपूर्णम् ॥

नर्तकताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक ह सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा | २ |	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	तथेई	तत्तकथों	दवि. ताल मात्रा । ४ |=	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड मात्रापें मान

दर्पणताल, तितालो ३.

अथ दर्पणतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरविवेको । द्रुत आधिमात्राको । गुरु दोय मात्राको लेकें । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको दर्पणताल नाम किनों ॥ अथ दर्पणतालको लछन लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो दर्पणताल जांनियें ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ दर्पणतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहत है धिमि० दां० तकुकुकु कुकुकें ऽ इति दर्पणताल संपूर्णम् ॥

दर्पणताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	थेई तिततत	तकुकुकु कुकुथें	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।8	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो झालोंमें मान

मन्मथताल, पट्तालो ६.

अथ मन्मथतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको मन्मथताल नाम किनों ॥ अथ मन्मथतालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो मन्मथताल जांनिये ॥ यह ताल छहतालो है ॥ अथ मन्मथतालको स्वरूप लिख्यते । ० ० । ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहत है तकथों । थरि० थरि० तकथों । धिगितां धिधिकिट ऽ धिधिगन थोंथों ऽ इति मन्मथताल-संपूर्णम् ॥

मन्मथताल, षट्तालो ६.

ताल.	चर्चकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा एक
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा आधि
३.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा आधि
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा एक
५.	थेई तिततत	धिगितां धिधिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ौ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
६.	थेई तिततत	धिधिगन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ौ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो झालोपें मान

रतिताल, चोतालो ४.

अथ रतितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिवेको। चंचत्पुट आदिके पांच तालनमेंसों। लघु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको रतिताल नाम-

किनों ॥ अथ रतितालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा । दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा। या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो रतिताल जांनिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ रतितालको स्वरूप लिख्यते । । ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है धुमिकिट । धुमिकिट । धाधिग धीकिट ऽ धिमिकुकु झेंझें ऽ इति रतिताल संपूर्णम् ॥

रतिताल, चोतालो ४.

ताल.	थचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	धुमिकिट	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	धुमिकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तितत्त	धाधिग धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ᐝ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई तितत्त	धिमिकुकु झेंझें	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ᐝ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो झालोपें मान

सिंहताल, चोतालो ४.

अथ सिंहतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । लघु एक मात्राकों । द्रुत आधिमात्राकों लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको सिंहताल नामकिनों ॥ अथ सिंहतालको लक्षण

लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा । तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो सिंहताल जांनिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ सिंहतालको स्वरूप लिख्यते । ० ० ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है थांकुकु । नक० कुकु० थां थां० इति सिंहताल संपूर्णम् ॥

सिंहताल, चोतालो ४.

ताल.	वचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थांकुकु	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	ते	नक	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	थां थां	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रापें मान

वीरविक्रमताल, चोतालो ४.

अथ वीरविक्रमतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको वीरविक्रमताल

नामकिनों ॥ अथ वीरविक्रमतालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो वीरविक्रमताल जांनिये ॥ अथ वीरविक्रमतालको स्वरूप लिख्यते । ० ० ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लौकिकमें परमलु कहत है थुंकट । थुमि० थुमि० थकिनकि झेंझें ऽ इति वीरविक्रमताल संपूर्णम् ॥

वीरविक्रमताल, चौतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थुंकुट	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	ते	थुमि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	थुमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	थेई तितत	थकिनकि झेंझें	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो झालोंपे मान

रंगताल, पांचतालो ५.

अथ रंगतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको रंगताल नाम किनों ॥ अथ रंगतालको लछन

लिख्यते ॥ जा तालमें च्यार द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा । और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो रंगताल जांनिये ॥ अथ रंगतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ० ० ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लौकिकमें परमलु कहत है घिमि० तों० घिमि० तों० घिधिगन थोंथों ऽ यह ताल पंचवालो है । इति रंगताल संपूर्णम् ॥

रंगताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तै	घिमि	द्रुत ताल मात्रा ० १ ॥	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	तै	तों	द्रुत ताल मात्रा ० २ ॥	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	तै	घिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ॥	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	तै	तों	द्रुत ताल मात्रा ० ४ ॥	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	थेई तितवत	घिधिगन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो हाथकी झालोए मान

श्रीरंगताल, पंचतालो ५.

अथ श्रीरंगतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । दोसो ताल उत्पन्न करि ॥ यांको श्रीरंगताल नामकिनों ॥ अथ

श्रीरंगतालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसां गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो श्रीरंगताल जांनिये ॥ अथ श्रीरंगतालको स्वरूप लिख्यते । । ऽ । ऽ॑ यह पंचताल्यो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है धरिकुकु । धिधिकिट । धोंकिट धिमिधिमि ऽ किणनकु । तकिधिकि धिमिगिन थोंथों ऽ॑ इति श्रीरंगताल संपूर्णम् ॥

श्रीरंगताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमेलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	धरिकुकु	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक
२.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक
३.	थेई तितत्त	धोंकिट धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	थेई	किणनकु	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक
५.	थेई तितत्त थेई थेई	तकिधिकि धिमिगिन थोंथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ॑ ५ ॥८)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा बिंदी झालो झालोंपे मान

प्रत्यंगताल, पंचतालो ५.

अथ प्रत्यंगतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । चंचत्पुटादिक पांच तालनमेंसो गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको प्रत्यंगताल नामकिनों ॥ अथ प्रत्यंगतालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो प्रत्यंगताल जांनिये ॥ अथ प्रत्यंगतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ ऽ । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है दिगितगि दांदां ऽ थरिकुकु थांथां ऽ धीकिट धीकिट ऽ धिधिकिट । धिमिथों । यह ताल पंचतालो है ॥ इति प्रत्यंगताल संपूर्णम् ॥

प्रत्यंगताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	दिगितगि दांदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।६	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	थेई तिततत	थरिकुकु थांथां	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।६	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	थेई तिततत	धीकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।६	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो

प्रत्यंगताल, पंचतालो ५.

ताल.	चवकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक
५.	थेई	धिमिथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक मात्रापें मान

चतुरस्रताल, तितालो ३.

अथ चतुरस्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । चंचत्पुट आदिके पांच तालनमेंसों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको चतुरस्र ताल नाम किनों ॥ अथ चतुरस्र तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो चतुरस्र ताल जांनिये ॥ अथ चतुरस्र तालको स्वरूप लिख्यते ऽ । ऽे अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है थरिकुकु थांथां ऽ धिगदां । धिमिधिमि धिधिगन थोंथों ऽे इति चतुरस्र ताल संपूर्णम् ॥

चतुरस्रताल. तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	थरिकुकु थांथां	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२.	थेई	धिगदां	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत थेई थेई	धिमिधिमि धिधिगन थोंथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽे ३ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा बिंदी झालो झालोंपें मान

त्रिभिन्नताल, तितालो ३.

अथ त्रिभिन्नतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमेंसो विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । चंचत्पुट आदिके पांच तालनमेसों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको त्रिभिन्नताल नाम किनों ॥ अथ त्रिभिन्नतालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो त्रिभिन्नताल जांनिये ॥ अथ त्रिभिन्नतालको स्वरूप लिख्यते । ऽ ऽे अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है धीकिटि । धिधिकिट धीकुत ऽ तकुकुन कुकुकिण जेंजें ऽे यह तितालो है ॥ इति त्रिभिन्नताल संपूर्णम् ॥

त्रिभिन्न ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	धीकिट	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई तितत	धिधिकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हातको झालो
३.	थेई तितत थेई थेई	तकुकु तकुकु किणझेंझें	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३ ।।ὁ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हातकी परिक्रमा विंदी झालो झालापेंमान

हंसनु ताल, पंचतालो ५.

अथ हंसनु तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमे विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको चंचत्पुट आदिक पांच तालनमेंसों । लघु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको हंसनु ताल नाम किनों ॥ अथ हंसनु तालको स्वरूप लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो हंसनु ताल जांनिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ हंसनु तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ ० ० ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलू कहत है तकथों । दकिट धिकिट तकथों ऽ धिमि० दां० तताकिटि धिधिगन थोंथों ऽ इति हंसनु ताल संपूर्णम् ॥

हंसलु ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समरथा.
१.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तितत थेई थेई	तकिट धिकिट तकथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २ ॥o)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा o ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा o ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई तितत थेई थेई	ततकिटि धि-धिगन थोंथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥o)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापें मान

तुरंगलीला ताल, चोतालो ४.

अथ तुरंगलीला तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । चंचत्पुटादिक पांचतालनमेंसों । द्रुत आधिमात्राको दविराम पोंणमात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको तुरंगलीला ताल नाम किनों ॥ अथ तुरंगलीला तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधिमात्रा ॥ ओर एक दविराम

होय । द्रविरामकी पोंणमात्रा ॥ ओर दोयद्रुत होय । द्रुतकी आधिमात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो तुरंगलीला ताल जांनिये ॥ अथ तुरंगलीला तालको स्वरूप लिख्यते ० ७ ० ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलू कहत है जग० धलां ७ तक० थौं० । इति तुरंगलीला ताल संपूर्णम् ॥

तुरंगलीला ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	तत	धलां	द्रवि. ताल मात्रा ७ २ ≡	द्रविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण
३.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि

शरभलीला ताल, आठतालो ८.

अथ शरभलीला तालकी उत्पति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको शरभलीला ताल नामकिनों ॥ अथ शरभलीला तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर चार द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर

दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो शरभलीला ताल जांनिये ॥ यह आठतालो है ॥ अथ शरभलीला तालको स्वरूप लिख्यते ।।००००।। अथ पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमे परमलू कहत है धिगदां । धिमिकिट । दिग० दिग० तां०तां० धूकिट । तकयों । इति शरभलीला ताल संपूर्णम् ॥

शरभलीला ताल, आठतालो ८.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या
१.	थेई	धिगदां	लघु ताल मात्रा । १ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	धिमिकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	दिग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	दिग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

शरभलीला ताल, आठतालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणा अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
६.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	थेई	धूकिट	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

कंदर्प ताल, पंचतालो ५.

अथ कंदर्प तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें । वरतिवेको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको कंदर्प ताल नाम किनों ॥ अथ कंदर्प तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ ओर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो कंदर्प ताल जांनिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ कंदर्पतालको स्वरूप लिख्यते ० ० । ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलू कहत है तक० जग० धिमितक । धाकत धंकृत ऽ धिधिगन थोंथों ऽ इति कंदर्पताल संपूर्णम् ॥

कंदर्प ताल, पंचतालो ५.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा आधि
२.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा आधि
३.	थेई	धिमितक	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक
४.	थेई तिततत	धीकत धीकत	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
५.	थेई तिततत	धिधिगन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो झालापें मान

वर्णभिन्न ताल, चौतालो ४.

अथ वर्णभिन्न तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको वर्णभिन्नताल नाम किनों ॥ अथ वर्णभिन्नतालको लछन लिख्यते ॥ आ तालमें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ ओर एक लघु होय । लघुकी

एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो वर्णभिन्न ताल जांनिये ॥ यह चोतालो है ॥ अथ वर्णभिन्न तालको स्वरूप लिख्यते ० ० । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है थां ० थरि ० तकुथरि । तकिकिट झेंझें । इति वर्णभिन्न ताल संपूर्णम् ॥

वर्णभिन्न ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	थां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	तकुथरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तितत	तकिकिट झेंझें	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ㄴ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो झालपें मान

कोकिलाप्रिय ताल, तितालो ३.

अथ कोकिलाप्रिय तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें बरतिवेको । चंचत्पुटादिक पांचतालनमेंसो । प्लुत तीन मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको को-

किलाप्रिय ताल नाम किनों ॥ अथ कोकिलाप्रिय तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें । एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो ताल कोकिलाप्रिय ताल जांनिये ॥ अथ कोकिलाप्रिय तालको स्वरूप लिख्यते ऽ। ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है धीकत धीकत धिधिकिट ऽ तकथों । तकिदिगि दिधिगिन थोंथों ऽ । इति कोकिलाप्रिय ताल संपूर्णम् ॥

कोकिलाप्रिय ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत थेई थेई	धीकत धीकत धिधिकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई तितत थेई थेई	तकिदिगि धि-धिगिन थोंथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालों झालापे मान

निशंकलीला ताल, चोतालो ४.

अथ निशंकलीला तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वर्तिवेको । चंचत्पुटादिक पांचतालनमेंसों । प्लुत तीन मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको नि-शंकलीला ताल नाम किनों । अथ निशंकलीला तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें दोय प्लुत होय । प्लुतकी तीनमात्रा ॥ ओर

दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो निशंकलीला ताल जांनिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ निशंकलीला तालको स्वरूप लिख्यते ऽऽऽऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है थरिथां थरिथां तकुकुकु ऽ धीकिट धीकिट थरिथा ऽ ततदां तगिदां ऽ धिधिगिन थोंथों ऽ इति निशंकलीलाताल संपूर्णम् ॥

निशंकलीला ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत थेई थेई	थरिथां थरिथां तकुकुकु	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ।।ꣳ)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२.	थेई तितत थेई थेई	धीकिट धीकिट थरिथा	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २ ।।ꣳ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३.	थेई तितत	ततदां तगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई तितत	धिधिगिन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो झालोपें मान

जय ताल, साततालो ७.

अथ जयतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । चंचत्पुटादिकमें । पांच तालनमेंसो लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । द्रुत आधिमात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके ।

देशी ताल उत्पन्न करि । वांको जयताल नाम किनों ॥ अथ जयतालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु हाय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो जयताल जांनिये ॥ यह ताल साततालो है ॥ अथ जयतालको स्वरूप लिख्यते । ऽ । । ० ० ऽ॑ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है ताहं । तत्थरि थरिथा ऽ ताहं । ताहं । तत ० था ० तत्था ताथरि थरिथों ऽ॑ इति जयताल संपर्णम् ॥

जय ताल, साततालो ७.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो तालं लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत	तत्थरि थरिथा	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।৷	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

जय ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
६.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	थेई तिततत थेई थेई	तत्था ताथरि थरिथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ७ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन विंदी झालो गोलकुंडालो हाथकी परीक्रमा झालापें मान

पूय ताल, साततालो ७.

अथ पूय तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । चत्पुटादिक पांच तालनमेसों गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको पूयताल नाम किनों ॥ अथ पूयतालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो पूयताल जांनिये ॥ यह ताल साततालो है ॥ अथ पयतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ॒ ० ० ऽ । ऽ॒ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है ॥ दिगदिग दांदां ऽ ताधिमि ताधिमि ततधिमि ऽ॒ धिमि ० तां ० ततधिमि तांतां ऽ ततधिमि । तकिदिगि धिधिगन थों ऽ॒ इति पूयताल संपूर्णम् ॥

पूय ताल, सात्तालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	तमस्या.
१.	थेई तितत्त	दिगदिग द्रांदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई तितत्त थेई थेई	ताधिमि ताधिमि ततधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई तितत्त	ततधिमि तांतां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक ह सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
६.	थेई	ततधिमि	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक
७.	थेई तितत्त थेई थेई	तकिदिगि धिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ७ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालोंपें मान

रति ताल, चोतालो ४.

अथ रति तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों ।

चंचत्पुटादिक पांचतालनमेंसों। लघु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको रतिताल नाम क़िनों ॥ अथ रतितालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय। लवुकी एक मात्रा ॥ तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो रतिताल जांनियें ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ रतितालको स्वरूप लिख्यते। ऽ ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है तकथों। दांदां दिगिदिगि ऽ थरिकुकु थरिकुकु ऽ नकुकुकु झें ऽ इति रतिताल संपूर्णम् ॥

रति ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तितत	दांदां दिगिदिगि	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई तितत	थरिकुकु थरिकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई तितत	नकुकुकु झें	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विंदी झालो झालोपें मान

विष्णुमत रति ताल, आठतालो ८.

अथ विष्णुमत रतितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें

वरतिवेको । चंचत्पुटादिक पांचतालनमेंसों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ यांको विष्णुमत रतिताल नाम किनों ॥ अथ विष्णुमत रतितालको स्वरूप लिख्यते ॥ जा तालमें च्यार द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर होय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ यां रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो विष्णुमत रतिताल जानिये ॥ अथ विष्णुमत रतितालको स्वरूप लिख्यते ० ० ० ० । ० ० ऽ अथ पाटाक्षर लिख्यत ॥ यांहिको लोकिकमें परमलु कहत है दां० दां० तकि० तकि० थाथै । थरि० थरि० कुकुनकि झें ऽ इति विष्णुमत रतिताल संपूर्णम् ॥

विष्णुमत रतिताल, आठतालो ८.

ताल.	चमत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक ह सो मात्रा आधि
४.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

विष्णुमत इति ताल, आठतालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्यां.
५.	थेई	थाथै	लघु ताल मात्रा । ५ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
८.	थेई तिततत	कुकुनकि झें	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो झालायें मान

चच्चरी ताल, तितालो ३.

अथ चच्चरी तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको चच्चरीताल नाम किनों ॥ अथ चच्चरीताल-को लक्षण लिख्यते ॥ जातालमें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो चच्चरीताल जांनिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ चच्चरी तालको स्वरूप लिख्यते ० ० ६ अथ पाटाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमलू कहत है था० थै० थरिकु ६ इति चच्चरीताल संपूर्णम् ॥

चचरी ताल, तिताला ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	तत	थरिकु	द्वि. ताल मात्रा ဝ ३ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण मात्रापें मान

कंकाल ताल, चोतालो ४.

अथ कंकाल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । चंचत्पुट आदिके । पांच तालनमेसों लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको कंकालताल नाम किनों ॥ अथ कंकाल तालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कंकाल ताल जांनिये ॥ अथ कंकाल तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलू कहते है ॥ किटिकिटि । किटिकिटि धोंकिट ऽ धिमिधिमि तांतां ऽ तकथों । इति कंकालताल संपूर्णम् ॥

कंकाल ताल, चोतालो ४.

ताल.	नचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	मस्या.
१.	थेई	किटिकिटि	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	ते·	किटिकिटि धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ò	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	ते	धिमिधिमि थांथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ò	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

मल्ल ताल, षट्तालो ६.

अथ मल्लतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमे वरतिवेकों ॥ लघु एक मात्राको । द्रुत आधी मात्राको । द्राविराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको मल्लताल नाम किनो ॥ अथ मल्लतालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें च्यार लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक द्रविराम होय । द्रविरामकी पोंण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो मल्लताल जांनिये ॥ यह ताल छ तालो है ॥ अथ मल्लतालको स्वरूप लिख्यते । । । । ० ò अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । तकथों । ताहं । तकथों । जग ० धलां ò इति मल्लताल संपूर्णम् ॥

मल्ल ताल. छतालो ६.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	तत	धल	द्वि. ताल मात्रा ὸ ६ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण मात्रापें मान

रंगाभरण ताल, पंचतालो ५.

अथ रंगाभरण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमे वरतिवेकों । चंचत्पुट आदिक पांच तालनमेसों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके ॥ देशी ताल

उत्पन्न करि ॥ वांको रंगाभरण ताल नाम किनों ॥ अथ रंगाभरण तालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सख उपजावे। सो रंगाभरण ताल जांनिये ॥ यह पंचतालो है ॥ अथ रंगाभरण तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ । । ऽ॓ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमलु कहते है तत्था तत्था ऽ धिधिकिट तत्था ऽ थरि थरि । तकथों । तकुकुत कुकुकिण झें ऽ॓ इति रंगाभरण ताल संपूर्णम् ॥

रंगाभरण ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	तत्था तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ὸ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई तिततत	धिधिकिट तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई	थरिथरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई तिततत थेई थेई	तकुकुत कुकुकिण झें	प्लुत ताल मात्रा (ऽ॓ ५ ॥ὸ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापें मान

जयमंगल ताल, चोतालो ४.

अथ जयमंगलतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें बिचारिकें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको जयमंगलताल नाम किनों ॥ अथ जयमंगलतालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो जयमंगलताल जांनिये ॥ यह चोतालो है ॥ अथ जयमंगलतालको स्वरूप लिख्यते । । । ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तकितकि । दांतकि । धिमिधिमि । थों० इति जयमंगलताल संपूर्णम् ॥

जयमंगल ताल, चोतालो ४.

ताल.	थपकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकितकि	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई	दांतकि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
४.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि मात्रापें मान

विजयानंद ताल, पंचतालो ५.

अथ विजयानंदतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको विजयानंद ताल नाम किनों ॥ अथ विजयानंद तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो विजयानंद ताल जांनिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ विजयानंद तालको स्वरूप लिख्यते ।।ऽऽऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहत है ताहं । तातकि । धिकिटकि धिकिटकि ऽ धांधां धिमिधिमि ऽ धिदिगिन थों ऽ इति विजयानंद ताल संपूर्णम् ॥

विजयानंद ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	तातकि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत	धिकिटकि धिकिटकि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई तिततत	धांधां धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
५.	थेई तिततत	धिदिगिन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो झालोंपे मान

राजविद्याधर ताल, तितालो ३.

अथ राजविद्याधरतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको राजविद्याधर ताल नाम किनों ॥ अथ राजविद्याधर तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो राजविद्याधर ताल जांनिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ राजविद्याधर तालको स्वरूप लिख्यते । ० ꣴ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है तकथों । तां० तथों ꣴ इति राजविद्याधर ताल संपूर्णम् ॥

राजविद्याधर ताल, तितालो ३.

ताल.	थथकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	तत	तथों	दवि० ताल मात्रा ꣴ ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण मात्रापें मान

अभंग तालो, दोयतालो २.

अथ अभंगतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें । गीत नृत्य वाद्य नाटयमे वरतिवेकों ॥

चंचत्पुटादिक पांच तालनमेंसो ॥ लघु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांकों अभंग ताल नाम किनों ॥ अथ अभंग तालको लक्षण लिख्यते॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो अभंग ताल जांनिये ॥ यह ताल दोय तालो है ॥ अथ अभंग तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमलु कहत है धिगदां । दांदां तकिटिधि गनथों ऽ इति अभंगताल संपर्णम ॥

अभंग ताल, दोयतालो २.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	धिगदां	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत थेई थेई	दां तकिटि-धि गनथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झाला झालोंपे मान

रायवंक ताल, पंचतालो ५.

अथ रायवंक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । चंचत्पुट आदिक पांच तालनमेंसों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको रायवंक ताल नाम किनों ॥ अथ रायवंक तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो रायवंक ताल जांनिये ॥ यह ताल पंचतालो है॥ अथ रायवंक तालको स्वरूप लिख्यते

ऽ। ऽ ० ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है नकुकुन कुकुथां ऽ कुकुथां। धिधिधिमि धिमिथों ऽ थां० थां० इति रायवंक ताल संपूर्णम् ॥

रायवंक ताल, पंचतालो ५.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	नकुकुन कुकुथां	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२.	थेई	कुकुथां	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तितत	धिधिधिमि धिमिथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोयें बिंदी झालो
४.	ते	थ	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	थां	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रापें मान

प्रतापशेखर ताल, तितालो ३.

अथ प्रतापशेखर तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरातिवेकों। चंचत्पुट आदिक पांचो तालनमेंसों। प्लुत तीन मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। द्रविराम पोंण मात्राको लेके।

देशी ताल उत्पन्न करी ॥ वांको प्रतापशेखर ताल नाम किनों ॥ अथ प्रतापशेखर तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय। दविरामकी पोंण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो प्रतापशेखर ताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ प्रतापशेखर तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ० ७ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है थांथां थांथां घिमिधिमि ऽ थै ० तथों ७ इति प्रतापशेखर ताल संपूर्णम् ॥

प्रतापशेखर ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत्त थेई थेई	थांथां थांथां घिमिधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥ऽ)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	तत	तथों	दवि०ताल मात्रा ७ ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण मात्रापें मान

वसंत ताल, षट्तालो ६.

अथ वसंत तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । चंचत्पुटादिक पांचो तालमेसों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको वसंत ताल

नाम किनो ॥ अथ वसंत तालको लछन लिख्यते ॥ जामें तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो वसंत ताल जानिये ॥ अथ वसंत तालको स्वरूप लिख्यते | | | ऽ ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है ताहं । थोंगा । थोंथरि । तकितकि चिचिकिट ऽ ताकिट ताकिट ऽ झिमिझिमि झें ऽ इति वसंत ताल संपूर्णम् ॥

वसंत ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई	थोंथरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
४.	थेई तितत	तकितकि चिचिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
५.	थेई तितत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
६.	थेई तितत	झिमिझिमि झें	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो झालोमें मान

गजझंपक ताल, चोतालो ४.

अथ गजझंपक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । चंचत्पुटादिक पांचो तालनमेंसों । गुरु दोय मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । द्रविराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको गजझंपक ताल नाम किनों ॥ अथ गजझंपक तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक द्रविराम होय । द्रविरामकी पोंण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो गजझंपक ताल जानिये ॥ अथ गजझंपक तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ० ० ꣿ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है धिकिटिधि किटिधिकि ऽ तकि ० तकि ० तथों ꣿ इति गजझंपक ताल संपूर्णम् ॥

गजझंपक ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१	थेई तितत	धिकिटिधि किटिधिकि	गुरु ताल मात्रा ऽ १॰ ।ꣿ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	तत	तथों	द्रवि. ताल मात्रा ꣿ ४ ≡	द्रविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण मात्रापें मान

चतुर्मुख ताल, चोतालो ४.

अथ चतुर्मुख तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राकों । गुरु दोय मात्राकों । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको चतुर्मुख ताल नाम किनो ॥ अथ चतुर्मुख तालको लक्षण लिख्यते॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो चतुर्मुख ताल जानिये ॥ अथ चतुर्मुख तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ । ऽ॒ याहिको लोकिकमें परमलू कहत है ताहं । तकितकि ताहं ऽ थकिथरि । तकितकि दिधिगन थों ऽ॒ इति॰चतुर्मुख ताल संपूर्णम् ॥

चतुर्मुख ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत	तकितकि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	थेई	थकिथरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तिततत थेई थेई	तकितकि दिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ॒ ४ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालापे मान

मदन ताल, तितालो ३.

अथ मदन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों ॥ चंचत्पुटादिक पांचो तालनमेंसो । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको मदन ताल नाम किनो ॥ अथ मदन तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो मदन ताल जानिये ॥ अथ मदन तालको स्वरूप लिख्यते ० ० ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है जक ० थरि ० थाकिट थरिथों ऽ इति मदनताल संपूर्णम् ॥

मदन ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई तिततत	थाकिट थरिथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो झालपें मान

रमण ताल, तितालो ३.

अथ रमण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमे वरतिवेकों ॥

गुरु दोय मात्राको । द्रुत आधी मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ थांको रमणताल नाम किनो ॥ अथ रमण तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो रमण ताल जानिये ॥ अथ रमण तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ० । अथ पाठाक्षर लिख्यंते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है धिकिधिमि धाधिमि ऽ नक० तकथों । इति रमण ताल संपूर्णम् ॥

रमण ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	धिकिधिमि धाधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	ते	नक	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक मात्राप मान

तार ताल, चोतालो ४.

अथ तारतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरविवेकों॥ द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ थांको तार ताल नाम किनो॥

अथ तारतालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो तारताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ तारतालको स्वरूप लिख्यते ० ⌓ । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है जक ० जकुकु ⌓ किटथों । किटथों । इति तारताल संपूर्णम् ॥

तार ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	तत	जकुकु	दवि० ताल मात्रा ⌓ २ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
३.	थेई	किटथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	किटथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

पार्वतीलोचन ताल, नोतालो ९.

अथ पार्वतीलोचन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । चंचत्पुटादिक पांचो तालनमेंसों । गुरु दोय मात्राको । लविराम डेड मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । द्रुत आधि मात्राको

लेके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको पार्वतीलोचन ताल नाम किनों ॥ अथ पार्वतीलोचन तालको लछन लिख्यते ॥ जामें तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लविराम होय। लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो पार्वती-लोचन ताल जानिये ॥ यह ताल नोतालो है ॥ अथ पार्वतीलोचन तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ ऽ) ऽ ऽ ऽ ० ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है दिमिदिमि दीकिट ऽ तकधिमि धिमितक ऽ थांकिट थांकिट ऽ दिगदिग दिग) गिडिदां गिडिदां तडिगिडि ऽ तगिदिदि गिधिदिमि ऽ धिधिकिट तकथां ऽ थरि० थों० इति पार्वतीलोचन ताल संपूर्णम् ॥

पार्वतीलोचन ताल, नवतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	दिमिदिमि दीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	थेई तितत	तकधिमि धिमितक	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	थेई तितत	थांकिट थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	तथेई	दिगदिग दिग	लवि. ताल मात्रा) ४ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड

पार्वतीलोचन ताल, नौतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई तितत थेई थेई	गिडिदां गिडिदां तडिगिडि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
६.	थेई तितत	तगिदिदि गिधिदिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
७.	थेई तितत	धिधिकिट तकथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झाला
८.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
९.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रापें मान

मृगांक ताल, तितालो ३.

अथ मृगांक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत वाद्य नृत्य नाटचमें वरतिवेकों । द्विराम पोंण मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको मृगांक ताल नाम कीनों ॥ अथ मृगांक तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक द्विराम होय । द्विरामकी पोंण मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो मृगांक ताल जानिये ॥ यह तितालो

है ॥ अथ मृगांक तालको स्वरूप लिख्यते ७ ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है जकुकु ७ कुकु ० किणझें । इति मृगांक ताल संपूर्णम् ॥

मृगांक ताल. तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तत	जकुकु	दृवि ० ताल मात्रा ७ १ ≡	प्रथम दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
२.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	किणझें	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

राजमार्तंड ताल, तितालो ३.

अथ राजमार्तंडतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधी मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि। वांको राजमार्तंड ताल नाम कीनों ॥ अथ राजमार्तंड तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो राजमार्तंड ताल जानिये ॥ अथ राजमार्तंड तालको स्वरूप लिख्यते ऽ । ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हे झिंझिमि झकितक ऽ झनकिट । झे० इति राजमार्तंड ताल संपूर्णम् ॥

राजमार्तंड ताल, तितालो ३.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	झिंझिमि झकितक	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ő	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई	झनकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	झे	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

कलाध्वनि ताल, पंचतालो ५.

अथ कलाध्वनि तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमं खरातिवेकों। लघु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको कलाध्वनि ताल नाम किनों॥ अथ कलाध्वनितालको लछन लिख्यते॥ जामें दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी दाय मात्रा॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें सो कलाध्वनि ताल जानिये॥ अथ कलाध्वनितालको स्वरूप लिख्यते ।। ऽ। ऽ॒ अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत हे झेझे। तकथों। धिमिधिमि तकथों ऽ थरिथरि। तकिटिगि गिटिगन थों ऽ॒ इति कलाध्वनि ताल संपूर्णम्॥

कलाध्वनि ताल, पंचतालो ५.

ताल.	वचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	झेझे	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत	धिमिधिमि तकथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई	थरिथरि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई तिततत थेई थेई	तकिदिगि गिदिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̆ ५ ।।ꣳ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापें मान

सरस्वति कंठाभरण ताल, षट्तालो ६.

अथ स्वरस्वति कंठाभरण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको सरस्वति कंठाभरण ताल नाम किनों ॥ अथ सरस्वति कंठाभरण तालको लछन लिख्यते ॥ जामें दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो सरस्वति

कंठाभरण ताल जानिये ॥ यह छतालो है ॥ अथ सरस्वति कंठाभरणतालको स्वरूप लिख्यते ऽऽ।।०० अथ पाठाक्षर लिख्यंते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहत है तकनक थोंगा ऽ झिमिझिडि थोंगा ऽ धिधिकिट । धिमिधिमि । गन० थों० इति सरस्वति कंठाभरणताल संपूर्णम् ॥

सरस्वति कंठाभरण ताल, छतालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	तकतक थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।꠸	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई तिततत	झिमिझिडि थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।꠸	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	ते	गन	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रापें मान

द्वंद्व ताल, सातताला ७.

अथ द्वंद्व तालकी उत्पात्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । चंचत्पुटादिक पांचो तालनमेंसों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको द्वंद्व ताल नाम किनों ॥ अथ द्वंद्व तालको लछन लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा । दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो द्वंद्व ताल जानिये ॥ यह सात तालो है ॥ अथ द्वंद्व तालको स्वरूप लिख्यते ।। ऽ ऽ ।। ऽ॑ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । थरिथरि । धिगिडिधि गिडिदां ऽ धिमितक दिगिदां ऽ दांदां । कुकुतक । झणिकिट झणिकिट झें ऽ॑ इति द्वंद्व ताल संपूर्णम् ॥

द्वंद्व ताल, सातताला ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	थरिथरि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तितत	धिगिडिधि गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो

द्वंद्व ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तिततत	धिमितक दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ঃ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
५.	थेई तिततत	दांदां	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	कुकुतक	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई तिततत थेई थेई	झणिकिट झणिकिट झें	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ७ ।।ঃ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालापें मान

चित्रपुट ताल, षट्तालो ६.

अथ चित्रपुटतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। चंचत्पुटादिक पांच तालनमेंसों। लघु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको चित्रपुटताल नाम किनों॥ अथ चित्रपुटतालको लछन लिख्यते॥ जामें दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ या रीतसों

गीतादिकमें सुख उपजावें । सो चित्रपुटताल जानिये ॥ यह ताल छह तालो है ॥ अथ चित्रपुटतालको स्वरूप लिख्यते ।।००।ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दिगिदां । धिमितक । दां० दां० तकथों । किटथरि धिधिगन थों ऽ इति चित्रपुट ताल संपूर्णम् ॥

चित्रपुट ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई	धिमितक	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
६.	थेई तिततत थेई थेई	किटथरि धिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ६ ।।।)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालोंपें मान

गौरी ताल, पंचतालो ५.

अथ गौरीतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको गौरीताल नाम किनों ॥ अथ गौरीतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें पांच लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो गौरीताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ गौरी तालको स्वरूप लिख्यते ।।।।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ताहं। टिर्हि। तकुथरि। किण्णटि। तकथों। इति गौरी ताल संपूर्णम् ॥

गौरी ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	टिर्हि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	तकुथरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	किण्णटि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

सारस ताल, पंचतालो ५.

अथ सारस तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। लघु एक मात्राको लेकें। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको सारस ताल नाम किनों ॥ अथ सारस तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो सारस ताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ सारसतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ० ।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है जाकि० णक० थों० थरिथों। तकथों। इति सारस ताल संपूर्णम् ॥

सारस ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जकि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	णक	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	थेई	थरिथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

स्कंद ताल, साततालो ७.

अथ स्कंदतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरविवेकों। गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको स्कंदताल नाम किनों ॥ अथ स्कंद तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीता-दिकमें सुख उपजावे। सो स्कंदताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ स्कंदतालको स्वरूप लिख्यते ऽ । ऽ ० ० ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है धिधितक धीकिट ऽ थरिकिट । तकिटत ताकिट ऽ नक० किट० झनिकिट झिमिझिमि ऽ तकझम झें ऽ इति स्कंदताल संपूर्णम् ॥

स्कंद ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	धिधितक धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत	तकिटत ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	ते	नक	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

स्कंद ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	ते	किट	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई तितवत	झनिकिट झिमिझिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।६	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
७.	थेई तितवत	तकझम झें	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।६	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालों झालापें मान

उत्सव ताल, तितालो ३.

अथ उत्सव तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरविवेकों । लघ एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको उत्सव ताल नाम किनों ॥ अथ उत्सव तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो उत्सवताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ उत्सव तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हे झिमिकिट । झांकिट झांकिट झणझण ऽ झकिझणि किटकिण झें ऽ इति उत्सवताल संपूर्णम् ॥

उत्सव ताल, तिताळो ३.

ताल.	थचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	झिमिकिट	लघु ताल मात्रा । १ ।	मथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत थेई थेई	झांकिट झांकिट झणझण	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २ ॥ं)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
३.	थेई तिततत थेई थेई	झकिझणि किटकिण झें	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३ ॥ं)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालोंपे मान

भम्र ताल, सातताळो ७.

अथ भम्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिबेकों । द्रुत आधी मात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको भम्रताल नाम किनों ॥ अथ भम्रतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें चार द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो भम्रताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ भम्र तालको स्वरूप लिख्यते ० ० ० ० । । े अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है जक० नक० कुकु० थरि० ताहं । धिमिथरि । दिगि तकथों े इति भम्रताल संपूर्णम् ॥

भग्न ताल, सातताली ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	त	नक	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	धिमिथरि	लघु ताल मात्रा ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	तथेई	दिगि तकथों	लवि. ताल मात्रा ेे। ७ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड मात्रापें मान

विलोकित ताल, चोताली ४.

अथ विलोकित तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वर-

तिवेकों । चंचत्पुटादिक पांच तालनमेंसों । गुरु दोय मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको विलोकित ताल नाम किनों ॥ अथ विलोकित तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो विलोकित ताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ विलोकित तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ० ० ऽ̀ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थरिथरि थांकिट ऽ धिधि ० किट ० कुकुथरि धिधिगन थों ऽ̀ इति विलोकित ताल संपूर्णम् ॥

विलोकित ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	थरिथरि थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।।𝄐	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२.	ते	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	किट	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	थेई तितत थेई थेई	कुकुथरि धिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̀ ४ ।।।𝄐)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालपें मान

पद्मा ताल, चोतालो ४.

अथ पद्मातालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राकों । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको पद्मताल नाम किनों ॥ अथ पद्मातालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो पद्मताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ पद्मातालको स्वरूप लिख्यते । । ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । तागिडि । दिगिदां दिगिदां ऽ गनथों । इति पद्मताल संपूर्णम् ॥

पद्मा ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	तागिडि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तितत	दिगिदां दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
४.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

रंगप्रदीप ताल, पंचतालो ५.

अथ रंगप्रदीपतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकै। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। गुरु दोय मात्राको। लघु एक मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको रंगप्रदीप ताल नाम किनों॥ अथ रंगप्रदीप तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो रंगप्रदीप ताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ रंगप्रदीप तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ । ऽ ऽ॑ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है द्रुमिकिट द्रुमिकिट ऽ दिदिगिन धीकिट ऽ थरिकिट। तकथां तकथां ऽ धिमिथरि नकुकिण थें ऽ॑ इति रंगप्रदीप ताल संपूर्णम् ॥

रंगप्रदीप ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितवत	द्रुमिकिट द्रुमिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई तितवत	दिदिगिन धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक

रंगप्रदीप ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तिततत	तकथां तकथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ॥ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
५.	थेई तिततत थेई थेई	धिमिथरि नकुकिण झें	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥ं)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालोंपें मान

सुदर्शन ताल, साततालो ७.

अथ सुदर्शन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको सुदर्शन ताल नाम किनों ॥ अथ सुदर्शनतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें छह द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सों सुदर्शन ताल जानिये ॥ यह ताल सातताली है ॥ अथ सुदर्शन तालको स्वरूप लिख्यते ० ० ० ० ० ० ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोंकिकमें परमलु कहते है तत० थे० ता० थे० थरि० थों० दिधिगन थों ऽ इति सुदर्शन ताल संपूर्णम् ॥

सुदर्शन ताल, सातताली ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

सुदर्शन ताल, साततालो ७.

ताल.	चलकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समझवा.
२.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	ते	ता	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
६.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
७.	थेई तिततत	दिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो झालापें मान

सुदेवत्स ताल, पंचतालो ५.

अथ सुदेवत्सतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधी मात्राको । दविराम पौण मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको सुदेवत्स ताल नाम किनों ॥

अथ सुदेवत्सतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो सुदेवत्सताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ सुदेवत्सतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ।।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है जग० नकुकु ० धिधिकिट । धीकिट । तकथों । इति सुदेवत्सताल संपूर्णम् ॥

सुदेवत्स ताल, पंचतालो ५.

ताल.	बनकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	तत	नकुकु	दवि०ताल मात्रा ० २ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोण
३.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
४.	थेई	धीकिट	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
५.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

राज ताल, सातताली ७.

अथ राजतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको राज ताल नाम किनों ॥ अथ राजतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो राजताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ राजतालको स्वरूप लिख्यते । ऽ ० ० ऽ । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तकथों । धिमितक धिमिधिमिं थरिथों ऽ थरि० कुकु० धिमिधिमि थाकुकु ऽ थोंगा । तकदिगि दिदिगन थों ऽ इति राजताल संपूर्णम् ॥

राज ताल, सातताली ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत थेई थेई	कताधिमि धिमि धिमि थरिथों	प्लुत ताल मात्रा (ꣳ ३ ।।ꣳ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
३.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि

राज ताल, सातताली ७.

ताल.	चक्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	तं	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई तितत	धिमिधिमि थाकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
६.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई तितत थेई थेई	तकदिगि दिदिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ७ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो मात्रापें मान

रति ताल, सातताली ७.

अथ रतितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको रतिताल नाम किनों ॥ अथ रतितालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीवादिकमें सुख उपजावे । सो रतिताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ रतितालको स्वरूप लिख्यते ०।।०००। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ वाहिको लोकिकमें परमलु कहते है तक० ताहं । थरिथरि । थै० दां० तकि० किणझें । इति रतिताल संपूर्णम् ॥

रति ताल, साततालो ७.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा | २ |	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई	थरिथरि	लघु ताल मात्रा | ३ |	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
४.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
६.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
७.	थेई	किणझें	लघु ताल मात्रा | ७ |	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

त्रिवर्त ताल, तितालो ३.

अथ त्रिवर्ततालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत वाद्य नृत्य नाटचमें वरतिवेकों । अणु

चोथाई मात्राको । दविराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको त्रिवर्तताल नाम किनों ॥ अथ त्रिवर्ततालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंणमात्रा ॥ या रीतसो गीतादिकमें सुख उपजावे । सो त्रिवर्त ताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ त्रिवर्त तालको स्वरूप लिख्यते ᵕ ᵕ ठ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है त ᵕ धि ᵕ धलां ठ इति त्रिवर्ततालं संपूर्णम् ॥

त्रिवर्त ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ति	त	अणु ताल मात्रा ᵕ १ —	प्रथम अणुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा चोथाई
२.	ति	धि	अणु ताल मात्रा ᵕ २ —	अणुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा चोथाई
३.	तत	धलां	दवि० ताल मात्रा ठ ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण

अभंग ताल, पंचतालो ५.

अथ अभंग तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत वाद्य नृत्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधी मात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको अभंग ताल नाम किनों ॥

अथ अभंग तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो अभंगताल जानिये ॥ यह पंचतालो है ॥ अथ अभंगतालको स्वरूप लिख्यते ० ० । ৲ । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हैं तत० थै० ताथै । थरिकुकु थै ৲ । गनथों । इति अभंगताल संपूर्णम् ॥

अभंग ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	ताथै	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	तथेई	थरिकुकु थै	लवि. ताल मात्रा ৲ ४ ।	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
५.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

झंपक ताल (ध्रुव १), तितालो ३.

अथ संगीतमें मतिके । शआदिक सात ताल प्रसिद्धते । प्रबंधनमें तिनके ध्रुवआदिक सात ताल है । ताहां पहले तालको नाम ध्रुव ॥ १ ॥ दूसरी तालको नाम मंठ ॥ २ ॥ तीसरे तालको नाम रूपक ॥ ३ ॥ चौथे तालको नाम झंपक ॥ ४ ॥ पांचवे तालको नाम त्रिपुट ॥ ५ ॥ छटे तालको नाम अठताली ॥ ६ ॥ सातवे तालको एक ताली ॥ ७ ॥ अथ ध्रुवआदिक सात तालनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पाण मात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । उनके ध्रुवादिक नाम किनों ॥ तहां ध्रुवतालके सोलह भेद है । तिनके नाम लिख्यते ॥ पहले तालको नाम झंपक ॥ १ ॥ दूसरे तालको नाम कमला ॥ २ ॥ तीसरी तालको नाम उत्साह ॥ ३ ॥ चौथे तालको नाम व्रजमंगल ॥ ४ ॥ पांचवे तालको नाम विक्रम ॥ ५ ॥ छटवो ताल मधुर ॥ ६ ॥ सातवो ताल निर्मल ॥ ७ ॥ आठवो ताल भीम ॥ ८ ॥ नवमो ताल कामोद ॥ ९ ॥ दशवो ताल चंद्रशेखर ॥ १० ॥ ग्यारमो ताल ऋमाणा ॥ ११ ॥ बारमो ताल कुंतल ॥ १२ ॥ तेरवो ताल क्रीडा ॥ १३ ॥ चोदमो तिलक ॥ १४ ॥ पंद्रवो विजय ॥ १५ ॥ सोलवो वज्र ॥ १६ ॥ तहां ध्रुवको प्रथम भेद झंपककी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लविराम डेड मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको झंपक ताल नाम किनों ॥ अथ झंपक तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो झंपक ताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ झंपक तालको स्वरूप लिख्यते (।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थरिकुकु थे (। धिधिकिट । तकथों । इति झंपक ताल संपूर्णम् ॥

झंपक ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकत.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तथेई	थरिकुकु थै	लवि ० ताल मात्रा ॊ १ ।=	प्रथम लवि० सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
२.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

कमला ताल (ध्रुव २), षट्तालो ६.

अथ ध्रुवको दूसरो भेद ओर कमलातालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । प्रथम गीत । द्वितीय नृत्य । तृतीय वाद्य । नाट्यमें वरतिवेकों । चंचत्पुटादि पांचो तालनमेंसो गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको कमला ताल नाम किनों ॥ अथ कमलातालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कमला ताल जानिये ॥ यह छह तालो है ॥ अथ कमला तालको स्वरूप लिख्यते ऽ । ० ७ । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है धिधिकिट धांकिट ऽ धिमिकिट । थरि० थरिकु ७ गिडिगिडि । दिदिगन थों ऽ इति कमला ताल संपूर्णम् ॥

कमला ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	धिधिकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ὀ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई	धिमिकिट	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	तत	थरिकु	द्वि. ताल मात्रा ὀ ४ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पौंण
५.	थेई	गिडिगिडि	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
६.	थेई तिततत	दिदिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ὀ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो झालोंपे मान

उत्साह ताल (ध्रुव ३), तितालो ३.

अथ ध्रुवको तिसरो भेद ओर उत्साहतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । चंचत्पुटादिक पांच तालनमेंसो । प्लुत तीन मात्राको । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके

देशी ताल उत्पन्न करि । वांको उत्साहताल नाम किनों ॥ अथ उत्साहतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो उत्साहताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ उत्साहतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है तकिकिडि दगिगिडि दिगिदां ऽ धिमितां धिमितां ऽ धिमिथों । इति उत्साहताल संपूर्णम् ॥

उत्साह ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत थेई थेई	तकिकिडि दगि गिडि दिगिदां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥ं)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२.	थेई तिततत	धिमितां धिमितां	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई	धिमिथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

व्रजमंगल ताल (ध्रुव ४), षट्तालो ६.

अथ चोथो भेद ध्रुवको व्रजमंगल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लविराम डेड मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि। वांको व्रजमंगल नाम किनों ॥ अथ व्रजमंगल तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥

दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो व्रजमंगलताल जानियें ॥ यह ताल षट्तालो है॥ अथ व्रजमंगल तालको स्वरूप लिख्यते ो ० ो ० । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धिमि धिंमितां ो तत० थरि थरिकुकु ो नकु० थोंगा । तकथों ॥ इति व्रजमंगलताल संपूर्णम् ॥

व्रजमंगल ताल, षट्तालो ६.

ताल.	वचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तथेई	धिमि धिमितां	लवि. ताल मात्रा ो १ ।=	प्रथम लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेढ
२.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	तथेई	थरि थरिकुकु	लवि. ताल मात्रा ो ३ =	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेढ
४.	ते	नकु	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

विक्रम ताल (ध्रुव ५), पंचतालो ५.

अथ पांचवो भेद ध्रुवको विक्रमतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । द्रुत आधी मात्राको । दविराम पोंण मात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको विक्रमताल नाम किनों ॥ अथ विक्रम तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो विक्रमताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ विक्रमतालको स्वरूप लिख्यते ० ̆ । ̆ । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है किट० जकिट ̆ नकुकिट । धा धिमिधिमि ̆ । गनथों । इति विक्रमताल संपूर्णम् ॥

विक्रम ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	किट	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	तत	जकिट	दवि. ताल मात्रा ̆ २ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण
३.	थेई	नकुकिट	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

विक्रम ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	तथेई	धा धिमिधिमि	लवि. ताल मात्रा ˋ। ४ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेड
५.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

मधुर ताल (ध्रुव ६), षट्तालो ६.

अथ छटो भेद ध्रुवको मधुर तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । दविराम पोंण मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राकों लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको मधुर ताल नाम किनों ॥ अथ मधुर तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो मधुर ताल जानिये ॥ यह छह तालो है ॥ अथ मधुर तालको स्वरूप लिख्यते ે ે ે ० ०। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ॥ थैथ रिकुकु ે धींधि धिकुकु ે थरिथ रिधिमि ે दां० गिडि० गनथों । इति मधुर ताल संपूर्णम् ॥

मधुर ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तत	थैथ रिकुकु	दवि. ताल मात्रा ે १ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण

मधुर ताल, पद्तालो ६.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	तत	धीधि धिकुकु	दवि. ताल मात्रा ऽ २ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
३.	तत	थरिथ रिधिमि	दवि. ताल मात्रा ऽ ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
४.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	गिडि	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

निर्मल ताल (ध्रुव ७), साततालो ७.

अथ सातवो भेद ध्रुवको । निर्मल ताल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधी मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको निर्मल ताल नाम किनो ॥ अथ निर्मल तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय लविराम होय ।लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा । या रीतसों गीता-

द्रिकमें सुख उपजावे । सो निर्मल ताल जानिये ॥ यह सात तालो है ॥ अथ निर्मल तालको स्वरूप लिख्यते । । ० ०)) । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ताहं । थोंगा । दिगि० दिगि० तत ताहं) तरि ताहं) दिगिथों । इति निर्मलताल संपूर्णम् ॥

निर्मल ताल, सातताली ७.

ताल.	थथकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	तथेई	तत ताहं	लवि. ताल मात्रा) ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेढ
६.	तथेई	तरि ताहं	लवि. ताल मात्रा) ६ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेढ

निर्मल ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
७.	थेई	दिगिथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक

भीम ताल (ध्रुव ८), साततालो ७.

अथ ध्रुवको आठमो भेद । भीमतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लविराम डेड मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको भीमताल नाम किनों ॥ अथ भीमतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो भीम ताल जानिये ॥ अथ भीमतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ˋ। ˋ। । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ॥ धी० किट० धां धिधिकिट ˋ। वकर्धा । ताकिटि तक ˋ। थरिथा । दिधिथों । इति भीमताल संपूर्णम् ॥

भीम ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	धी	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	किट	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा आधि

भीम ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३.	तथेई	धां धिधिकिट	लवि०ताल मात्रा ़ ३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
४.	थेई	तकधी	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	तथेई	ताकिटि तक	लवि०ताल मात्रा ़ ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
६.	थेई	थरिथा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	दिंधिथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक झालापें मान

कामोद ताल (ध्रुव ९), साततालो ७.

अथ नवमो भेद ध्रुवको । कामोद तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लविराम डेड मात्राको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको कामोद ताल नाम किनों ॥ अथ कामोद तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कामोद ताल जानिये ॥ अथ कामोद तालको

स्वरूप लिख्यते ऽ । ० ० ऽ । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है थरि ततथै ऽ दिधिथै । थां० थां० तकुथरि थै ऽ दिगिदां । तकथों । इति कामोद ताल संपूर्णम् ॥

कामोद ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तथेई	थरि ततथै	लवि. ताल मात्रा ऽ १ ।=	प्रथम लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेढ
२.	थेई	दिधिथै	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	थां	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	थां	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	तथेई	तकुथरि थै	लवि. ताल मात्रा ऽ ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेढ
६.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

चंद्रशेखर ताल (ध्रुव १०), सातताली ७.

अथ दशवो भेद ध्रुवको। चंद्रशेखर तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। लघु एक मात्राको। लविराम डेड मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको चंद्रशेखर ताल नाम किनों॥ अथ चंद्रशेखर तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक लविराम होय। लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधी मात्रा ॥ फेर एक लवि-राम होय। लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो चंद्र-शेखर ताल जानिये ॥ यह सात ताली है ॥ अथ चंद्रशेखर तालको स्वरूप लिख्यते ०।ì०ì।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है जक० झेंझें। तक धीतक ì दिधि० तक दिगिदां ì थोंगा। गिडिधों। इति चंद्रशेखर ताल संपूर्णम् ॥

चंद्रशेखर ताल, सातताली ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	थेई	झेंझें	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	तथेई	तक धीतक	लवि० ताल मात्रा ì ३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड

चंद्रशेखर ताल, साततालो ७.

ताल.	चक्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	ते	दिधि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतका सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	तथेई	तक दिगिदां	लवि० ताल मात्रा ो ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेड
६.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
७.	थेई	गिडिथों	लघ ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक मात्रापें भान

ऊर्माण ताल (ध्रुव ११), साततालो ७.

अथ ग्यारवो ध्रुवको भेद । ऊर्माण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको ऊर्माण ताल नाम किनों ॥ अथ ऊर्माण तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो ऊर्माण ताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ ऊर्माणतालको स्वरूप लिख्यते । । ० ो ० ो । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥

याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ताहं । ताहं । दिगि ० दां गिडिदां ⁀ तक ० धो थरिदां ⁀ गनथों । इति कर्माण ताल संपूर्णम् ॥

कर्माण ताल, सातताली .

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनानी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	तथेई	दां गिडिदां	लवि ० ताल मात्रा ⁀ ४ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
५.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	तथेई	धो थरिदां	लवि ० ताल मात्रा ⁀ ६ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
७.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

कुंतल ताल (ध्रुव १२) माततालो ७.

अथ बारवो ध्रुवको भेद । कुंतलतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको कुंतलताल नाम किनों ॥ अथ कुंतलतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कुंतलताल जानिये ॥ यह ताल साततालो है ॥ अथ कुंतलतालको स्वरूप लिख्यते । ० ︶ । ० ︶ । । । अथ पाठाक्षर लिख्यंत ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है थाकिट । था ० तत थाकिट ︶ तकु ० कुकु थरिथां ︶ दिगथां । तकथों । इति कुंतलतालनको पाठाक्षर वर्णनम् संपूर्णम् ॥

कुंतलताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थाकिट	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	तथेई	तत थाकिट	लवि०ताल मात्रा ︶ ३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेड

कुंतलताल, साततालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	ते	तकु	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	तथेई	कुकु थरिथां	लवि०ताल मात्रा ॅ। ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
६.	थेई	दिगधां	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्राएं मान

क्रीडा ताल (ध्रुव १३) षट्तालो ६.

अथ तेरवो ध्रुवको भेद। क्रीडातालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। दविराम पोंण मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको क्रीडाताल नाम किनों ॥ अथ क्रीडातालको लक्षण लिख्यते ॥ एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय। दविरामकी पोंण मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ दोय दविराम होय। दविरामकी पोंण मात्रा ॥ ओर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो क्रीडाताल जानिये ॥ यह छह तालो है ॥ अथ क्रीडातालको स्वरूप लिख्यते ० ॅ। ॅ ॅ। याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ॥ जक० तकुकु ॅ थरिथां। दिगिडि ॅ धिकुकु ॅ गनथों। इति क्रीडाताल संपूर्णम् ॥

क्रीडाताल, षट्तालो ६.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनार्णी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	तत	तकुकु	दविरा०ताल मात्रा ꣽ २ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
३.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	तत	दिगिडि	दवि०ताल मात्रा ꣽ ४ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
५.	तत	धिकुकु	दवि०ताल मात्रा ꣽ ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
६.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

तिलक ताल (ध्रुव १४) षट्तालो ६.

अथ चोदवो ध्रुवको भेद । तिलकतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ।

यांको तिलकताल नाम किनों ॥ अथ तिलकतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पोंण मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादि-कमें सुख उपजावे । सो तिलकताल जानिये ॥ अथ तिलकतालको स्वरूप लिख्यते ॥ ० ὂ ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हे ताहं । थोंगा । तत० धितकि ὂ दिधितां । गनथों । यह छह तालो है ॥ इति तिलकताल संपूर्णम् ॥

तिलकताल, पदतालों ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	तत	धितकि	द्विव० ताल मात्रा ὂ ४ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
५.	थेई	दिधितां	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापे मान

विजय ताल (ध्रुव १५) साततालो ७.

अथ पंद्रवो ध्रुवको भेद । विजयतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरनिवेकों ॥ द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको । द्विराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको विजय ताल नाम किनों ॥ अथ विजय तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक द्विराम होय । द्विरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो विजयताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ विजय तालको स्वरूप लिख्यते ० । ० । ꣸ । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है दिधि० । ताहं । तकि० दिगिदां । थिकिकि ꣸ थिमिथिमि । तकथों । इति विजयताल संपूर्णम् ॥

विजय ताल. साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	दिधि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

विजय ताल, सातताळो ७.

ताल.	वचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक
५.	तत	खिकिंकिं	द्रुवि०ताल मात्रा ঌ ५ ॥	द्रुविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा पौंण
६.	थेई	खिमिखिमि	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक
७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक

वज्र ताल (ध्रुव १६) पंचताळो ५.

अथ सोलवो भेद ध्रुवको । वज्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । द्रुविराम पौंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको वज्रताल नाम किनों ॥ अथ वज्रतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ तीन द्रुविराम होय । द्रुविरामकी पौंण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो वज्रताल जानियें ॥ यह ताल पंचताळो है ॥ अथ वज्रतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ঌ ঌ ঌ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है था० थे० थरिकु ঌ धिकुकु ঌ खिथों ঌ ॥ इति वज्र ताल संपूर्णम् ॥

वज्र ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा	समस्या.
१.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	तत	थरिकु	दवि०ताल मात्रा ꝺ ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
४.	तत	धिकुकु	दवि०ताल मात्रा ꝺ ४ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
५.	तत	धिथों	दवि०ताल मात्रा ꝺ ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण मात्रापें मान

विजय ताल (मंठ १) पंचतालो ५.

अथ शूडादिकनमें पहलो मंठ । विजय तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधी मात्राको दविराम पोंणमात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशीताल उत्पन्न करि ॥ वांको मंठ ताल नाम किनों । सो मंठ तालके छतीस भेद है । तिनकें नाम लिख्यते ॥ तहां पहलो विजय । १ । दूसरो प्रथम । २ । तिसरो चक्र ।३। चोथों धनंजय । ४ । पांचवोंविराम ।५।

छटो सालग । ६ । सातवो सारस । ७ । आठवो की । ८ । नवो पाडि । ९ । दशवो रवि । १० । ग्यारवो विचार । ११ । बारमो श्रीमंठ । १२ । तेरवो रंगमंठ । १३ । चोदवो षणमंठ । १४ । पंद्रवो जयप्रिय । १५ । सोलवो गीर्वाण । १६ । सतरवो कमल । १७ । अठारवो चित्र । १८ । उगणीसवो नागप्रिय । १९ । विसवो विसाल । २० । ईकवीसवो कल्याण मंठ । २१ । बाईसवो वल्लभ । २२ । तेईसवो वर्ण । २३ । चोईसवो पनभूं । २४ । पचीसवो मुहिन । २५ । छवीसवो कराल । २६ । सताईसवो श्रीरंग । २७ । अठावीसवो गंभीर । २८ । गुणतीसवो भन्न । २९ । तीसवो कलिंग । ३० । इकतीसवो पंचबान । ३१ । बतीसवो प्रिय । ३२ । तेतीसवो सत्य । ३३ । चोतीसवो पंचबान । ३४ । पैंतीसवो बारिमंठ । ३५ । छतीसवो संकीर्णमंठ । ३६ । नहा मंठको प्रथम भेद । विजय तालकी उत्पानि लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको गुरु दोय मात्राको लेके ॥ देशीताल उत्पन्न करि ॥ वांको विजय ताल नाम किनों ॥ अथ विजय तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो विजयताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है । अथ विजय तालको स्वरूप लिख्यते ।। ऽ ।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तकधिकि । दिगदां । तागिडि गिडिदां ऽ ततधिमि । गनथों । इति विजयताल संपूर्णम् ॥

विजय ताल, पंचतालो ५.

ताल.	थपकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकधिकि	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल ठीक है सो मात्रा एक

विजय ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई	दिगदां	लघु ताल मात्रा । २ ।ҍ	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई तितत	तागिड गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।।ҍ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई	ततधिमि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
५.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक मात्रापें मान

प्रथम ताल (मंठ २), तितालो ३.

अथ मंठ तालको दूसरो भेद । प्रथम तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको प्रथम ताल नाम किनों ॥ अथ प्रथम तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो प्रथम ताल

जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ प्रथमतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ० ३ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है धिधिकिट थरिथां ऽ धिमि ० थरिकुकु दिधिगन थों ३ ॥ इति प्रथम ताल संपूर्णम् ॥

प्रथम ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	धिधिकिट थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ॥	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई तितत थेई थेई	थरिकुकु दिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (३ ३ ॥)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालोंपे मान

चक्र ताल (मंठ ३), चोतालो ४.

अथ मंठको तीसरो भेद । चक्र तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको चक्रताल नाम किनों ॥ अथ चक्रतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो चक्रताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ चक्रतालको स्वरूप लिख्यते ।।।ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ताहं । धिमिधिमि । तकितां । धिधिगन थों ऽ इति चक्रताल संपूर्णम् ॥

चक्र ताल, चौतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	तकिता	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तितत	धिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो झालोंपे मान

धनंजय ताल (मंठ ४) चोतालो ४.

अथ मंठको चोथो भेद । धनंजय तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको धनंजयताल नाम किनों ॥ अथ धनंजयको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ यारीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो धनंजय ताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ धनंजय तालको स्वरूप लिख्यते ० । ऽ ऽ॓ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है जक ० थरिथां । धीकिट धीकिट ऽ तकुकुत कुकुथरि थों ऽ॓ इति धनंजयताल संपूर्णम् ॥

धनंजय ताल, चोतालो ४.

ताल.	पच्छकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत	धीकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ꣲ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई तिततत थेई थेई	तकुकुत कुकुथरि थों	प्लुत. ताल मात्रा (ꣳ ४ ।।ꣲ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालोंपें मान

विराम ताल (मंठ ५) षट्तालो ६.

अथ मंठको पांचवो भेद । विरामतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको । लघु एक मात्राको । लविराम डेड मात्राको लेके । दशी ताल उत्पन्न करि । वांको विरामताल नाम किनों ॥ अथ विरामतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ।

सो विरामताल जानिये ॥ यह ताल छहतालो है ॥ अथ विरामतालको स्वरूप लिख्यते ० ꣴ । ० । ꣵ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तधि० धलां ꣴ कुधलां । तक० जकिकिट । तधि गनथों ꣵ इति विरामताल संपूर्णम् ॥

विराम ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तधि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	तत	धलां	द्रवि. ताल मात्रा ꣴ २ ≡	द्रविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण
३.	थेई	कुधलां	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
४.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
५.	थेई	जकिकिट	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
६.	तथेई	तधि गनथों	लवि. ताल मात्रा ꣵ ६ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेड

सालग ताल (मंठ ६) पट्तालो.

अथ मंठको छटो भेद । सालग तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमे वरातिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको सालग ताल नाम किनों । अथ सालग तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो सालग ताल जानिये ॥ यह ताल पट्तालो है ॥ अथ सालग तालको स्वरूप लिख्यते ० । ० ० ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तक ० धिधिधिमि । दिगि ० गिडि ० दिगि ० तकथों । इति सालग ताल संपूर्णम् ॥

सालग ताल, पट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	थेई	धिधिधिमि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रु.की सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	गिडि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

सालग ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रार्थ मान

सारस ताल (मंठ ७) आठतालो ८.

अथ मंठको सातवो भेद। सारसतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। गुरु दोय मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांकों सारस ताल नाम किनों ॥ अथ सारस तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ च्यार लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो सारस ताल जानिये ॥ यह ताल आठ तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ० ० ऽ ऽ । । । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दां ० दां ० धिधिकिट दिगदां ऽ कुकुथरि दिगदां ऽ तांतक । धिमिधिमि। किटथरि। गनथों। इति सारस ताल संपूर्णम् ॥

सारस ताल, आठतालों ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई तितत्त	धिधिकिट दिगदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	थेई तितत्त	कुकुथरि दिगदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
५.	थेई	तांतक	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	किटथरि	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

कील ताल (मंठ ८), षट्तालो ६.

अथ मंठको आठवो भेद। कील तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको कील ताल नाम किनों ॥ अथ कील तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो कील ताल जानिये ॥ यह छह तालो है। अथ स्वरूप लिख्यते ०। ० ०।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थरि० धीथरि। धिमि० तक० धिमिकिट। तकथों। इति कील ताल संपूर्णम् ॥

कील ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	थेई	धीथरि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

कील ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
६.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक मात्रापें मान

पंडि ताल (मंठ ९), एक्र तालो १.

अथ मंठको नवो भेद । पंडि तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों ॥ प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको पंडिताल नाम किनो ॥ अथ पंडितालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो पंडिताल जानिये ॥ यह ताल एक तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है । धाधा तकदिधि गनथों ऽ इति पंडिताल संपूर्णम् ॥

पंडि ताल, एकतालो १.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत थेई थेई	धाधा तकदिधि गनथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालोंपे मान

रवि ताल (मंठ १०), नोतालो ९.

अथ मंठको दशवो भेद। रवितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। गुरु दोय मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको रविताल नाम किनों ॥ अथ रवितालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर च्यार लघु अशब्द होय। लघु अशब्दकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो रविताल जानिये ॥ यह नोतालो है ॥ अथ रवितालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ । ऽ ऽ (। । । ।) अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है। गिंडिदां गिडिदां ऽ गिडिदां नकुकुकु ऽ ताहं। धिमिथों किटधिमि ऽ दिगिदां द्रिगिदां ऽ थोंगा। ततथै। ततदिधि। गनथों। इति रविताल संपूर्णम् ॥

रवि ताल, नोतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	गिंडिदां गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	थेई तिततत	गिडिदां नकुकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

रवि ताल, नौतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तिततत	धिमिथों किटाधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
५.	थेईं तिततत	दिगिदां द्रिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	थेईं	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक —। निशब्द—आवापक...दाहिणो हाथको बाईतरफ चलावणो
७.	थेईं	ततथै	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ।— निशब्द विक्षेपक...दाहिणो हाथको दाहिणीतरफ चलावणो
८.	थेईं	ततदिधि	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ⊤ निशब्द–निष्कामक...दाहिणो हातको उपरन चलावणो
९.	थेईं	गनथों	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ⊥ निशब्द– प्रवेशक...दाहिणो हाथको नीचेको चलावणो

विचारताल (मंठ ११), पंचतालो ५.

अथ मंठको ग्यारवो भेद । विचार तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ।

बांको विचारताल नाम किनों ॥ अथ विचारतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुखउपजावे । सो विचारताल जानिये ॥ यह पंचतालो है ॥ अथ स्वरूपं लिख्यते ।।। ०ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थोंगा । तकथरि । गिडिदां । कुकु ० धिथों ऽ इति विचारताल संपूर्णम् ॥

विचार ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थांगा	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	तकथरि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	गिडिदां	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	तत	धिथों	दवि. ताल मात्रा ऽ ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण मात्रापें मान

श्रीमंठ ताल (मंठ १२), आठ तालो ८.

अथ मंठको बारमो भेद । श्रीमंठतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों ॥ लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके ॥ देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको श्रीमंठ ताल नाम किनों ॥ अथ श्रीमंठतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और चार द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सो श्रीमंठ ताल जानिये । यह ताल आठ तालो है । अथ श्रीमंठ तालको स्वरूप लिख्यते ॥ ० ० ० ० ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है । ताहं । ताहं । धिमि० धिमि० नकु० कुकु० किर्रट किर्रट ऽ दिधिगन थों ऽ इति श्रीमंठताल संपूर्णम् ॥

श्रीमंठ ताल, आठतालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

श्रीमंठ ताल, आठतालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	ते	नकु	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	थेई तितत	किरंट किरंट	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
८.	थेई तितत	दिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो झालोंपे मान

रंगमंठ ताल (मंठ १३), साततालो ७.

अथ मंठको तेरवो भेद । रंगमंठतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको रंगमंठताल नाम किनों ॥ अथ रंगमंठ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो रंगमंठताल जानिये ॥ यह ताल साततालो है ॥ अथ रंगमंठतालको

स्वरूप लिख्यते ऽ ० ० ऽ ० ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताकिट ताकिट ऽ दिगि० दिगि० धिधिकिट धीकिट ऽ थरि० धिमि० तकथों ॥ इति रंगमंठताल संपूर्णम् ॥

रंगमंठ ताल, सातताली ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा	समस्या.
१.	थेई तिततत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ὸ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	थेई तिततत	धिधिकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
५.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

षण्मंठ ताल (मंठ १४), आठतालो ८.

अथ मंठको चवदावो भेद । षण्मंठतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको षण्मंठताल नाम किनों ॥ अथ षण्मंठको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर च्यार अशब्द लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो षण्मंठताल जानिये ॥ यह ताल आठ तालो है ॥ अथ षण्मंठ तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ । । (। । । ।) अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धिमिधिमि थरिथां ऽ तकदिगि कुकुथां ऽ धिमिथों । थोंगा । अशब्द...ताहं । दिगिदां । दिगिदां । तकथों । इति षण्मंठताल संपूर्णम् ॥

षण्मंठ ताल, आठतालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	धिमिधिमि थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ὸ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई तितत	तकदिगि कुकुथां	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई	धिमिथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

पणमंठ ताल, आठतालो ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक –। अशब्द...आवापक दाहिणो हाथ बांईत्रफ
६.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ।– अशब्द...विक्षेपक दाहिणो हाथ दाहिणीत्रफ
७.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ⊤ अशब्द...निष्कामक दाहिणो हाथ ऊचों करणों
८.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापेमान ⊥ अशब्द...प्रवेशक दाहिणो हाथ नीचेकोपताकिनों

जयप्रिय ताल (मंठ १५), तितालो ३.

अथ मंठको पंद्रवो भेद । जयप्रियतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको जयप्रियताल नाम किनों ॥ अथ जयप्रियतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥

एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो जयप्रियताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है॥ अथ जयप्रियतालको स्वरूप लिख्यते । ऽ। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । धिधिकिट ताहं ऽ गनथों । इति जयप्रियताल संपूर्णम् ॥

जयप्रिय ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	थेई तितत	धिधिकिट ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।॑	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

गीर्वाण ताल (मंठ १६), पंचतालो ५.

अथ मंठको सोलवो भेद । गीर्वाणतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको गीर्वाणताल नाम किनों ॥ अथ गीर्वाणतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय ।

गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो गीर्वाणताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ गीर्वाणतालको स्वरूप लिख्यते । ऽ । ऽ̀ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थोंगा । तकदिधि थोंगा ऽ धिमिधिमि । थांथरि थांथरि कुकुथरि ऽ̀ दिधिगन थों ऽ इति गीर्वाणताल संपूर्णम् ॥

गीर्वाण ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तितत	तकदिधि थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तितत थेई थेई	थांथरि थांथरि कुकुथरि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̀ ४ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
५.	थेई तितत	दिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो

कमल ताल (मंठ १७), दशतालो १०.

अथ मंठको सत्रवो भेद । कमल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको कमलताल नाम किनों ॥ अथ कमल तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामे एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कमलताल जानिये ॥ यह ताल दशतालो है ॥ अथ कमल तालको स्वरूप लिख्यते । ० ० । । ० ० । । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । थरि ० थां ० दिगिदां । गिडिगिडि । तक ० तां ० धिधिकिट । थोंगा । तकथों । इति कमलताल संपूर्णम् ॥

कमल ताल, दशतालो १०.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	ते	थां	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि

कमल ताल, दृशतालो १०.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
५.	थेई	गिडिगिडि	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
६.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
७.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
८.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
९.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
१०.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

चित्र ताल (मंठ १८), चोतालो ४.

अथ मंठको अठारवो भेद । चित्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य

वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको चित्रताल नाम किनों ॥ अथ चित्रतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो चित्रताल जानिये ॥ यह चोतालो है ॥ अथ चित्रतालको स्वरूप लिख्यते ० ० ꣳ ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है डुगु० डुगु० धुमिधिमि थरिथा तकतक ꣳ थों ० इति चित्रताल संपूर्णम् ॥

चित्र ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	डुगु	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	डुगु	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई तिततत थेई थेई	धुमिधिमि थरिथा तकतक	प्लुत ताल मात्रा (ꣳ ३ ।।ꣳ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापे मान
४.	ते	थो	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

तारप्रति ताल (मंठ १९), चोतालो ४.

अथ मंठको उगणीसवो भेद। तारप्रति तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत

नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको तारप्रतिताल नाम किनों॥ अथ तारप्रतितालको लक्षण लिख्यते॥ जामें दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो तारप्रति ताल जानिये॥ यह ताल चोतालो है॥ अथ स्वरूप लिख्यते००।। अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है द्रां० द्रां० कुकुथरि। गनथों। इति तारप्रति ताल संपूर्णम्॥

तारप्रति ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	द्रां	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	द्रां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

विशाल ताल (मंठ २०), सातताली ७.

अथ मंठको वीसवो भेद। विशालतालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको विशाल ताल नाम किनों॥

अथ विशाल तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो विशाल ताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ० ० । ० ० । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धिमि० थरि० ताकिट । धिधि० गिडि० थोंगा । धिमिथों । इति विशाल ताल संपूर्णम् ॥

विशाल ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	ताकिट	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	ते	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	गिडि	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

विशाल ताल, सातताली ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
६.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	धिमिथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

कल्याण ताल (मंठ २१), सातताली ७.

अथ मंठको ईकईसवो भेद । कल्याण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको कल्याण मंठ-ताल नाम किनों ॥ अथ लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर च्यार अशब्द लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कल्याण मंठ ताल जानिये ॥ यह ताल सात ताली है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ऽ।। (।।।।) अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धांकिडि धांकिडि ऽ तकतक । दिगिदां । ताहं । थोंगा । धांधां । थाथों । इति कल्याण ताल संपूर्णम् ॥

कल्याण ताल, सातताली ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	धांकिडि धांकिडि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो हाथकों

कल्याण ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई	तकतक	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	दिगदां	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई	वाहं	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक –। अशब्द... आवापक
५.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ।– अशब्द... विक्षेपक
६.	थेई	धांधां	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक T अशब्द... निष्क्रामक
७.	थेई	थार्थों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान ⊥ अशब्द... प्रवेशक

वल्लभ ताल (मंठ २२), तितालो ३.

अथ मंटको बाईसवा भेद । वल्लभ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको वल्लभताल नाम किनों ॥

अथ वल्लभ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो वल्लभताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ऽ । ऽ̄ अथ पाठाक्षर लिख्यत ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धांकिट धांकिट ऽधिमिधिमि । किणकुकु थों ऽ इति वल्लभताल संपूर्णम् ॥

वल्लभ ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	धांकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ꣳ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत	किणकुकु थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी झालो झालापें मान

वर्ण ताल (मंठ २३), साततालो ७.

अथ मंठको तेईसवो भेद । वर्णतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यम वरतिवेकों । लघु एक मात्राको द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको वर्णताल नाम किनों ॥ अथ वर्णतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो वर्णताल

जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ वर्णतालको स्वरूप लिख्यते ।। ० ० । ० ० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दिगिदां । थोंगा । कुकु० थरि० धिमिथरि । तक० । थों० इति वर्णताल संपूर्णम् ॥

वर्ण ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई	धिमिथरि	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रापें मान

पुनर्भू ताल (मंठ २४), साततालो ७.

अथ मंठको चोवीसवो भेद । पुनर्भूतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेकें । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको पुनर्भू नाम किनों ॥ अथ पुनर्भू तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और च्यार अशब्द लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो पुनर्भू ताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते।। ऽ (।।।।) अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं। ताहं। गिडिदां गिडिदां ऽ थरिथरि । कुकुथरि । तकदिधि । गनथों । इति पुनर्भूताल संपूर्णम् ॥

पुनर्भू ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तितत	गिडिदां गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	थेई	थरिथरि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक अशब्द...आवापक

पुनर्भू ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक अशब्द...विक्षेपक
६.	थेई	तकदिधि	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक ह सो मात्रा एक अशब्द...निष्क्रामक
७.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान अशब्द...प्रवेशक

मुद्रित ताल (मंठ २५), आठतालो ८.

अथ मंठको पंचवीसवो भेद । मुद्रित तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको मुद्रित ताल नाम किनों ॥ अथ मुद्रित तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर च्यार अशब्द लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो मुद्रित ताल जानिये ॥ यह आठ तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ऽ।। ऽ (।।।।) अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है द्रिमिकिट द्रिमिद्रिमि ऽ दिगिदां । दिगिदां । धिमिकिकि धिमिधां ऽ ताहं । थोंगा । किणिकिणि । गनथों । इति मुद्रित ताल संपूर्णम् ॥

मुद्रिक्ष ताल, आठतालों ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	द्रिमिकिट द्रिमिद्रिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ὸ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तितत	धिमिकिकि धिमिधां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक अशब्द...आवापक...दाहिणों हाथ वाहि तरफ चलावणों
६.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक अशब्द...विक्षेपक...दाहिणों हाथ दाहणीं त्रफ चलावणों
७.	थेई	किणिकिणि	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक अशब्द...निष्कामक...दाहिणों हाथकु उपरनें चलावणों
८.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक अशब्द...प्रवेशक...दाहिणों हाथ निचानें चलावणों मान

कराल ताल (मंठ २६), षट्तालो ६.

८ अथ मंठको छवीसवों भेद । कराल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनं मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको कराल ताल नाम किनों ॥ अथ कराल तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कराल ताल जानिये ॥ यह ताल छह तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते । ऽ ऽ । । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते । याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । कुकुथरि थरिमिथ ऽ धीकिट धीकिट ऽ ताहं । दिगिदां । धिधिगन थों ऽ इति कराल ताल संपूर्णम् ॥

कराल ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत	कुकुथरि थरिमिथ	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३.	थेई तिततत	धीकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ४	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

कराल ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई	दिगिदां	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई तिततत	धिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो झालोंपे मान

श्रीरंग ताल (मंठ २७), षट्तालो ६.

अथ मंठको सताईसवों भेद । श्रीरंग तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको श्रीरंगताल नाम किनों ॥ अथ लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो श्रीरंगताल जानिये ॥ यह ताल छह तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते । । ऽ । ऽ३ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । ताहं । धिकुकुधि कुकुथरि ऽ तकथों । गिडिदां गिडिदां तकुकुकु ऽ३ गनथों । इति श्रीरंगताल संपूर्णम् ॥

श्रीरंग ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

श्रीरंग ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई तितत	धिकुकुधि कुकुथरि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
५.	थेई तितत थेई थेई	गिडिदां गिडि-दां तकुकुकु	प्लुत ताल मात्रा (३ ५ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
६.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

गंभीर ताल (मंठ २८), दोयतालो २.

अथ मंठको अठाईसवों भेद । गंभीर तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिबेकों । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको गंभीर ताल नाम किनों ॥ अथ गंभीर तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन

मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो गंभीर ताल जानिये ॥ यह ताल दोय तालो है ॥ अथ गंभरि तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ꣳ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है दांदां कुकुथरि ऽ तकिधिकि धिधिगन थों ꣳ इति गंभीरताल संपूर्णम् ॥

गंभीर ताल, दोयतालो २.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	दांदां कुकुथरि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ॥	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो हाथको
२.	थेई तिततत थेई थेई	तकिधिकि धिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ꣳ २ ॥।)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालोंपें मान

भिन्न ताल (मंठ २९), नोतालो ९.

अथ मंठको गुनतीसवों भेद । भिन्न तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको भिन्न ताल नाम किनों ॥ अथ भिन्न तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो भिन्नताल जानिये ॥ यह ताल नोतालो

है ॥ अथ भिन्न तालको स्वरूप लिख्यते ० ० ० । ० । ० ।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धिमि० थां० धिमि० कुकुधिमि । कुकु० धिमिधिमि । थरि० थोंगा । तकथों । इति भिन्न ताल संपूर्णम् ॥

भिन्न ताल, नोतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	ते	थां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	थेई	कुकुधिमि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

भिन्न ताल, नौतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
८.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ९. ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

कलिंग ताल (मंठ ३०), तितालो ३.

अथ मंठको तीसवों भेद । कलिंग तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरविवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको कलिंग ताल नाम किनों ॥ अथ कलिंग तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कलिंगताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ० । । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है जकि० थरिकुकु । गनथों । इति कलिंगताल संपूर्णम् ॥

कलिंग ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जकि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

कलिंग ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई	थरिकुकु	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

पंचघात ताल (मंठ ३१), पंचतालो ५.

अथ मंठको ईकतीसवों भेद । पंचघात तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको पंचघात ताल नाम किनों ॥ अथ लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो पंचघात ताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ।। ० ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । ताहं । तकि० तकि० तकथों । इति पंचघात ताल संपूर्णम् ॥

पंचघात ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

पंचघात ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा	समस्या.
२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	तकि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

प्रेम ताल (मंठ ३२), पंचतालो ५.

अथ मंठको बतीसवों भेद । प्रेम तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको प्रेम ताल नाम किनों ॥ अथ प्रेम तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो प्रेम ताल जानिये ॥ यह ताल पंच तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ०। ०।० अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तक० थोंमा । दिग० धिंधिगन । थो० इति प्रेमताल संपूर्णम् ॥

प्रेम ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	ते	दिग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	थेई	धिधिगन	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
५.	ते	थो	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि

सत्यताल (मंठ ३३), पंचतालो ५.

अथ **मंठको** तेतीसवों भेद। सत्यतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। लघु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको सत्यताल नाम किनों ॥ अथ सत्यतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ और एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या

रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो सत्यताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है॥ अथ सत्यतालको स्वरूप लिख्यते । ० । ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । तक० धिमिधिमि । दिधि० गनथों॥ इति सत्यताल संपूर्णम् ॥

सत्य ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	ते	दिधि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

प्रियताल (मंठ ३४), तितालो ३.

अथ मंठको चोतीसवों भेद। प्रियतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको प्रियताल नाम किनों॥

अथ प्रियतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो प्रियताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ प्रियतालको स्वरूप लिख्यते । ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थरिकुकु । थरि० तकथों । इति प्रिय ताल संपूर्णम् ॥

प्रिय ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थरिकुकु	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

वारीमंठ ताल (मंठ ३५), षट्तालो ६.

अथ मंठको पेंतीसवो भेद । वारीमंठतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको वारिमंठताल नाम किनों ॥ अथ वारीमंठतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥

एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो वारीमंठताल जानिये ॥ यह छह तालो है ॥ अथ वारीमंठतालको स्वरूप लिख्यते । ऽ । ऽ । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ताहं । दिगिदां थरिथरि ऽ धिधिकिट । गिडिदां गिडिदां ऽ धिमितक । धिधिगन थों ऽ । इति वारीमंठताल संपूर्णम् ॥

वारीमंठ ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तितत	दिगिदां थरिथरि	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
३.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तितत	गिडिदां गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
५.	थेई	धिमितक	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई तितत	धिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो झालांपे मान

संकीर्णताल (मंठ ३६), पचीस तालो २५.

अथ मंठको छतीसवों भेद । संकीर्णतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको संकीर्णताल नाम किनों ॥ अथ संकीर्णतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ ओर च्यार अशब्द लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो संकीर्णताल जानिये ॥ यह ताल पचीसतालो है ॥ अथ संकीर्णतालको स्वरूप लिख्यते । ० ० । ० ० । ० । ० । ० ० । ० ० । ० । ० ० (। । । ।) अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । दिगि० दिगि ० थरिथा । धिमि० धिमि० थोंगा । थरि० कुकुधिमि । थरि०गिडिदां । तत० थै० धीकिट । धिमि० थै० तकतां । किण० किटथरि । गिडि० गिडि० अशब्द...थरिकुकु । तकुकुकु । किणदिधि । गनथों । इति संकीर्णताल संपूर्णम् ॥

संकीर्ण ताल, पचीसतालो २५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

संकीर्ण ताल, पचीसतालो २५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	ते	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	थेई	थरिथा	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
५.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
६.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
७.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
८.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
९.	थेई	कुकुधिमि	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

संकीर्ण ताल, पचीसतालो २५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१०.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
११.	थेई	गिडिदां	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० १२ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१३.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१४.	थेई	धीकिट	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० १५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१६.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० १६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१७.	थेई	तकतां	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

संकीर्ण ताल, पचीसतालो २५.

ताल.	चवकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१८.	ते	किण	द्रुत ताल मात्रा ० १८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१९.	थेई	किटथरि	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२०.	ते	गिडि	द्रुत ताल मात्रा ० २० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२१.	ते	गिडि	द्रुत ताल मात्रा ० २१ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२२.	थेई	थरिकुकु	लघु ताल मात्रा । २२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक —। अशब्द...आवापक...दाहिणो हाथ बांई त्रफ
२३.	थेई	तकुकुकु	लघु ताल मात्रा । २३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ।— अशब्द...विक्षेपक...दाहिणो हाथ दाहिणी त्रफ
२४.	थेई	किणदिधि	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ⊤ अशब्द...निष्क्रामक...दाहिणो हाथ उपरनें
२५.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । २५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ⊥ अशब्द...प्रवेशक...दाहिणो हाथ नीचानें

रूपक ताल (सूडादिक ३), दोय तालो २.

अथ सूडादिकनको तीसरो भेद । रूपक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको रूपक ताल नाम किनों ॥ अथ रूपक तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामे एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो रूपक ताल जानिये ॥ यह ताल दोय तालो है ॥ अथ रूपक तालको सरूप लिख्यते ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहीको लोकिकमें परमलु कहते है धिधि ० तकथों । इति रूपक ताल संपूर्णम् ॥

रूपक ताल, दोयतालो २.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

झंपक ताल (सूडादिक ४), तितालो ३.

अथ सूडादिकनको चोथो भेद । झंपक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको झंपक ताल नाम किनो ॥ अथ झंपक तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥

एक द्रविराम होय । द्रविरामकी पोंण मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो झंपक ताल जानिये । यह ताल तितालो है ॥ अथ झंपक तालको स्वरूप लिख्यते ० ७ । अथ पाठाक्षर लिख्यते । याहिको लोकिकमें परमलु कहते हे धिधि० धलां ७ तकथों । इति झंपक ताल संपूर्णम् ॥

झंपक ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	तत	धलां	द्रवि०ताल मात्रा ७ २ ≡	द्रविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
३.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

त्रिपुटताल (सूडादिक ५), तितालो ३.

अथ सुडादिकनको पांचवो भेद । त्रिपुट तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रविराम पोंण मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको त्रिपुट ताल नाम किनों ॥ अथ त्रिपुट तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रविराम होय । द्रविरामकी पोंण मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो त्रिपुट ताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ७ ० ० अथ पाठाक्षर लिख्यते । याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तकुकु ७ धिमि० थो० इति त्रिपुट ताल संपूर्णम् ॥

त्रिपुट ताल, तितालो ३.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तत	तकुकु	दवि. ताल मात्रा ὸ १ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
२.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	थो	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

आठताली ताल (सूडादिक ६), चोतालो ४.

अथ सूडादिकनको छटो भेद । आठताली तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेको । लघु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको आठताली ताल नाम किनों ॥ अथ आठताली तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो आठताली ताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते । ० ० । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । धिमि० धिमि० तकथों । इति आठताली ताल संपूर्णम् ॥

आठताली ताल. चौतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
२.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

एकताली ताल (मूडादिक ७), एकतालो.

अथ मूडादिकनको सातवो भेद। एकताली तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें। गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको एकताली नाम किनों॥ अथ एकताली तालको स्वरूप लिख्यते। अथ पाठाक्षर लिख्यते। याहिको लौकिकमें परमलु कहते है गनथों। इति एकताली ताल संपूर्णम्॥

एकतालो ताल. एकतालो १.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

मादिरिप्फ ताल, चोवीस तालो २४.

अथ मगणआदि आठगण पिंगलशास्त्रमें प्रसिद्ध है। तिनके नाम लिख्यते॥ तहां प्रथम मगणतो ऽ ऽ ऽ तीन गुरुको जानिये। गुरुकी दोय मात्रा। १। दुसरो गण नगण हो।।। सो तीन लघुको जानिये। लघुकी एक मात्रा। २। और तीसरो भगन है ऽ।। सो एक गुरु दोय लघुको जानिये। गुरुकी दोय मात्रा। लघुकी एक मात्रा। ३। चोथो यगण है।ऽऽ सो एक लघु दोय गुरुको जानिये। लघुकी एक मात्रा। गुरुकी दोय मात्रा। ४। पांचवो सगण है।।ऽ सो दोय लघु एक गुरुको जानिये। लघुकी एक मात्रा। गुरुकी दोय मात्रा। ५। छटो रगण है ऽ।ऽ सो एक गुरुको एक लघुको फेर एक गुरुको जानिये। गुरुकी दोय मात्रा। लघुकी एक मात्रा। ६। सातवो जगण है।ऽ। सो एक लघुको एक गुरुको फेर एक लघुको है। लघुकी एक मात्रा। गुरुकी दोय मात्रा। ७। आठवो तगण है ऽऽ। सो दोय गुरु एक लघुको जानिये। गुरुकी दोय मात्रा। लघुकी एक मात्रा। ८। इन आठ गणनको रिप्फ ताल होत हैं॥ जाहां रिप्फतालकी आदिमें मगण होय। सो मादिरिप्फ जानिये॥ और जाहां नगण आदिमें होय। सो नादि-रिप्फ जानिये॥ और जाहां भगण पहलो होय। सो भादिरिप्फ जानिये॥ ओर जाहां यगण प्रथम होय। सो यादिरिप्फ जानिये॥ ओर जाहां सगण आदिमें होय। सो सादिरिप्फ जानिये॥ ओर जाहां रगण आदिमें होय। सो रादिरिप्फ जानिये॥ आर जाहां जगण आदिमें होय। सो जादिरिप्फ जानिये॥ ओर जाहां तगण आदिमें होय। सो तादिरिप्फ जानिये॥ ऐसे रीतसों आठन गणके। आठ रिप्फताल कहे है॥ तहां प्रथम मादिरिप्फ ताल। ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्ग-तालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। चंचरपुटादिक पांचो तालनमेंसों। गुरु दोय मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको रिप्फताल नाम किनों॥ अथ मादिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते॥ जामें तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ और तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ और दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ फेर दोय लघु होय।

लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो मादिरिप्फ ताल जानिये ॥ यह ताल चोईस तालो है॥ अथ मादिरिप्फ तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ ऽ। । । ऽ। । । ऽ ऽ। । ऽ ऽ। ऽ। ऽ। ऽ ऽ। अथ पाठाक्षर लिख्यंते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ठिंकिण ठिंकिण ऽ धिधितां धिधितां ऽ थांकिट थांकिट ऽ थरिथरि। ताहं। थोंगा। तकतां तकतां ऽ ताथै। ततथै। ताहं। धिमितत धिमितत ऽ गिडिदां गिडिदां ऽ थरिकिट। थरिकिट। तांकिट धांकिट ऽ थरिथां दिगिदिगि ऽ तकुकुकु। दिगिदां दिगिदां ऽ किटाकिट। धिधिकिट धीकिट ऽ धिकधिक। झिनकिट झिनांग ऽ धिधितां धिधितां ऽ गनथों। इति मादिरिप्फ ताल संपूर्णम् ॥

मादिरिप्फ ताल, चोवीसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	ठिंकिण ठिंकिण	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२.	थेई तितत	धिधितां धिधितां	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३.	थेई तितत	थांकिट थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

मादिरिफ्फ ताल, चोवीसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई	थरिथारि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई तितत	तकतां तकतां	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
८.	थेई	ताथै	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई	ततथै	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१०.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
११.	थेई तितत	धिमितत धिमितत	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

मार्दिरिप्फ ताल, चोवीसतालो २४

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१२.	थेई तिततत	गिडिदां गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१३.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेई तिततत	तांकिट धांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१६.	थेई तिततत	थरिथां दिगिदिगि	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१७.	थेई	तकुकुकु	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेई तिततत	दिगिदां दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ὁ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१९.	थेई	किटकिट	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

मादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२०.	थेई तिततत	धिधिकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२१.	थेई	धिकधिक	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई तिततत	झिनकिट झिनांग	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२३.	थेई तिततत	धिधितां धिधितां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२४.	थेई	गनथों	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

नादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २५.

अथ दूसरो। नादिरिप्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। लघु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको नादिरिप्फ ताल नाम किनों॥ अथ नादिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामे तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ ओर च्यार गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय। लघुकी एक

मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ आर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो नादिरिप्फ ताल जानिये ॥ यह ताल चौईस वालोहै ॥ अथ नादिरिप्फ तालको स्वरूप लिख्यते । । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ताहं । धिमिधिमि । थरिथां । धुमिकिट धुमिकिट ऽ वकथां थरिथां ऽ तागिडि धीगिडि ऽ तांधिमि तांतां ऽ कुकुतां । थोंगा । थोंकिट । किणणक तलकिण ऽ तातक धिमितां ऽ वातक । तातक । झंझनक धिमितां ऽ ताकिट ताकिट ऽ ताथै । थांतक ततथै ऽ ताहं । किंटिधिमि थोंगा ऽ कुकुथों । धिधिगिडि दांदां ऽ थैथा थोंथों ऽ तांकुकु । इति नादिरिप्फ ताल संपूर्णम् ॥

नादिरिप्फ ताले, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

नादिरिंष्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमेलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तिततत	धुमिकिट धुमिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
५.	थेई तिततत	तकथां थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	थेई तिततत	तागिडि धींगिडि	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
७.	थेई तिततत	तांधिमि तांतां	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
८.	थेई	कुकुतां	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
९.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
१०.	थेई	थांकिट	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
११.	थेई तिततत	किणणक तळकिण	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

नादिरिफ्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परनलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१२.	थेई तितत	तातक धिमितां	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।ṡ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१३.	थेई	तातक	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई	तातक	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेई तितत	झझनक धिमितां	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ṡ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१६.	थेई तितत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।ṡ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१७.	थेई	ताथै	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेई तितत	थांतक ततथै	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ṡ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१९.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

नादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२०.	थेई तितत	किटिधिमि थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२१.	थेई	कुकुथों	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई तितत	धिधिगिडि दांदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२३.	थेई तितत	थैथा थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२४.	थेई	तांकुकु	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

भादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

अथ तीसरो । भादिरिप्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको भादिरिप्फ ताल नाम कीनों ॥ अथ भादिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और च्यार लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी

दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो भादिरिप्फ ताल जानिये ॥ यह ताल चोईसतालो है ॥ अथ भादिरिप्फ तालको स्वरूप लिख्यते ऽ । । ऽ̆ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है दांधिमि दांधिमि ऽ दांथरि । कुकुथरि । ततथै धिमिधिमि ऽ दिगिदां दिगिदां ऽ धुमिगिडि धुमिगिडि ऽ थरिथां । थरिथां । कुंथरि । कुकुदां । किटिकिटि ताहं ऽ ताहं किटकिटि ऽ थोंकिट । धिधिथां । तंकिगि थरिदिधि ऽ धिकुणाधि कुणधा ऽ तंकण । कुकुणक ठिंठी ऽ धातक । धिमिथों गांधिमि ऽ किरकट । थिमिथिमि थैथा ऽ धिधिधिमि कुदथां ऽ थरिथों । इति भादिरिप्फ ताल संपूर्णम् ॥

भादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	दांधिमि दांधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ઠ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२.	थेई	दांथरि	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

भाद्दिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तिततत	ततथै धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
५.	थेई तिततत	दिगिदां दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	थेई तिततत	धुमिगिडि धुमिगिडि	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
७.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
८.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
९.	थेई	कुंथरि	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
१०.	थेई	कुकुदां	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
११.	थेई तिततत	किटिकिटि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

भाद्रिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१२.	थेईं तिततत	ताहं किटि किटि	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१३.	थेईं	थोंकिट	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेईं	धिधिथों	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेईं तिततत	तंकिगि धरिदिधि	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१६.	थेईं तिततत	धिकुणधि कुणधा	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१७.	थेईं	तंकण	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेईं तिततत	कुकुणक ठिंठी	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१९.	थेईं	धातक	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

भादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२०.	थेई तितत्त	धिमिधों गांधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।ȣ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२१.	थेई	किरकट	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई तितत्त	थिमिथिमि थैथा	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ȣ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२३.	थेई तितत्त	धिमिधिमि कुदथां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ȣ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२४.	थेई	थरिथों	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

यादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

अथ चोथो । यादिरिप्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिबेकों। लघु एक मात्राकों । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको यादिरिप्फ ताल नाम किनों ॥ अथ यादिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । दोय गुरु होय । लघुकी एक मात्रा । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा॥ तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय । दोय लघु होय । गुरुकी दोय मात्रा ।

लघुकी एक मात्रा ॥ और दोय लघु होय । एक गुरु होय । लघुकी एक मात्रा । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक गुरु होय। एक लघु होय । एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा । लघुकी एक मात्रा ॥ एक लघु होय । एक गुरु होय । और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा। गुरुकी दोय मात्रा॥ दोय गुरु होय। एक लघु होय । गुरुकी दोय मात्रा । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो यादिरिप्फ ताल जानिये ॥ यह ताल चौईस तालो है ॥ अथ यादिरिप्फ तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । ऽ । । । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दांकिट । किडिदां दांकिट ऽ धीगिडि गिडिगिडि ऽ धिधितक दांदां ऽ थरिकिट किटदां ऽ धिमिधिमि थैथा ऽ गांधिमि । धिमितां । तातक। धातक धिमिथों ऽ कुकुथरि । कुकुतां । तांतां । कुकुथरि । तांकिट धिमितां ऽ धिकधिक कुदथां ऽ थोंकिट । थरिथां थोंकिट ऽ नगधिम । थोंकिट थरिकिट ऽ दांदां । थरिकिट थरिथां ऽ तत्था थांकिट ऽ तकथों । इति यादिरिप्फ ताल संपूर्णम् ॥

यादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	दांकिट	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत	किडिदां दांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३.	थेई तिततत	धीगिडि गिडिगिडि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

याद्दिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेईं तिततत	धिधितक दांदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
५.	थेईं तिततत	थरिकिट किटदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	थेईं तिततत	धिमिधिमि थैथा	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
७.	थेईं	गांधिमि	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेईं	धिमितां	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेईं	तातक	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१०.	थेईं तिततत	धातक धिमिथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
११.	थेईं	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

यारिरिफ्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चवकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१२.	थेई	कुकुतां	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१३.	थेई	तांतां	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई	कुकुथरि	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेई तिततत	तांकिट धिमितां	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१६.	थेई तिततत	धिकाधिक कुदथां	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१७.	थेई	थोंकिट	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेई तिततत	थरिथां थोंकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१९.	थेई	नगधिम	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

याादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२०.	थेई तितत	थोंकिट थरिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।ὀ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२१.	थेई	दांदां	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई तितत	थरिकिट थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ὀ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२३.	थेई तितत	तत्था थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ὀ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२४.	थेई	तकथां	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

सादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

अथ पांचवो । सादिरिप्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको सादिरिप्फ ताल नाम किनों ॥ अथ सादिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ च्यार गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और तीन

गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो सादिरिष्फ जाँनिये ॥ यह ताल चौईस तालो है ॥ अथ सादिरिष्फ तालको स्वरूप लिख्यते ।।ऽ ऽ ऽ ऽ ।।। ऽ।। ।ऽऽ ऽ। ऽ ।ऽ। ऽऽ। अथ पाठाक्षर लिख्यंते ॥ याहिको लौकिकमे परमलु कहते है जगजग । किणकिण । दिगिदिगि ताहं ऽ थरिथां थोंगा ऽ थांथरि तांतां ऽ किटदां किटदां ऽ धिमिधिमि । तातक । ततकिट । किटकिट थोंगा ऽ थोंगा । तकिककि । थरिथां । थरिथरि थैथै ऽ कुकुथरि तकुकुकु ऽ दांथरि दिगिदिगि ऽ धिधिकिधि । ताहं ताहं ऽ धिमिथां । दिगिदिगि थत्था ऽ दांदां । कुकुदां कुकुदां ऽ किणनक कुकुदां ऽ ताथों । इति सादिरिष्फ ताल संपूर्णम् ॥

सादिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	जगजग	लघु ताल मात्रा । १ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	किणकिण	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तितत	दिगिदिगि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ঌ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

सादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तितवत	थरिथां थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
५.	थेई तिततत	थांथरि तांतां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
६.	थेई तिततत	किटदां किटदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
७.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई	तातक	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई	तताकिट	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१०.	थेई तिततत	किटाकिट थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
११.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

सादिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१२.	थेई	तकिककि	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१३.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई तितत	थरिथरि थैथै	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१५.	थेई तितत	कुकुथरि तकुकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१६.	थेई तितत	दांथरि दिगिदिगि	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१७.	थेई	धिधिकिधि	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेई तितत	ताहं ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१९.	थेई	धिमिथां	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

सादिरिप्फ ताल, चौईसतालो २४.

ताल	धन हार.	परनलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२०.	थेई तिततत	दिगिदिगि थत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२१.	थेई	दांदां	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई तिततत	कुकुदां कुकुदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२३.	थेई तिततत	किणनक कुकुदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२४.	थेई	तार्थों	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

रादिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

अथ छटो। रादिरिप्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों। गुरु दोय मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको रादिरिप्फ ताल नाम किनों ॥ अथ रादिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर चार गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ और तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥

और तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो रादिरिप्फ ताल जानिये ॥ अथ रादिरिप्फ तालको स्वरूप लिख्यते ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । । । ऽ । । । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दांकिट दांकिट ऽ किडिदां । धिमिधिमि थरिथां ऽ धीकिट धिधिकिट ऽ गिडिदां गिडिदां ऽ दांदां थरिकिट ऽ ताहं । ताहं । थरितत । ततथरि ताहं ऽ धिमिधिमि । दिदिगन । तकथों । धीकिडि धींगिडि ऽ गिडिगिडि तकदिगि ऽ धीतां । धीतां । दिगिदां तांतक ऽ तककिण। धिधितक थाकिण ऽ तककिण । दांदां थरिथां ऽ धिकिटिधि किटदां ऽ तकथों । इति रादिरिप्फ ताल संपूर्णम् ॥

रादिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	दांकिट दांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२.	थेई	किडिदां	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत	धिमिधिमि थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
४.	थेई तिततत	धींकिट धिधिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो

रादिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परन्लु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई तितत	गिडिदां गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	थेई तितत	दांदां थरिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
७.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई	थरितत	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१०.	थेई तितत	ततथरि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
११.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	थेई	दिदिगन	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

राद्विरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	घचकार.	परनलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	* समस्या.
१३.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई तितत	धीकिडि धीगिडि	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१५.	थेई तितत	गिडिगिडि तकदिगि	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१६.	थेई	धीतां	लघु ताल मात्रा । १६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१७.	थेई	धीतां	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेई तितत	दिगिदां तांतक	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१९.	थेई	तककिण	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२०.	थेई तितत	धिधितक थाकिण	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

राद्दिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२१.	थेई	तककिण	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई तिततत	दांदां थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२३.	थेई तिततत	धिकिटिधि किटदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

जाद्दिरिप्फ ताल चौईस तालो २४.

अथ सातवो । जाद्दिरिप्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको जाद्दिरिप्फ ताल नाम किनों ॥ अथ जाद्दिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एकमात्रा ॥ और दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय ।

लघुकी एक मात्रा ॥ और तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो जादिरिप्फ ताल जानिये ॥ अथ जादिरिप्फ तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ । ऽ ऽ ऽ । । । ऽ । । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । ततधिमे ताहं ऽ धिमिधिमि । तांकिट तांकिट ऽ तत्था थांकिट ऽ गिडिगिडि थांकिट ऽ ततकिट । तांकिट । थरिकिट । धिधिकिट धीकिट ऽ थरिथरि । कुकुदां । ततदां । गिडिगिडि ततदां ऽ थैथै गिडिदां ऽ दांकुकु । थरिकुकु । जगजग किणकुकु ऽ दांदां तककुकु ऽ थरिथै । कुकुदां कुकुथै ऽ तकिककि थैथै ऽ थरि थरि थरिथां ऽ तकथों । इति जादिरिप्फ ताल संपूर्णम् ॥

जादिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई तिततत	ततधिमि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ि	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तिततत	तांकिट तांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ि	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
५.	थेई तिततत	तत्था थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ि	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

जादिरिफ्फ ताल, चौईस तालो २४

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
६.	थेई तितत	गिडिगिडि थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।৳	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
७.	थेई	ततकिट	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई	तांकिट	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई	थरिकिट	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१०.	थेई तितत	धिधिकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।৳	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
११.	थेई	थरिथरि	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	थेई	कुकुदां	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१३.	थेई	ततदां	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

जाद्रिरिप्फ ताल. चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१४.	थेई तितत	गिडिगिडि ततदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१५.	थेई तितत	थैथै गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१६.	थेई	दांकुकु	लघु ताल मात्रा । १६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१७.	थेई	थरिकुकु	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेई तितत	जगजग किणकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१९.	थेई तितत	दांदां तककुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १९ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२०.	थेई	थरिथै	लघु ताल मात्रा । २० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२१.	थेई तितत	कुकुदां कुकुथै	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

जादिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	थचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२२.	थेई तितत	तकिकाकि थैथै	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२३.	थेई तितत	थरिथरि थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

तादिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

अथ आठवों । तादिरिप्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको तादिरिप्फ ताल नाम किनों ॥ अथ तादिरिप्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामे दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसौं गीतादिकमें सुख उपजावे । सो तादिरिप्फ ताल जानिये ॥ अथ तादिरिप्फ तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । । । ऽ । । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमे परमलु कहते है ततथा ततथां ऽ कुकुदिगि तत्था ऽ धिंधिथरि । कुकुदां कुकुदां ऽ टिटिकिणि किणिकिणि ऽ जगजग तककिण ऽ

दांदां। थरिदां। थाथरि। धिकिटिधि किटदां ऽ थोंगा। किटथों। थरिथरि । ततकिट ताकिट ऽ धिमिधिमि ततकिट ऽ दिगिदिगि। दांथरि। धिमिथरि तकथों ऽ धिधिकधि धिककिण ऽ धिधिकिण। धीकिट गनथों ऽ ताहं। धिमिथां ताहं ऽ किटथों। इति तादिरिष्फ ताल संपूर्णम् ॥

तादिरिष्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	ततथा ततथा	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२.	थेई तिततत	कुकुदिगि तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
३.	थेई	धिमिथरी	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तिततत	कुकुदां कुकुदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
५.	थेई तिततत	टिटिकिणि किणिकिणि	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	थेई तिततत	जगजग तककिण	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
७.	थेई	दांदां	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

तादिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	थचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
८	थेई	थरिदां	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई	थाथरि	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१०.	थेई तिततत	धिकिटिधि किटदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
११.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	थेई	किटथों	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१३.	थेई	थरिथरि	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई तिततत	तताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१५.	थेई तिततत	धिमिधिमि तताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

तादिरिप्फ ताल, चौइसैं तालों २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१६.	थेई	दिगिदिगि	लघु ताल मात्रा । १६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१७.	थेई	द्दांथरि	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१८.	थेई तितत	धिमिथरि तकथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१९.	थेई तितत	धिधिकधि धिकक्रिण	गुरु ताल मात्रा ऽ १९ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२०.	थेई	धिधिक्रिण	लघु ताल मात्रा । २० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२१.	थेई तितत	धीकिट गनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२३.	थेई तितत	धिमिथां ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

ताद्दिरिप्फ ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२४.	थेई	किटथों	लघु ताल मात्रा । २४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापें मान

दंती ताल, सतरा तालो १७.

अथ दंती तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको दंती ताल नाम किनों ॥ अथ दंतीतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ ओर तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ तीन जामें प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो दंती ताल जानिये ॥ यह ताल सत्रातालो हे ॥ अथ दंती तालको स्वरूप लिख्यते ।।। ० ० ० ऽ ऽ ऽ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ । ० ऽ ऽ̀ । अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । थोंगा । तकथों । तग ० जग ० किण ० ताथै ततथै ऽ धिकिटिधि धिगधिग ऽ धिकिटधि किटदिगि ऽ दिधितां दिधितां धिमिधिमि ऽ̀ धिगिडिधि गिडिदां धिधिगन ऽ̀ तहकुट तहकुट ततगन ऽ̀ थरिथों । तक० दिगिदां दिगिदां ऽ धिमिथिरि कुजकिण किणथों ऽ̀ तकथों । इति दंती ताल संपूर्णम् ॥

दंती ताल, सतरा तालो १७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	ते	किण	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	थेई तिततत	ताथै ततथै	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
८.	थेई तिततत	धिकिटिधि धिगधिग	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

दंती ताल, सतरा तालो १७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	थेई तितत	धिकिटधि किटदिगि	गुरु ताल मात्रा ऽ ९ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१०.	थेई तितत थेई थेई	दिधितां दिधितां धिमिधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १० ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
११.	थेई तितत थेई थेई	धिगिडिधि गि डिदां धिधिगन	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ११ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
१२.	थेई तितत थेई थेई	तहकुट तहकुट ततगन	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
१३.	थेई	थरिथों	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० १४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१५.	थेई तितत	दिगिदां दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१६.	थेई तितत थेई थेई	धिमिथिरि कुज किण किणथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १६ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो

दंती ताल, सतरा तालो १७.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१७	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक

महाव्याघ्र ताल, नोतालो ९.

अथ महाव्याघ्र तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। प्लुत तीन मात्राको। गुरु दोय मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको महाव्याघ्र ताल नाम किनों॥ अथ महाव्याघ्र तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फेर दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो महाव्याघ्र ताल जानिये ॥ यह ताल नोतालो है। अथ महाव्याघ्रको स्वरूप लिख्यते ऽ̀ ऽ̀ ऽ ऽ । । ऽ ऽ̀। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमे परमलु कहते है जगजग तगनग थाथा ऽ̀ थांकिट थडिथां ऽ̀ थरिथां कुकुथां ऽ धिमिधिमि तथै ऽ ताहं। ताहं। ततधिमि ताहं ऽ ताधिक तगिगिड दिगदां ऽ̀ गणथों। इति महाव्याघ्र ताल संपूर्णम् ॥

महाव्याघ्र ताल, नोतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत थेई थेई	जगजग तगनग थाथा	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̀ १ ॥३)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो

महाव्याघ्र ताल, नोतालो ९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई तिततत थेई थेई	थांकिट थांथां थडिथां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̆ २ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३.	थेई तिततत	थरिथां कुकुथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
४.	थेई तिततत	धिमिधिमि तत्थै	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई तिततत	ततधिमि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
८.	थेई तिततत थेई थेई	ताधिक तगि- गिड दिगदां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̆ ८ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
९.	थेई	गणथों	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

सूर्य ताल (नवग्रह १), सोला तालो १६.

अथ श्री मूरजीकों आदि लेकें नोग्रह हे। तीनके नाम लिख्यते ॥ तहां प्रथम सूर्य ताल । १ । दूसरो चंद्र ताल । २ । तीसरो मंगल ताल । ३ । चोथो बुद्ध ताल । ४ । पांचवो बृस्पति ताल । ५ । छटो शुक्र ताल । ६ । सातवों शनिसर ताल । ७ । आठवो राहु ताल । ८ । नवमो केतु ताल । ९ । तहां प्रथम सूरज ताल । ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों। चंचत्पुटादिक पांच तालनमें सो । अणु चोथाई मात्राको । द्रुत आधी-मात्राको । दविराम पोंणमात्राको। लघु एक मात्राको। लविराम डेडमात्राको ।गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीनमात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको सूर्यताल नामकिनों॥ अथ सूर्य तालको लक्षण लिख्यते॥ जामें दोय अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ फेर एक अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर एक अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ और एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो सूर्यताल जानिये ॥ सूर्यताल दीतवारके दीन मुखसुं गावनों ॥ और सूर्यदेव पूजनीक होय । तब गावे अथवा सुने तो सूर्य प्रसन्न होय ॥ यह मंगलीक है ॥ याको सदा गावनों ॥ अथ सूर्य तालको स्वरूप लिख्यते ∪ ∪ ० ∪ ७ ∪ । ∪ । ∪ ऽ ∪ ऽ । ऽ ऽ यह ताल सोला तालो हे ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है त ∪ त ∪ थै ० त ∪ तथै ७ कि ∪ किगथों । द्रु ∪ द्रुगिडि गिडि । धि ∪ धिमिधिमि तताधिमि ऽ कु ∪ किरट किरट गिडिथों ऽ तकथों । तकधिमि तकथों ऽ तकिदिगि दिधिगन थों ऽ इति संपूर्णम् ॥

सूर्य ताल, सोला ताली १६.

ताल.	थथकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ति	त	अणु. ताल मात्रा ◡ १ —	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
२.	ति	त	अणु. ताल मात्रा ◡ २ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
३.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधी
४.	वि	त	अणु. ताल मात्रा ◡ ४ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
५.	तत	तथै	द्वि. ताल मात्रा ꝺ ५ ≡	द्वि० सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पौण
६.	ति	कि	द्रुत ताल मात्रा ◡ ६ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
७.	थेई	किणथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	ति	द्रु	अणु. ताल मात्रा ◡ ८ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई

सूर्य ताल, सोला तालो १६.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	तथेई	द्रुगिडि गिडि	लवि. ताल मात्रा ৗ ९ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
१०.	ति	ध	अणु. ताल मात्रा ᵕ १० —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
११.	थेई तिततत	धिमिधिमि ततधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।ҍ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१२.	ति	कु	अणु. ताल मात्रा ᵕ १२ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
१३.	थेई तिततत थेई थेई	किरंट किरंट गिडिथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ१३ ।।ҍ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेई तिततत	तकधिमि तकथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ҍ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१६.	थेई तिततत थेई थेई	तकिदिगि दिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १६ ।।ҍ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापें मान

चंद्रताल (नवग्रह २), बारा तालो १२.

अथ नवग्रह तालमें दूसरो । चंद्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । दविराम पौंण मात्राको । लघु एक मात्राको लविराम डेड मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको चंद्रताल नाम किनों ॥ चंद्रतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी पाव मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और एक दविराम होय। दविरामकी पौंण मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो चंद्र ताल जानिये ॥ यह ताल बारा तालो है । या चंद्रतालको सोमवारके दिन मुखसो गावनो । ओर चंद्रमा पुजनीक होय तब गावे । अथवा सुनें अथवा गवावे तो चंद्रमा प्रसन्न होय ॥ अथ चंद्र तालको स्वरूप लिख्यते ० ◡ ० ० ० । ० ˥ ० ऽ ० ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हैं जक० त ◡ तत० कुकिण ० लक० तकथों । धिधि० किट धिधिकिट ˥ तां० दिमिदिमि दिगिदां ऽ कुकु० धांकिट धिधिकिट गनथों ऽ इति चंद्रताल संपूर्णम् ॥

चंद्र ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
1.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

चंद्र ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समल्या.
२.	ते	त	अणु. ताल मात्रा ᵕ २ —	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
३.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	तत	कुकिण	दवि०ताल मात्रा ꜩ ४ ≡	दवि० सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
५.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	ते	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
८.	तथेई	किट धिधिकिट	लवि०ताल मात्रा ꜥ ८ ।=	लवि० सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
९.	ते	तां	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

चंद्र ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१०.	थेई तिततत	दिमिदिमि दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
११.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१२.	थेई तिततत थेई थेई	धांकिट धिधि-किट गनथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालोपें मान

मंगल ताल (नवग्रह ३), बारा तालो १२.

अथ नवग्रहमें तीसरो। मंगल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें। गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों। दविराम पोंण मात्राको। अणु चौथाई मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। लघु एक मात्राको। लविराम डेड मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेकें। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको मंगल ताल नाम किनों॥ अथ मंगल तालको लक्षण लिख्यते॥ जामें एक दविराम होय। दविरामकी पोंण मात्रा॥ ओर एक अणु होय। अणुकी चौथाई मात्रा॥ एक दविराम होय। दविरामकी पोण मात्रा॥ एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ और एक दविराम होय। दाविरामकी पोण मात्रा॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ एक दविराम होय। दाविरामकी पोण मात्रा॥ एक लविराम होय। लविरामकी डेड मात्रा॥ एक दविराम होय। दविरामकी पोण मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ एक दविराम होय। दविरामकी पोंण मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजाव॥ सो मंगल ताल जानिये॥ मंगलवारके दिन गाव। ओर मंगल पूजनीक हो तब गावे सुनतो मंगल प्रसन्न होय। यह ताल मंगलीक है। याको सदा

गावना ॥ यह ताल बारा तालों है ॥ अथ मंगल तालको स्वरूप लिख्यतें ठ ◡ ठ ० ठ । ठ । ठ ऽ ठ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धलां ठ त ◡ कुकिण ठ जग ० तथै ठ तकथों । ततां ठ धिधिकिट कुकु । धिनिक ठ थरिथां थरिथां ऽ धलां ठ तागिगिडि दिदिगिडि थों ऽ इति मंगलताल संपूर्णम् ॥

मंगल ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तत	धलां	दवि. ताल मात्रा ठ १ ≡	प्रथम दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
२.	त	त	अणु. ताल मात्रा ◡ २ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
३.	तत	कुकिण	दवि. ताल मात्रा ठ ३ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
४.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	तत	तथै	दवि. ताल मात्रा ठ ५ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
६.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

मंगल ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
७.	तत	ततां	दृवि. ताल मात्रा ऽ ७ ≡	दृविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण
८.	तथेई	धिधिकिट कुकु	त्रवि. ताल मात्रा ऽ। ८ ।=	त्रविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा डेड
९.	तत	धिनिक	दृवि. ताल मात्रा ऽ ९ ≡	दृविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण
१०.	थेई विततत	थरिथां थरिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
११.	तत	घतां	दृवि. ताल मात्रा ऽ ११ ≡	दृविरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा पोंण
१२.	थेई तिततत थेई थेई	तगिगिडि दिदिगिडि थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालोंपें मान

बुध ताल (नवग्रह ४), बारा तालो १२.

अथ नवग्रहमें चोथो। बुधतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। लघु एक मात्राको। अणु चोथाई मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। दृविराम पोंण मात्राको। त्रविराम डेड मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको बुधताल नाम किनों ॥ अथ बुधतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक

लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक अणु होय। अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्विराम होय। द्विरामकी पौंण मात्रा ॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय। लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें। सो बुधताल जानिये ॥ या बुधतालको बुधवारके दिन गावे सुने गवावे। ओर बुध पुजनीक होय। तब गावे सुने बुध प्रसन्न होय। यह ताल मंगलीक हे॥ अथ बुध तालको स्वरूप लिख्यते। ˘ । ० । ०̸ । ᑊ । ऽ । ᑌ यह ताल बारा ताळो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है थाथरि। कि ˘ थाथै। कुकु ० धिमिथैं। कुकिण ०̸ धिमिधिमि। धीधींधिमि ᑊ ताहं। तांतां किटकिट ऽ धिधिकिट। ततकिट धुमिकिट गणथों ᑌ इति बुधताल संपूर्णम् ॥

बुध ताल, बारा ताळो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	थाथरि	लघु ताल मात्रा । १ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ळीक हे सो मात्रा एक
२.	ति	कि	अणु ताल मात्रा ˘ २ –	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ळीक हे सो मात्रा चौथाई
३.	थेई	थाथै	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ळीक हे सो मात्रा एक
४.	ते	कुकु	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ळीक हे सो मात्रा आधि

बुध ताल. बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई	धिमिथों	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	तत	कुक्रिण	दवि. ताल मात्रा ो ६ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
७.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	तथेई	धीधीधिमि	लवि. ताल मात्रा ो ८ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
९.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१०.	थेई तितत	तांतां किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
११.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	थेई तिततत थेई थेई	ततकिट धुमि-किट गणथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ।।।)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापें मान

बृहस्पति ताल (नवग्रह ५), बारा तालो १२.

अथ नवग्रहमें पांचवो । बृहस्पति तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । लविराम डेड मात्राको । अणु चौथाई मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । दविराम पोंण मात्राको । लघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको बृहस्पति ताल नाम किनों ॥ अथ बृहस्पति तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविराबकी डेड मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो बृहस्पति ताल जानिये ॥ या बृहस्पति तालको बृहस्पतिवारके दिन गावनों । ओर बृहस्पति पुजनी होवे तब गावे अथवा सुने तो बृहस्पतिजी प्रसन्न होय । यह ताल मंगलीक है । याको सदा गावनों ॥ अथ बृहस्पति तालको स्वरूप लिख्यते ो ५ ो ० ो ꣳ ो । ो ऽ ो ꣳ यह ताल बारा तालो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धींधींकिट ो कु ५ धिधिकिट तक ो जग ० धिधितां धिमि ो तधां ꣳ किटिकिटि थां ो थरिथां । धिमिधिमि तत ो दिगिदां दिगिदां ऽ गिडि-मिडि दां ो धुमिकिट धुमिधुमि दिधिथों ꣳ इति बृहस्पति ताल संपूर्णम् ॥

बृहस्पति ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तथेई	धींधींकिट	लवि. ताल मात्रा ो १ ।=	प्रथम लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड

बृहस्पति ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	ति	कु	अ.द्रु. ताल मात्रा ˘ २ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
३.	तथेई	धिधिकिट तक	लवि. ताल मात्रा). ३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
४.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	तथेई	धिधितां धिमि	लवि. ताल मात्रा). ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
६.	तत	तथां	दवि. ताल मात्रा ०) ६ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
७.	तथेई	किटिकिटि थां	लवि. ताल मात्रा). ७ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
८.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	तथेई	धिमिधिमि तत	लवि. ताल मात्रा). ९ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड

बृहस्पति ताल, बारा तालो १२.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१०.	थेई तितत	दिगिदां दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ь	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
११.	तथेई	गिडिगिडि दां	लवि. ताल मात्रा ↄ ११ । =	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
१२.	थेई तितत थेई थेई	धुमिकिट धुमि- धुमि दिधिथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ।।ь)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापें मान

शुक्र ताल (नवग्रह ६), बारा तालो १२.

अथ नवग्रहमें छटो । शुक्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकै। गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । अणु चौथाई मात्राको । द्रुत आधि मात्राको। दविराम पोंण मात्राको । लघु एक मात्राको । लवि-राम डेड मात्राको । प्लुत तीम मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको शुक्रताल नाम किनों ॥ अथ शुक्रतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय। मुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरु-की दोय मात्रा ॥ ओर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक दविराम होय । दवि-रामकी पोंण मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय। लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकनें सुख उपजावें । सो शुक्रताल जानिये । जो गावे अथवा सुने तो शुक्र प्रसन्न होय ॥ यह

ताल मंगलीक है। याको सदा गावनो ॥ अथ शुक्रतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ⌣ ऽ ० ऽ ὸ ऽ । ऽ ꒱ ऽ ꒰ यह ताल बारा तालो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थांथरि धिमिधिमि ऽ धि ⌣ ताक्टि ताक्टि ऽ जक० ताहं ताहं ऽ थरिक ὸ तकटिं तकटिं ऽ थोंगा । धिकिथों थोंगा ऽ ता थोंगा ꒱ धिधिनक धिंनक ऽ तकुनकु धिधिगव थों ꒰ इति शुक्रताल संपूर्णम् ॥

शुक्र ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	थांथरि धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ὸ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२.	ति	धि	अणु ताल मात्रा ⌣ २ —	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
३.	थेई तिततत	ताक्टि ताक्टि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
४.	ते	जक	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई तिततत	ताहं ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	तत	थरिक	द्वि. ताल मात्रा ὸ ६ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण

शुक्र ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
७.	थेई तिततत	तकटिं तकटिं	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
८.	थेई	थोंग।	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई तिततत	धिकिथों थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ ९ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१०.	तथेई	ता थोंगा	लवि.ताल मात्रा ὶ १० ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
११.	थेई तिततत	धिधिनक धिंनक	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।ὸ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१२.	थेई तिततत थेई थेई	तकुनकु धिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ।।ὸ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालापें मान

शनिश्वर ताल (नवग्रह ७), बारा तालो १२.

अथ नवग्रहमें सातवो। शनिश्वर तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। प्लुत तीन मात्राको। अणु चौथाई मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। दविराम पोंण मात्राको। लघ एक

मात्राको । लविराम डेड मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको शनिश्चर ताल नाम किनों ॥ अथ शनिश्चर तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो शनिश्चर ताल जानिये ॥ या तालको शनिश्चरके दिन गावे । ओर शनिश्चर पूजनीक होय । तब गावनों गवावनों । अथवा सुने तो शनिश्चरजी प्रसन्न होय । यह ताल मंगलीक है याको चाहो तब सदा गावनों ॥ अथ शनिश्चर तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ᵕ ऽ ० ऽ ७ ऽ । ऽ ꠸ ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है। थांकिट दांथडि थाथां ऽ त ᵕ कुकुदां थाथरि थोंगा ऽ तक ० दांगिडि दांदां गिडिदां ऽ धलां ७ धिन्ना धिन्ना दिधितां ऽ तकथों । ततकुकु ततकुकु तकथों ऽ थोंगा थों ꠸ धिमिकिट ततकिट किटकिट ऽ तकदिधि गनथो ऽ इति शनिश्चर ताल संपूर्णम् ॥

शनिश्चर ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत थेई थेई	थांकिट दांथडि थाथां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३ ॥।७)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
२.	ति	त	अणु ताल मात्रा ᵕ २ —	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई

शनिश्चर ताल, बारा ताली १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३.	थेई तिततत थेई थेई	कुकुदां थाथरि थोंगा	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
४.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	थेई तिततत थेई थेई	दांगिडि दांदां गिडिदां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
६.	तत	धलां	द्रवि. ताल मात्रा ०ं ६ ≡	द्रविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पांण
७.	थेई तिततत थेई थेई	धिन्ना धिन्ना दिधितां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ७ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
८.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई तिततत थेई थेई	ततकुकु तत-कुकु तकथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ९ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१०.	तथेई	थोंगा थों	लवि.ताल मात्रा ।ं १० ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेढ

शनिश्चर ताल, बारा तालो १२.

ताल.	नचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
११.	थेई तिततत थेई	धिमिकिट तत-किट किटकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ११ ।।०)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परीकमा विंदी हाथको झालो
१२.	थेई तिततत	तकदिधि गनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो झालोंपे मान

राहू ताल (नवग्रह ८), बारा तालो १२.

अथ नवग्रहमें । आठवो राहू तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । प्लुत तीन मात्राको । अणु चौथाई मात्राको । गुरु दोय मात्राको । लविराम डेड मात्राको । लघु एक मात्राको । दविराम पोंण मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके ॥ देशी ताल उत्पन्न करी ॥ वांको राहूताल नाम किनों ॥ अथ राहु तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक अणु होय। अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा॥ फेर एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक दविरांम होय । दविरामकी पांण मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आंधि मात्रा ॥ आर एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो राहु ताल जानिये ॥ याका बुधवार अथवा शनिश्चर वारको गावनो ॥ अथवा राहूपूजनीक होय तब गाव ॥ अथवा सुनेतो राहु प्रसन्न होय । अथ याको स्वरूप लिख्यते ऽ ᵕ ऽ ᵕ ો ᵕ । ᵕ ҍ ᵕ ० ᵕ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है।

तत्था थोंकिट दिगिदां ऽ त ᵕ ततधिमि दांदां ऽ कु ᵕ तकुकुत कुकु) कु ᵕ थरिथां । त ᵕ किणाकि ऽ दि ᵕ जक ० थ ᵕ इति राहूताल संपूर्णम् ॥

राहू ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत थेई थेई	तत्था थोंकिट दिगिदां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥ऽ)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२.	वि	त	अणु ताल मात्रा ᵕ २ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
३.	थेई तिततत	ततधिमि दांदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
४.	ति	कु	अणु ताल मात्रा ᵕ ४ —	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
५.	तथेई	तकुकुत कुकु	लवि०ताल मात्रा) ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
६.	ति	कु	अणु ताल मात्रा ᵕ ६ —	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
७.	थेई	थरिथां	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

राहू ताल, वारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
८.	ति	त	अणु ताल मात्रा ॅ ८ –	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
९.	तत	किणकि	दवि॰ताल मात्रा ॆ ९ ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
१०.	वि	दि	अणु ताल मात्रा ॅ १० –	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
११.	वे	जक	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१२.	ति	थ	अणु ताल मात्रा ॅ १२ –	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई

केतु ताल (नवग्रह ९), ग्यारह तालो ११.

अथ नवग्रहमें । नवमों केतुतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । प्लुत तीन मात्राको। द्रुत आधी मात्राको। गुरु दोय मात्राको । लविराम डेड मात्राको । लघु एक मात्राको । दविराम पोंण मात्राको। अणु चौथाई मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि। वांको केतु ताल नाम किनों ॥ अथ केतु तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामे एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी

होय मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ ओर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ फेर एक दविराम होय । दविरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ ओर एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो केतु ताल जानिये ॥ या केतु तालको बुद्धवारके दिन गावनो । ओर केतु पुजनीक होय तब गावनों ॥ अथवा सुने तो केतु प्रसन्न होय ॥ केतु तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ० ऽ ०) ० । ० ꣴ ० ‿ यह ताल ग्यारह तालो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहीको लोकिकमें परमलु कहते है ॥ तांतां धिमिधिमि तकतों ऽ थरि ० कुकुदां थरिदां ऽ किण ० दांकिकि दां) थत ० ताथै । थै ० तधिधि ꣴ थरि ० क ‿ इति केतुताल संपूर्णम् ॥

केतु ताल, ग्यारह तालो ११.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत थेई थेई	तांतां धिमि-धिमि तकतों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥ꣴ)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	थेई तिततत	कुकुदां थरिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ꣴ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
४.	ते	किण	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

केतु ताल, ग्यारह तालो ११.

ताल.	चचत्कार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	तथेई	दांकिकि दां	लवि०ताल मात्रा ꒰ ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
६.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
७.	थेई	ताथै	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
९.	तत	तधिधि	द्रवि० ताल मात्रा ꣳ ९ ≡	द्रविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
१०.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
११.	ति	क	अणु ताल मात्रा ◡ ११ –	अणुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई

विजय ताल, दृशतालो १०.

अथ विजय तालकी उत्पत्ति लिख्यंते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकै गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों

चंचत्पुटादिक पांचोतालनेंमेंसों । गुरु दोय मात्राको । लघु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको विजय ताल नामकीनों ॥ अथ विजय तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ पांच प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो विजय ताल जांनिये ॥ अथ विजय तालको स्वरूप लिख्यते ऽ । ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ० ० ० यह ताल दश तालो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते हैं । ताकिट धीकिट ऽ ताक्ताक् । धिधिगिन दिगिदां दांथरि ऽ̀ थोंथरि थैथरि थैथा ऽ̀ जकुकिण जकिणधि धिमिधिमि ऽ̀ धिकतां धिकतां धिधिकिट ऽ̀ धीकिट धीकिट किट किट ऽ̀ तत० गन० थों० ॥ इति विजय ताल संपूर्णम् ॥

विजय ताल, दश तालो १०.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	ताकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।६	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा दोय बिंदी झालो
२.	थेई	ताक्ताक्	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक
३.	थेई तिततत थेई थेई	धिधिगिन दि-गिदां दांथरि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̀ ३ ।।६)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
४.	थेई तिततत थेई थेई	थोंथरि थैथरि थैथा	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̀ ४ ।।६)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो

विजय ताल, दश तालो १०.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई तिततत थेई थेई	जकुकिण जकि णधि धिमिधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥$\frac{1}{0}$)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
६.	थेई तिततत थेई थेई	धिकतां धिकतां धिधिकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ६ ॥$\frac{1}{0}$)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
७.	थेई तिततत थेई थेई	धीकिट धीकिट किटकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ७ ॥$\frac{1}{0}$)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
८.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
९.	ते	गन	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	तकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१०.	ते	थो	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

कामधेनु ताल, चौतालो ४.

अथ कामधेनु तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिबेकों॥ प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको कामधेनु ताल नाम किनों ॥ अथ कामधेनु तालको लक्षण लिख्यते॥

जामें च्यार प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो कामधेनु ताल जानिये ॥ अथ कामधेनु तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ॥ थाधिमि थरिधिमि थरिथां ऽ दांगिडि गिडिगिडि दिगिदां ऽ धुमिकिट धुमिकिट झमिझमि ऽ तकिदिगि धिधिगन थों ऽ इति कामधेनु ताल संपूर्णम् ॥

कामधेनु ताल, चौतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत थेई थेई	थाधिमि थरिधिमि थरिथां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥०)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२.	थेई तितत थेई थेई	दांगिडि गिडिगिडि दिगिदां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
३.	थेई तितत थेई थेई	धुमिकिट धुमिकिट झमिझमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ३ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
४.	थेई तितत थेई थेई	तकिदिगि धिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ४ ॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो

पुष्पबाण ताल, चोवीस तालो २४.

अथ पुष्पबाण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों ॥ द्रुत आधी मात्राको। लघु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको पुष्पबाण ताल नाम किनों ॥ अथ पुष्पबाण तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें च्यार द्रुत होय। द्रुतकी आधी मात्रा ॥ और च्यार लघु होय।

लघुकी एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दोय प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ और च्यार गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और चार प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो पुष्पबाण ताल जानिये ॥ अथ पुष्पबाणको स्वरूप लिख्यते ० ० ० ० । । । । ऽ ऽ ऽ̆ ऽ̆ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ̆ ऽ̆ ऽ̆ ऽ̆ । । ० ० यह ताल चौवीस तालो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थै० था० तत० थै० ताहं । थोंगा । धिमिधिमि । थोंगा । दिगिदां दिगिदां ऽ तकुगिडि दिगिदां ऽ धींधीं तक्धिमि धिमितक ऽ̆ किटितक किटितक ततकिट ऽ̆ दांधिमि दांधिमि ऽ तकुनक किणितक ऽ धिधिकिट धिधि-किट ऽ तकुदिगि थोंगिणि ऽ थैथा ततथै थैथा ऽ̆ धुमिकिट धुमिकिट थैथा ऽ̆ जगनग थरिथां थरिथां ऽ̆ गिडिगिडि ताकिदिगि थोंगिण ऽ̆ ताहं । ताहं । तदि० थो ० इति पुष्पबाण ताल संपूर्णम् ॥

पुष्पबाण ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर नाऊ मात्रा.	समस्या.
१.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२.	ते	था	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

पुष्पबाण ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	धिमिधिमि	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	थेई	थोंगा	लघ ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई तितत	दिगिदां दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ९ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१०.	थेई तितत	तकुगिडि दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
११.	थेई तितत थेई थेई	धींधीं तक- धिमि धिमितक	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ११ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
१२.	थेई तितत थेई थेई	किटितक कि- टितक ततकिट	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो

पुष्पबाण ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	थचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१३.	थेई तिततत	दांधिमि दांधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १३ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१४.	थेई तिततत	तकुनक किणि तक	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१५.	थेई तिततत	धिधिकिट धिधिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।ऽ	गुरुका सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१६.	थेई तिततत	तकुदिगि थोंगिणि	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१७.	थेई तिततत थेई थेई	थैथा ततथै थैथा	प्लुत ताल मात्रा (ऽ३ १७ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
१८.	थेई तिततत थेई थेई	धुमिकिट धुमि-किट थैथा	प्लुत ताल मात्रा (ऽ३ १८ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
१९	थेई तिततत थेई थेई	जगनग थरि-थां थरिथां	प्लुत ताल मात्रा (ऽ३ १९ ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
२०.	थेई तिततत थेई थेई	गिडिगिडि तकि दिगि थोंगिण	प्लुत ताल मात्रा (ऽ३ २० ।।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो

पुष्पबाण ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२१.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २२ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२३.	ते	वदि	द्रुत ताल मात्रा ० २३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
२४.	ते	थों	द्रुत ताल मात्रा ० २४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

प्रतापशेखर ताल, चौतालो ४.

अथ प्रतापशेखर तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिवेकों । षट् पितापुत्र नामें तालसों । प्लुत द्रुत दविराम लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको प्रतापशेखर नाम किनों ॥ अथ प्रतापशेखर तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ और दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दविराम होय । दविरामकी पौण मात्रा ॥ ऐसे रीतसों जामें च्यार ताल होय । सो प्रतापशेखर ताल जानिये ॥ अथ प्रतापशेखर तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ० ० ऽ थैया थैतत तार्थो ऽ तक० धिमि० तथों ऽ इति प्रतापशेखर ताल संपूर्णम् ॥

प्रतापशेखर ताल, चौतालो ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत्त थेई थेई	थैथा थैतत ताथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥ं)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
२.	ते	तक	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
३.	ते	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
४.	तत	तथों	द्वि. ताल मात्रा ‿ ४ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण

समताल, दश तालो १०.

अथ समतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । प्लुत लघु द्रुत द्विराम लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको समताल नाम किनों ॥ अथ समतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पौंण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो समताल जानिये ॥ यह ताल दश तालो है ॥ अथ समतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ । ० ० । । ० ० ‿ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहीको लोकिकमें परमलु कहते है तकथर तकथरि तांधिमि ऽ तकिटधि किटधिमि तकधिमि ऽ ताहं । तह० तह० ताहं । ताहं । जग० जग० तथै ‿ इति समताल संपूर्णम् ॥

समताल, दृशा तालो १०.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत थेई थेई	तकथर तकथरि तांधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १ ॥ऽ)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी हाथको झालो
२.	थेई तिततत थेई थेई	तकिटधि किट धिमि तकधिमि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २ ॥ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी हाथको झालो
३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	ते	तह	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
५.	ते	तह	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
६.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
८.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

सम ताल, दश ताला १०.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
१०.	तत	तथै	दवि. ताल मात्रा ऽ १० ≡	दविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण

रंगद्योत ताल, पंच तालो ५.

अथ रंगद्योत तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको । उद्धट चंचत्पुटसों गुरु लघु प्लुत लेके । देशी ताल उत्पन्न करि। वांको रंगद्योत नाम किनों ॥ अथ रंगद्योत तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामे तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो रंगद्योत ताल जानिये ॥ अथ रंगद्योत तालको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ ऽ । ऽ̆ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लौकिकमें परमलु कहते है ताकिट ताकिट ऽ धिमिधिमि धिमिकिट ऽ थरिकुकु थरिकुकु ऽ ताहं । तकादिगि दिगिधिधि गनथों ऽ̆ इति रंगद्योत ताल संपूर्णम् ॥

रंगद्योत ताल, पंच तालो ५.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

रंगद्योत ताल, पंच ताली ५.

ताल.	बचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई तिततत	धिमिधिमि धिमिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३.	थेई तितवत	थरिकुकु थरिकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ꣳ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
४.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई तिततत थेई थेई	तकदिगि दिगि धिधि गनथों	प्लुत ताल मात्रा (ꣽ ५ ।।ꣳ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी हाथको झालो झालापे माने

इति देशी ताल संपूर्णम् ॥

अथ अणु आदि सातों अंगनके प्रस्तारको लक्षण लिख्यते

इष्ट तालके अणु आदि सातों अंगनमें जितने अंग होय। तिनका गुरु प्लुत आदि एक अंग रचि। प्रथमें भेदनमें राखिये ॥ तहां प्रथम भेदमें जे दोय च्यारि। प्लुत आदिक अक्षर होय। तिनमें जो प्रथम प्लुत आदिक होय। ताके आगे वा प्लुत आदिकसों छोटो गुरु आदिक अंग। प्लुत आदिकके नीचे लिखिये ॥ और वाके पहले भेदमें दाहनी ओरको जे अक्षर होय। ते अक्षर आगले दुसरे भेदमें पहिलेनो जो छोटो अंग गुरु आदि लिख्येह ताकी दाहनी ओर लिखिये ॥ और प्रथम भेदमें पहले प्लुत आदि बडे अंगसों। दुसरे भेदके पहले गुरु आदि छोटो अंगमें। जो अणु आदि घटे। सो अणु आदि अंग। गुरु आदिके बांई ओर मात्रा भरिवेको लिखिये ॥ ऐसें प्रस्तार कीजिये जहां ताई सगरे प्लुतादिकनके। अणु अक्षर होय ॥ जहां बडे अंग प्लुत आदिकके आगल भेदमें। गुरु आदिक छोटो अंग लिखिवेको क्रम है ॥ प्लुतसों छोटो गुरु। गुरुसों छोटो लविराम। लविरामसों छोटो लघु। लघुसों छोटो दविराम। दविरामसों छोटो द्रुत। द्रुतसों छोटो अणु। यातें अणुसों सब बडे अंग है ॥ ओर प्लुत अंग सबसों बडो है यह जांनिये ॥ इति प्रस्तार लक्षण संपूर्णम् ॥

अथ प्रस्तारको उदाहरण लिख्यते ॥ जो एक अणुको प्रस्तार करे। तहां पहले भेदमें एक अणु धरिये। आगे अणुते छोटो अंग नहि है। यातें प्रस्तार नही चले ॥ या अणुको एक भेद जानिये ··· ᐡ (१) ॥ इति अणुप्रस्तारको लक्षण संपूर्णम् ॥

अथ द्रुतप्रस्तार लिख्यत ॥ जो द्रुतको प्रस्तार करे। तहां पहले एक द्रुत धरिये। सो एक भेद ··· ० (१) ॥ आगे द्रुतसों छोटो अंग अणु है। सो आगले भेदमें लिखिये ॥ और द्रुतकी मात्राकी भरति करिवेकों ये अणुके बांई ओर एक अणु और लिखिये ॥ ऐस दोय अणुको दुसरो भेद है ··· ᐡ ᐡ (२) ॥ अणुते आगे प्रस्तारं नहीं ॥ ऐसें द्रुतके दोय भेद जानिये ··· ० (१) ᐡ ᐡ (२) ॥ इति द्रुतको प्रस्तार संपूर्णम् ॥

अथ **दविरामको प्रस्तार लिख्यते** ॥ जो दविरामको प्रस्तार करे । तहां पहले दविराम लिखिये ॥ ऐसो एक भेद ··· ६ (१) ॥ और दविरामतें छोटो अंग द्रुत । सो दुसरे भेदमें लिखिये ॥ और दविरामकी मात्रा भरिवेकों । द्रुतके बांई ओर एक अणु लिखिये ॥ सो दुसरो भेद ··· ᴗ ० (२) ॥ आगे द्रुतते छोटो अणु । सो तीसरे भेदमें लिखिये ॥ फेर दविरामकी मात्रा भरिवेकों या अणुके बांई ओर एक द्रुत लिखिये ॥ सो तीसरो भेद ··· ० ᴗ (३) ॥ आगे द्रुततें छोटो अणु सो चोथे भेदमें लिखिये ॥ और तीसरे भेदमें द्रुतकी दाहिणी ओरको अणु । या अणुके दांहिणी ओर लिखिये ॥ और दविरामकी मात्रा भरिवेकों । इन दोऊ अणुके बांई ओर एक अणु और लिखिये ॥ सो चोथो भेद ··· ᴗᴗᴗ (४) ॥ ऐसें दविरामके च्यार भेद जांनिये ··· ६ (१) ᴗ ० (२) ० ᴗ (३) ᴗ ᴗ ᴗ (४) ॥ इति दविरामको प्रस्तार संपूर्णम् ॥

अथ लघुको प्रस्तार लिख्यते ॥ जो लघुको प्रस्तार करे । तहां पहले एक लघु लिखिये ॥ सो पहलो भेद हें ··· । (१) ॥ आगे लघुतें छोटो दविराम । सो दुसरो भेदमें लिखिये ॥ और लघुकी मात्रा भरिवेकों । या दविरामकी बांई ओर एक अणु लिखिये । सो दुसरो भेद ··· ᴗ ६ (२) ॥ आगे दविरामतें छोटो द्रुत । सो तीसरे भेदमें लिखिये ॥ या लघुकी मात्रा भरिवेकों । द्रुतके बांई ओर एक द्रुत और लिखिये ॥ सो तीसरो भेद ··· ० ० (३) ॥ आगे द्रुततें छोटो अणु । सो चोथे भेदमें लिखिये ॥ और तीसरे भेदमें प्रथम द्रुतके दांहिणी ओरको द्रुत । या अणुके दांहिणी ओर लिखिये । या लघुकी मात्रा भरिवेकों । इन द्रुतअणुके बांई ओर एक अणु और लिखिये । सो चौथो भेद ··· ᴗ ᴗ ० (४) ॥ आगे द्रुततें छोटो अणु । सो पांचवे भेदमें लिखिये ॥ और लघुकी मात्रा भरिवेकों या अणुके बांई ओर एक दविराम लिखिये ॥ सो पांचवो भेद ··· ६ (५) ॥ आगे प्रथम दविरामतें छोटो द्रुत ॥ सो छटवे भेदमें लिखिये ॥ और पांचवे भेदके दविरामकी दाहिणी ओरको अणु । या द्रुतके दांहिणी ओर लिखिये ॥ या लघुकी मात्रा भरिवेकों । या द्रुतके बांई ओर । एक अणु लिखिये ॥ सो छटो भेद ··· ᴗ ० ᴗ (६) आगे मध्यके द्रुतको छोटो अणु । सो सातवा भेदमें लिखिये ॥ और छटे भेदमें द्रुतकी दाहिनी ओरको अणु या

अणुके दाहिनी ओर लिखिये ॥ या लघुकी मात्रा भरिवेकों । इन दोऊ अणुके बांई ओर । एक द्रुत लिखिये ॥ सो सातवो भेद ··· ० ᐯ ᐯ (७) ॥ आगे द्रुततें छोटो अणु । सो आठवे भेदमें लिखिये ॥ और सातवे भेदमें । द्रुतकी दाहिनी ओरके दोऊ अणु । या अणुके दाहिनी ओर लिखिये ॥ या लघुकी मात्रा भरिवेकों । इन तीनो अणुके बांई ओर । एक अणु और लिखिये ॥ सो लघुको आठवो भेद ··· ᐯ ᐯ ᐯ ᐯ (८) ऐसे लघुके आठ भेद जानिये ··· । (१) ᐯ ὸ (२) ० ० (३) ᐯ ᐯ ० (४) ὸ ᐯ (५) ᐯ ० ᐯ (६) ० ᐯ ᐯ (७) ᐯ ᐯ ᐯ ᐯ (८) ॥ इति अणु । द्रुत । द्रविराम । लघुके प्रस्तार भेद संपूर्णम् ॥ या रीतसों लघु । लविराम । गुरु । प्लुत । इनको प्रस्तार कीजिये ॥ जहां दोय तीन आदिक अंगनको प्रस्तार होय । तहां शास्त्रोक्त रीत समझि । याहि तरह कीजिये ॥ इति प्रस्तारभेद लक्षण संपूर्णम् ॥

अथ अणु आदि सातों अंगन प्रस्तार भेदकी संख्या लिख्यते ॥ तहां प्रथम अणु है । ताके प्रस्तारके एक भेद है ॥ १ ॥ और दुसरो द्रुत है । ताके प्रस्तारके दोय भेद है ॥ २ ॥ तीसरो द्रविराम है । ताके प्रस्तारके च्यार भेद है ॥ ४ ॥ और चोथो लघु है । ताके प्रस्तारके आठ भेद है ॥ ८ ॥ पांचवो अणु लघु । ताके प्रस्तारके पंधरा भेद है ॥ १५ ॥ और लविराम छटो । ताके प्रस्तारके तीस भेद है ॥ ३० ॥ और सातवो अणु लविराम है । ताके प्रस्तारके अठावन भेद है ॥ ५८ ॥ आठवो गुरु । ताके प्रस्तारके एकसो चौद भेद है ॥ ११४ ॥ और नोवो अणु गुरु । ताके प्रस्तारके दोयसो बाईस भेद है ॥ २२२ ॥ दशवो द्रुत गुरु । ताके प्रस्तारके च्यारसो चौतीस भेद है ॥ ४३४ ॥ और ग्यारवो द्रविराम गुरु । ताके प्रस्तारके आठसो सेतालीस भेद है ॥ ८४७ ॥ बारवो प्लुत । ताके प्रस्तारके । सोलेसे छपन्न भेद है ॥ १६५६ ॥ और तेरवो अण प्लुत । ताके प्रस्तारके बत्तीससेतेतीस भेद है ॥ ३२३३ ॥ फेर चौदवो द्रुत प्लुत । ताके प्रस्तारके त्रेसठिसेसोले भेद है ॥ ६३१६ ॥ और पंध्रवो द्रविराम प्लुत । ताके प्रस्तारके । बारहजार तीनसे छत्तीस भेद है ॥ १२३३६ ॥ और सोलवो लघु प्लुत । ताके प्रस्तारके । चोईस हजार सत्याणवे भेद है ॥ २४०९७ ॥ ऐसे ही एक एक अणु बधते संख्या बधती जाय है ॥

अथ प्रस्तारसंख्या करिवेको लक्षण लिख्यते ॥ तहां प्रथमके कोठातें लेके । चोथो कोठाताई च्यारो कोठानमें अनुक्रमसों च्यारि अंक धरिये ··· १।२।४।८ ॥ पांचवे इत्यादि कोठाके जोड । उलटे क्रमसों प्रथम । दूसरे । तीसरे । चौथे । छटवे। आठवे । और बारावे कोठाके अंक ॥ ताके छटवो । आठवो । बारवो कोठा नहि मिले तो पांचवे। सातवे। ग्यारवे । कोठानकें अंक धरिये। तथा अब पांचवे कोठाको जोड ··· ८।४।२।१ ॥ छटवो कोठाका जोड··· १५।८।४।२।१ ॥ सातवो कोठाको जोड···३०।१५।८।४।१ ॥ आठवो कोठाको जोड ···५८।३०।१५।८।२।१॥ नवमो कोठाको जोड ··· ११४।५८।३०।१५।४।१॥ दशवो कोठाको जोड··· २२२।११४।५८।३०।८।२॥ ग्यारवो कोठाको जोड ··· ४३४।२२२।११४।५८।१५।४ ॥ बारवे कोठाको जोड ···८४७।४३४।२२२।११४।३०।८।१॥ तेरवो कोठाको जोड ··· १६५६।८४७।४३४।२२२।५८।१५।१ ॥चौदवो कोठाको जोड ··· ३२३३।१६५६।८४७।४३४।११४।३०।२ ॥पंध्रवो कोठाको जोड ···६३१६।३२३३।१६५६।८४७।२२२।५८।४॥ सोलवो कोठाको जोड ··· १२३३६।६३१६।३२३३।१६५६।४३४।११४।८ ॥

॥ प्रस्तारसंख्या यंत्र ॥

१	२	३	४	५	६	७	८
ᵕ	०	ठ	।	ᵕ ।	ा	ᵕ ा	ऽ
१	२	४	८	१५	३०	५८	११४
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ᵕ ऽ	० ऽ	ठ ऽ	ऽ̄	ᵕ ऽ̄	० ऽ̄	ठ ऽ̄	। ऽ̄
२२२	४३४	८४७	१६५६	३२३३	६३१६	१२३३६	२४०९७

॥ इति प्रस्तारसंख्या यंत्र संपूर्णम् ॥

नष्ट उद्दिष्ट.

अथ नष्टको लक्षण लिख्यते ॥ संख्यारीति ॥ अणुआदि सातों अंगनके प्रस्तारमें दुसरा तिसरा आदिकपूछै तहा सब भेदनमें अणु द्रुत अंगनकों क्रम जानिवकों संख्या रीतिका लक्षण लिख्यते ॥ जहां कोउ अणु आदिक सातों अंगनके प्रस्तारमें। पहले दुसरे आदिक भेदमें। अणु द्रुत आदि अंगनकों क्रम पुछे। तहां जा अंगके प्रस्तार पुछें ता अंगके जितने अणु होय तितने कोठाकी पंक्तिरचि। उन कोठानमें संख्या जंत्रके क्रमसों। एकादिक अंक भरिये ॥ जो दूसरो तिसरो भेद पुछें तहां पूछ्यो अंक। दोयको वा तीनको अंक। वां पंक्तिके अंति कोठामें जो अंक होय तामें घटाईये। घटाया पीछे जो अंक रहतामें होय। सो अंतिके पासिके कोठामें लेके। पहले कोठाताईं उलटे क्रमसो कोठाको अंक रहतोमेंसे घटाईये। तब पूछे भेदके। अणु द्रुत आदिक अंगनको क्रम होय हैं। तहां अंति अंकमेंसे पहलो अंक नही घटे तब अणु लिजिये ॥ और जहां अंक घटे तहां द्रुत लिजिये। जहां मिलते दोय अंक घटे। तहां दविराम लिजिये ॥ जहां मिलते तीन अंक घटे तहां लघु लिजिये॥ जहां जो पहलो एक वा दोय तीन अंक घटते। आगे एक वा दोय अंक नही घटे। आगे एक वा दोय वा तीन मिलते वा न्यारे न्यारे घटे। तहा कोंहे क्रमसों द्रुत दविराम लघु अक्षर क्रमसों जानिये ॥ जहां अंतिकें अंकमें। अंतिकं पासिके कोठासों लेकं। लगते च्यारि कोठा घटे। और पांचवो कोठा छोडिये। तहां लविराम लिजिये ॥ ऐसेही च्यार कोठातो लगते। और छटवो कोठा घटे। पांचवो सातवों कोठा घटे तहां गुरु लिजिये ॥ और लगते च्यार कोठा। छटवो कोठा। आठवो कोठा घटे। पांचवो सातवों नवमो दशवी ग्यारवों कोठा छोडिये। वहां प्लुत लिजिये ॥ ऐसे सब भेदनमें अपनी बुध्दीसों अणु आदिक अंगनसों समझिये ॥ इति नष्ट विचार संपूर्णम् ॥

अथ उद्दिष्टको लक्षण लिख्यते ॥ जहां अणु आदि सातों अंगनके पहले दुसरे आदि कोउ एक भेद लिखि ॥ वांकि संख्या पूछे। तहां लिखि भेदमें जो अणु आदिक अंग होय। तिनके नष्ट रीतिसों जे संख्याके अंश आवें ॥ ते अंतिके अंकमें घटाईये ॥ घटाया पीछैं जो अंक रहे एक दोय आदिक। सो लिखे भेदकी संख्या जानिये ॥ **अथ उदाहरण लिख्यते ॥** जैसे

लघुके आठ भेद है ॥ तहां अणु द्रुत अणु ...ᵕ ० ᵕ...या भेदकी संख्या कहों। ऐसें पूछें ॥ तहां ए भेद लिखिये ॥ लघु भेदके संख्याके अंक क्रमसों पहले अणुपें एकको । द्रुतपें दोयकों। और अणुपें च्यारकों ये अंक धरियें॥ आठको अंक अंतिपे धरियें॥ या आठके अंकमें घटे क्रमसों च्यारको दोयको एकको ए मिल तीन अंक। नष्ट रीतसों घटाइये॥ अंक विनाघटे । अणु ॥ अंक घटे। द्रुत॥ दोय मिलते अंक घटे। द्विराम ॥ मिलते तीन अंक घटे । लघु ॥ ऐसेंही लविराम गुरु प्लुतके जा क्रमसों नष्टमें घटे । ताही रीतसों घटाईये ॥ इहां तिसरो अणु हे तो तिसरो च्यारिकों अंक है सों नही घटे ॥ दूसरो । २ । द्रुत हे। तो दूसरो अंक दोयको है। सो आठको ।८। अंकमें घटाइये। तब छहको अंक रहे॥ और पहलो । १। अणु है। तो पहले एकको अंकहे । सो छहका अंकमें नहीं घटाइये। तो या लिखिये भेदकी संख्या आठ कम दो याने छहको । ६ । अंक है॥ या छटवों भेद जानिये ॥ ऐसेही द्विराम आदिक अंक जहां लिखे भेदमें होय । ताकी संख्या जानिवेकों । नष्ट रीतसो क्रमसों अंक घटाये संख्या जानिये ॥ इति उद्दिष्ट संपूर्णम् ॥

अथ षट्ट प्रस्तार जानिये ॥ अणु आदि सात अंगनके सात मेरु है । तहां अणु मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ जहां जो कोऊ तालको प्रस्तार कीजिये । वा तालके जितने अणु होय । तितनी गिणतीके कोठा रचि । एक नीचली पंक्ति कीजिये ॥ लघुप्लुत प्रस्तारके सोलह अणु होय । तो यहां नीचली आडिपंक्ति सोलह कोठानकी रचिये ॥ पीछे बांई ओरतें एक एक कोठा घाटि। उपरली उपरली पंक्ति कीजिये। जहां तांई एक कोठाकी उपरली पंक्ति होय ताहां ताई॥ ऐसेहि अणुमेरुमें ऊभी सोलह पंक्ति रचिये ॥ ऐसे मेरु रचके नीचली पंक्ति आदि सब पंक्तिनके पहले पहले तिरछा सब कोठानमें । एक एकको अंक भरिये ॥ और दूसरे दूसरे कोठानमें एक दोय आदिक अंक क्रमसों भरिये ॥ फेर नीचली पंक्ति भरिये। ताको प्रकार कहत है ॥ नीचली पंक्ति भरिवेमें जो कोठा भऱ्यो होय । योंहि उलटे क्रमसों पहलो कोठा छोडि । दुसरो तीसरो चोथो छटवो आठवो और बारवो इन कोठानके जितने अंक होय। तिनकों जोडि वाकों आगले कोठामें धरिये ॥ यहां प्रत्यक्ष अंतको चोथो छटवो आठवो बारवो कोठा । जोडवेमें नही लिजिये ॥ और छटवो आठवो बारवो कोठा नही मिलेतो उन कोठानको अगलो याने पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ या रीतसां नीचली पंक्ति भरिये ॥

दुसरी आदिक उपरली–उपरली पंक्ति भरिवेको प्रकार कहत है ॥ उपरली पंक्तिमें जो कोठा भर्‍यो होय । ता कोठाको नीचलो कोठा। नीचले पंक्तिनसे। पहलो कोठा गिणके। उलटे क्रमसो उपरली पंक्तिको। दुसरो तिसरो चोथो छटवो आठवा बारवो कोठा होय । इन सब कोठानके अंक जोडि । आगले कोठामें भरिये॥ यहांभी पंक्तिको बाई ओरको प्रत्यक्ष अंतको । चोथो छटो आठवो बारवो कोठा। जोडवेमें नही लीजिये ॥ और छटवो आठवो बारवो कोठा नहीं मिले तो। उन कोठानको आगलो। याने पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ वा रीति नीचली पंक्ति कीजिये ॥ यही रीतसे दुसरी आदिक ऊपरली ऊपरली सब पंक्ति भरिये॥ यह रीति जानिये ॥ उन पंक्तिनके सबते नीचलेके पंक्तिनमें जितनें कोठा होय । तहां प्रथमसें नीचले कोठानमें । अणु हीन भेद ॥ तातें ऊपरले ऊपरले कोठानमें। एक अणु दोय अणु आदिक भेद क्रमसों जानिये ॥ और सब कोठा जोडी ए तालके प्रस्तारभेदनकी संख्या होत है ॥ इति अणु मेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥

१. अणुमेरु यंत्र.

															१
														१	१५
													१	१४	९४
												१	१३	१३	१०४
											१	१२	१२	९०	१५६
										१	११	११	७७	१३२	४९५
									१	१०	१०	६५	११०	३९५	७७०
								१	९	९	५४	९०	३०९	५८५	१६२९
							१	८	८	४४	७२	२३६	४३२	११६६	२२३२
						१	७	७	३५	५६	१७५	३०८	८०५	१४८४	३४३०
					१	६	६	२७	४२	१२५	२१०	५३१	९३८	२१००	३८२२
				१	५	५	२०	३०	८५	१३५	३३०	५५५	१२०१	२०९५	४२१५
			१	४	४	१४	२०	५४	८०	१८९	३००	६२६	१०४०	२०२३	३५०४
		१	३	३	९	१२	३१	४२	९६	१४२	२८५	४४७	८३९	१३३८	२२१८
	१	२	२	५	६	१५	१८	४०	५४	१०४	१५२	२७५	४१०	७१७	१०९४
१	१	१	२	२	५	५	११	१३	२४	३२	५६	७६	१२९	१८३	२९८
ᵕ	०	ॅ०	।	ᵕ।	ꞁ	ᵕꞁ	ऽ	ᵕऽ	०ऽ	ॅ०ऽ	ऽ̆	ᵕऽ̆	०ऽ̆	ॅ०ऽ̆	।ऽ̆
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१	२	४	८	१५	३०	५८	११४	२२२	४३४	८४७	१६५६	३२३३	६३१६	१२३३६	२४०९७

२. द्रुत मेरु.

अथ द्रुत मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ या द्रुतमें प्लुत आदिक अंक जितने अणु होय तिन कोठाकी नीचली पंक्ति कीजिये । या पंक्तितें उपरली दुसरी पंक्ति । बांई ओरतें एक कोठा घाटि कीजिये ॥ तातें उपरली तीसरी आदिक पंक्ति जितनी होय । तितनी सब आपआपसों पहली पंक्तिसों बांई ओरतें दोय दोय कोठा घाटि किजिये ॥ ऐसे द्रुत मेरुमें उभी नो पांक्ति रचिये ॥ अब द्रुत मेरुकी नीचली पंक्ति आदिक पंक्तिमें एकादिक अंक भरिवेको प्रकार कहते हैं ॥ नीचली पंक्ति आदिक एक कोठाकी पंक्ति ताई । जितनी पंक्ति होय । तिनके पहले पहले कोठामें । एक एक अंक भरिये ॥ इन पंक्तिनके दूसरे दूसरे कोठामें । एक दोय तीन च्यार आदिक अंक क्रमसों भरिये ॥ ऐसे दोय दोय कोठा भरिये ॥ अब नीचली पहली पंक्तिके । तीसरे आदिक कोठा भरिवेको प्रकार कहते हैं । जो संख्या जंत्रकि नाई ॥ जाकोठामें अंक भरनो होय ता कोठाकी पासिके कोठाते लेके । संख्या जंत्रकी नाई उलटे क्रमसों ।सात कोठा लिजिये ॥ उनके अंक जोडि चार कोठाताई आगले कोठामें अंक भरिये ॥ यहा च्यार कोठा भरे उपरांत । जो पांचवो आदिक कोठा भरनो होय । ताके पासके कोठातें उलटे क्रमसों दूसरे कोठाको छोडि । संख्या जंत्रके क्रमकी रीतिसों सात कोठा जोडी । अंक भरिये ॥ तहां द्रुत मेरुमें छटवो आठवो बारवो कोठा नहीं मिले । तो ऊनको पहलो पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा लिजिये ॥ और छटवो बारमो कोठा मिलेतो वोही लिजिये ॥ यातें सात कोठानके जोडमें उलटे क्रमसों । दूसरो पांचवो सातवो नवो ग्यारवो ये कोठा छोडि । बाकि कोठा जोडिये ॥ और तेरवो आदिक बारहते उपरांत कोठा नहीं लिजिये ॥ ऐसै नीचली पंक्ति भरिये ॥ अब ऊपरली ऊपरली पंक्तिनके भरिवेको प्रकार कहते हैं ॥ यहां ऊपरली पंक्तिनके तीसरे आदिक कोठामें । ऊपरली पंक्तिके दूसरी कोठातें उलटे क्रमसों दुसरो एक अंकको प्रथम कोठा है । सो तो छोडि । वा कोठाके नीचली पंक्तिको कोठा होय । सो दूसरे कोठाको स्थान लिजिये । बाकिके पहले संख्या क्रमसों जोडि तीसरे आदिक कोठानमें भरिये । इन ऊपरली पंक्तिनमें छटवो आठवो बारवो कोठा नाहि मिलेतो । पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा नहीं लिजिये । ऐसै द्रुतमेरुकी ऊपरली सब पंक्ति भरिये ॥ यहा भी अणु मेरुकी सिनाई एकादिक कोठानकी आडि सोलह पंक्ति रचिये ॥ उन पंक्तिनके सबतें नीचलेके पंक्तिके कोठानमें । विना द्रुतके भेदनकी संख्या जानिये ॥ और दूसरे आदिक उपरले कोठानमें क्रमसों एक द्रुत

दोय द्रुत आदिक भेदनकी संख्या जानिये ॥ और सब कोठा जोडि ए तालके प्रस्तार भेदनकी संख्या होत है ॥ इति द्रुतमेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥

२. द्रुत मेरु यंत्र.

															१
													१	८	३६
											१	७	२८	९१	२७३
									१	६	२१	६२	१७४	४६२	११६१
							१	५	१५	४०	१०५	२६१	६१५	१४०५	३१४०
					१	४	१०	२४	५९	१३६	२९८	६४०	१३५३	२८०४	५७१६
			१	३	६	१३	३०	६३	१२७	२५५	५०७	९८९	१९०५	३६३९	६९०१
	१	२	३	६	१३	२४	४४	८२	१५२	२७६	४९८	८९६	१६०८	२८६८	५०९३
१	१	२	४	६	१०	१७	२९	४८	८०	१३४	२२६	३७८	६३२	१०५९	१७७६
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

३. दविराम मेरु.

अथ दविरामको लक्षण लिख्यते ॥ प्लुत आदि अंगके जितने अणु होय। तितने याने सोलह कोठाकी अणुमेरुके सिनाई। नीचली पंक्ति प्रथम कीजिये ॥ ताकी उपरली दूसरी पंक्ति। बांई ओर दोय कोठा घाटि कीजिये ॥ आगे तीसरी आदि उपरली पंक्ति जितनी होय। तितनी सब आप आपकी पहली पंक्तिसों। बांई ओरतें तीन कोठा घाटि कीजिये ॥ ऐसे दोय कोठाकी पंक्ति ताई। छह पंक्तिको दविराम मेरु रचिये ॥ अब दविराम मेरुको भरिवेंको प्रकार कहे है ॥ यहां सब पंक्तिनके प्रथम कोठानमें। एक एकको अंक भरिये ॥ और दूसरे दूसरे कोठानमें। पहली और दूसरी पंक्तिमें। दोऊ ओर। दोय दोयको अंक भरिये ॥ और तीसरे आदिक पंक्तिनमें। तीन च्यार आदि अंक क्रमसों दुसरे कोठामें धरिये ॥ अब पहली पंक्ति। नीचली पंक्ति। भरिवेंको प्रकार कहे है ॥ पहलें दोऊ कोठा जोडी तीसरे कोठामें धरिये ॥ ये तीन कोठा जोडि चोथे

कोठामें धरिये ॥ ऐसे च्यार कोठा भरि । क्रमसों तीसरो कोठा छोडि । संख्या क्रमके जंत्रके सिनाई । पहलो । दूसरो । चोथो । छटो । आठवो । बारवो कोठा । ऐसे सात कोठा जोडि पांचवें आदिक कोठानमें धरिये ॥ यहां छटवो आठवो बारवो कोठा नहीं मिले तो । पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ ऐसें नीचली पंक्ति भरिये ॥ अब उपरली पंक्ति भरिवेंको प्रकार कहे है ॥ यहां ऊपरली ऊपरली पंक्तिके तीसरो कोठाके नीचली कोठा होय ये कोठा और ऊपरली पंक्तिके दोय कोठा । ये तीन कोठा जोडि । ऊपरली दूसरी पंक्तिके तीसरो कोठा भरिये ॥ ऐसै तीसरे कोठाके नीचलो कोठा जोडि । ऊपरलो कोठा छोडि तातै उलटे क्रमसो दुसरो पहिलो कोठा लेके । चोथो कोठा भरिये ॥ ऐसैहि पांचवे आदिक कोठानमें धरिये ॥ यहां जा कोठाको नीचलो कोठा जोडिये सो कोठा ऊपरली नहीं लीजिये ॥ यहां छटवो आठवो बारवो कोठा नहीं मिलेतों । पांचवों सातवों ग्यारवों कोठा नहीं लीजिये ॥ ऐसे ऊपरली सब पंक्ति भरिये । यहां उभी छह पंक्ति रचिये ॥ यहांभि अणु मेरुकी सीनाई सबसे नीचली पंक्ति सोलह कोठनकी रचिये ॥ उभे पंक्तिनमें । सबतें नीचला कोठानमें । विना द्विरामके भेदनकी संख्या है ॥ तातें उपरले उपरले कोठानमें । एक दोय आदि द्विरामके भेदनकी संख्या जानिये ॥ इन पंक्तिके सब कोठा जोडि । ए तालके प्रस्तारभेदकी संख्या जानिये ॥ इति द्विराम मेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥

३. द्विराम मेरु यंत्र.

														१	६
											१	५	२०	६५	१९५
								१	४	१४	४०	१०९	२७६	६७८	१६०४
					१	३	९	२३	५४	१२३	२७८	६०६	१३०८	२७६६	५७९३
		१	२	५	१०	२२	४४	९१	१८०	३६०	७०४	१३७८	२६६६	५१५१	९८८२
१	२	३	६	१०	१९	३३	६१	१०८	१९६	३५०	६३३	११३५	२०४६	३६७५	६६१७
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

४. लघु मेरु.

अथ लघु मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ प्लुत आदि अंगके जितने अणु होय । तितने याने सोलह कोठाकी पहली पंक्ति अणुमेरु सिनाई किजिये । तातें ऊपरली दूसरी पंक्ति । बांई ओर तें तीन कोठा घाटि कीजिये ॥ तातें उपरली तीसरी आदिक पंक्ति । आप आपकी पहली पंक्तिसों च्यार च्यार कोठा घाटि कीजिये ॥ ऐसे एक कोठाकी पंक्तिताई ॥ पांच उभी पंक्तिनको लघु मेरु रचिये ॥ अब लघु-मेरु भरिवेको प्रकार कहे हैं ॥ यहां सब पंक्तिनके । पहले कोठानमें एक एक अंक भरिये । और पहली नीचली पंक्ति । और वाके ऊपरली दूसरी दूसरे पंक्तिके दूसरे कोठामें । दोय दोयको अंक भरिये ॥ तीसरी आदिक पंक्तिमें दूसरे दूसरे कोठामें तीन आदिक क्रमसों अंक भरिये ॥ अब पहली नीचली पंक्ति भरिवेको प्रकार कहे है ॥ यहां पहली पंक्तिकें तीसरे कोठामें च्यारको अंक धरिये ॥ ये तीनो कोठा जोडी । चोथो कोठो भरिये ॥ यां चोथे कोठातें ऊलटे क्रमसों चोथो कोठा छोडि । संख्या जंत्रके क्रमसों सात कोठा जोडि । पांचवे आदिक सब कोठा भरिये ॥ यहां छटो आठवो बारवो कोठा नहीं मिले तों । पांचवों सातवों ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ ऐसे पहली नीचली पंक्ति भरिये । अब उपरली दूसरी पंक्ति भरिवेको प्रकार कहे है॥ यहां जो कोठा भरनो होय । तातें पहले कोठाके नीचे जो कोठा होय । तासों चोथो कोठा लेके । वा कोठाके ऊपरलो कोठा छोडि । संख्या जंत्रके क्रमसों ऊप-रलो कोठा जोडि । आगले सब कोठा भरिये ॥ यहां छटो आठवो बारवो कोठा नहीं मिलेतों । पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा नहीं लीजिये ॥ ऐसेही तीसरी आदिक ऊपरली सब पंक्ति भरिये ॥ इहां उभि पंक्तिनमें । सबतें नीचले कोठानमें । विना लघुके भेदनकी संख्या जानिये॥ और ऊपरले ऊपरले कोठानमें । क्रमसों एक दोय आदिक लघुनकी भेदनकी संख्या जानिये ॥ सब कोठा जोडि ए तालके प्रस्तारकी संख्या जानिये ॥ इति लघु मेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥

४. लघु मेरु यंत्र.

															१
											१	४	१४	४४	१२५
							१	३	९	२५	६३	१५३	३६२	८३१	१८७५
			१	२	५	१२	२६	५६	१२०	२५०	५१९	१०६६	२१७१	४३९६	८८५३
१	२	४	७	१३	२५	४६	८७	१६३	३०५	५७२	१०७३	२०१०	३७६९	७०६५	१३२४३
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

५. लविराम मेरु.

अथ लविराम मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ यहां प्लुत आदि अंगके जितने अणु होय। तितने याने सोलह कोठाकी पहली नीचली पंक्ति कीजिये। तातें ऊपरली दूसरी पंक्ति। बांई ओर तैं पांच कोठा घाटि किजिये ॥ तातें ऊपरली तीसरी आदिक पंक्ति। आपआपकी पहली पहली पंक्तिसों बांई ओरतें छह छह कोठा घाटि कीजिये ॥ ऐसै तीन उभी पंक्तिसों लविराम मेरु रचिये ॥ अब लविराम मेरुको भरिवेको प्रकार कहे हैं ॥ सब पंक्तिनके पहले पहले कोठामें एक एकको अंक भरिये ॥ अब **पहली नीचली** पंक्तिके भरिवेको प्रकार लिख्यते ॥ पहली पंक्तिको पहलो कोठा दूनो करि। दूसरो कोठा भरिये ॥ दूसरो कोठा दूनो करि। तीसरो भरिये ॥ तीसरो कोठा दूनो करि। चोथो कोठा भरिये ॥ ये च्यार कोठा जोडि पांचवो कोठा भरिये ॥ या पांचवो कोठातें उलटे क्रमसों संख्याजंत्रके नई पांचवो आदि कोठा जोडि। छटवे आदिक कोठा भरिये ॥ यहां छटो कोठा नही लीजिये। या आठवो बारवो कोठा नहीं मिलेतों। सातवों ग्यारवों कोठा लिजिये। ऐसें नीचली पंक्ति भरिये ॥ अब **उपरली दूसरी पंक्ति** भरिवेको प्रकार कहे है ॥ या उपरली पंक्तिमें जो कोठा भरनो होय तातें पहले कोठाकें नीचे जो कोठा होय। तातें उलटे क्रमसों छटो कोठा लेके वाको ऊपरली ऊपरली पंक्तिको कोठा छोडी। बाकीके ऊपरली पंक्तिके कोठा संख्या जंत्रके क्रमसों जोडी। आगले आगले सब कोठा भरिये ॥ यहां आठवो बारवो कोठा नहीं मिलेतो सातवो ग्यारवो कोठा नहीं लीजिये ॥ ऐसेंही तीसरी आदिक सब पंक्ति भरिये ॥ यहां उभी पांक्तिनमें सबसें नीचले कोठामें विना लविरामके भेदनकी संख्या है ॥ ओर उपरले कोठानमें क्रमसों एक दोय आदिक लविरामके भेदनकी संख्या जानिये ॥ उभी लीकके सब कोठा जोडि लविरामके प्रस्तारकी संख्या होत है ॥ **इति लविराम मेरुको लक्षण संपूर्णम्** ॥

५. लविराम मेरु यंत्र.

											१	३	९	२५	६६
					१	२	५	१२	२८	६२	१३६	२९४	६३०	१३३४	२८०५
१	२	४	८	१५	२९	५६	१०९	२१०	४०६	७८५	१५१९	२९३६	५६७७	१०९७७	२१२२६
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

६. गुरु मेरु.

अथ गुरुमेरुको लक्षण लिख्यते ॥ प्लुत आदि अंगके जितने अणु होय । तितने यानें सोलह कोठाकी नीचली पहली पंक्ति कीजिये ॥ तातें ऊपरली दुसरी पंक्ति- बांई ओर ते सात कोठा घाटि कीजिये ॥ तातें ऊपरली तीसरी आदिक पंक्ति आप- आपकी पहली पंक्तीसों बांई ओरतें आठ आठ कोठा घाटि कीजिये ॥ ऐसे तीन पंक्ति- नसों गुरुमेरु रचिये ॥ अथ गुरुमेरुको भरिवेको प्रकार कहे है ॥ सब पंक्तिनके प्रथम कोठानमें एक एक को अंक धरिये ॥ अब नीचली पंक्ति भरिवेको प्रकार लिख्ये है। पहलो कोठा दूणा करि । दूसरो कोठा भरिये । ऐसें दूसरो दूणो करि तीसरो । तीसरो दूणो करि चोथो । ये च्यारो कोठा जोडि पांचवो भरिये । ये पांचो कोठा जोडि छटो भरिये । आगे या सातवे कोठातें ऊलटे क्रमसें या छटा कोठासों संख्या जंत्रके क्रमसों कोठा जोडि सातवो कोठा भरिये । आगे या सातवे कोठातें ऊलटे क्रमसों । सातवो आठवो कोठा छोडि बाकिके कोठातें संख्या जंत्रके क्रमसों जोडि । आगले आगले सब कोठा भरिये । इहां बारवो कोठा नहीं मिले तो ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ ऐसे नीचली पंक्ति भरिये ॥ अब ऊपरली पंक्ति भरविको प्रकार कहे हैं । जो कोठा भरनो होाय तासों पहलीका कोठाके नीचले जो कोठा होय । तातें ऊलटे क्रमसों । आठवो कोठा लेके । वा कोठाके ऊपरको ऊपरली पंक्तिको कोठा छोडि । संख्या जंत्रके क्रमसों बाकी कोठा जोडि । आगले आगले सब कोठा भरिये ॥ यहां बारवो कोठा नहीं मिले तो । ग्यारवो कोठा नहीं लीजिये ॥ ऐसेही तीसरी आदिक पंक्ति भरिये ॥ उभी सब पंक्तिके सबतें नीचले कोठानमें ॥ विना गुरुके भेदनकी संख्या है । और ऊपरले ऊपरले कोठानमें एक दोय आदिक । गुरुनके भेदनकी क्रमसों संख्या जानिये ॥ और लिकके सब कोठा जोडि गुरुके प्रस्तार- भेदकी संख्या जानिये ॥ इति गुरुमेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥

६. गुरु मेरु यंत्र.

															१
							१	२	५	१२	२८	६२	१३८	३००	६४६
१	२	४	८	१५	३०	५८	११३	२२०	४२१	८३५	१६२८	३१७१	६१७८	१२०३६	२३४५०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

७. प्लुत मेरु.

अथ प्लुत मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ इहां प्लुत आदिक अंगके जितने अणु होय । तितने याने सोलह कोठानकी अणुमेरु सिनाई पहली नीचली पंक्ति कीजिये ॥ तातें ऊपरली दूसरी पंक्ति बांई ओरतें। ग्यारह कोठा घाटि कीजिये॥ तातें ऊपरली तीसरी आदिक सब पंक्ति । आपआपकी पहली पहली पंक्तिसों बारह बारह कोठा घाटी कीजिये ॥ ऐसे दोय पंक्तिनसों प्लुत मेरु रचिये ॥

अथ प्लुत मेरुके भरिवेको प्रकार लिख्यते ॥ नीचली आदिक सब पंक्तिनके । पहले पहले कोठानमें एकएकको अंक भरिये ॥ अब नीचली पहली पंक्तिके भरिवेको प्रकार कहे हैं ॥ नीचली पंक्तिको पहलो कोठा दूनो करि दूसरो कोठा भरिये ॥ ऐसे पहलो पहलो कोठा दूनो दूनो करि । नीचली पंक्तिके चार कोठा तांई भरिये ॥ ये चारो कोठा जोडि । पांचवो भरिये ॥ ये पांचो जोडी । छटो भरिये ॥ आगे या सतावे कोठातें उलटे क्रमसों संख्या जंत्रके क्रम करी कोठा जोडि । आगले आगले कोठामें ग्यारवे कोठा तांई अंक भरिये ॥ ग्यारवो कोठा छोडि । संख्या जंत्रके क्रमसों बाकि कोठा जोडि । आगले आगले बारवो आदिक सब कोठा भरिये ॥ यहां छटवो आठवो कोठा नहीं मिले तो । पांचवों सातवो कोठा लीजिये ॥ ऐसे नीचली पंक्ति भरिये ॥ अब उपरली दूसरी पंक्ति भरिवेको प्रकार कहे हैं ॥ या ऊपरली पंक्तिमें दूसरो आदि जो कोठा भरनो होय । तातें पहले कोठाके नीचे जो कोठा होय । ता कोठासों ऊलटे क्रमसों बारवो कोठा लीजिये । वा कोठाके ऊपरको ऊपरली पंक्तिमें जो कोठा होय सो छोडिके । बाकि कोठा । संख्या जंत्रके क्रमसों जोडि। दूसरे आदिक सब कोठा भरिये ॥ यहां छटो आठवो कोठा नहीं मिले तो ॥ पांचवों सातवो कोठा नही लीजिये ॥ ऐसें ही तीसरी आदिक ऊपरली सब पंक्ति भरिये ॥ यहां उभी पंक्तिनके । सब तें नीचले कोठानमें । विना प्लुतके भेदनकी संख्या है ॥ और ऊपरले ऊपरले कोठानमें । एक दोय आदिक प्लुतके भेदनकी संख्या जानिये ॥ और लीकके सब कोठा जोडि प्लुतके प्रस्तारभेदकी संख्या होत है ॥ इति प्लुतमेरु लक्षण संपूर्णम् ॥

७. प्लुत मेरु यंत्र.

											१	२	५	१२	२८
१	२	४	८	१५	३०	५८	११४	२२२	४३४	८४७	१६५५	३२३१	६३११	१२३२४	२४ ६१
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

ऐसे अणुद्रुत आदि सातो अंगनके । एक आदि आपकी बुद्धीकी चाही जो संख्या । तहां तांई । खंडप्रस्तार रचिवेको क्रम । इन मेरुनसों समझिये ॥

॥ इति षष्ठो तालाध्याय संपूर्णम् ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR,

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

BY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon. Secretary, Gayan Samaj, Poona.

PART VII:

RAGADHYAYA.

Price of the complete Work in seven parts Rs. 15.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID

1912.

पूना-गायनसमाज.

संगीतसार ७ भाग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवकृत.

प्रकाशक:

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी
सेक्रेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ७ वा रागाध्याय.

पूना 'आर्यभूषण' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण सात अध्यायका मूल्य रु. १५,
और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २॥.

१९१२.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

सप्तमो रागाध्याय—सूचिपत्र.

विषयक्रम. पृष्ठ.

पारिजातके मतसों.

सप्तमो रागाध्याय.

राग और गीति लछन.

योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः ।
रञ्जको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः ॥ १ ॥

अथ रागाध्यायकी वचनिका लिख्यते ॥ तहां प्रथम रागको लछन लिख्यते ॥ जो धुनि वीणानितें अथवा कंठतें उत्पन्न होय और सातों स्वरतें जुक्त होय अरु स्थाई आदि सातों स्वरके च्यारो वर्ण अलंकार जामें युक्त होय ॥ या रीतिसों श्रोतानके चित्तको अनुरंजन करे । सो राग जांनिये ॥

अथ मतंग मुनिके मतसों राग लछन कहत हें ॥ जो स्वर ध्वनि-युक्त अपनें भेदनसों मनकों अनुरंजन करे ताको राग कहतहें ॥

ऐसें हि सोमनाथ मुनि सकल कला प्रवीणहे । सो राग लछन कहतहे ॥ इहां प्रसिद्ध स्वर तालसों मिल्यो धुनि होय । सो राग जांनिये ॥

या रागकों सुनिके कोइ प्रसन्न होतहे ॥ अरु कोइ ऐसें कहतहें के यह राग हमकों रुचत नहीं ॥ यातें अनुरंजनतो आपआपकी इच्छासों होय हे ॥ यासों रागको स्वर तालजुक्त धुनिहें । अपनि रुचीसों अनुरंजन हें ॥

सो या रागके गायवेकी पांच प्रकारकी रीतिहै ॥ तिनको गीत कहतहें ॥ सो यह पांच प्रकारकी गीतिसों राग पांच प्रकारको जांनिये ॥

अथ पांच गीति तिनके नाम लछन लिख्यते ॥ तहां पहली गीतिको नाम शुद्धा जांनिये । १ । दुसरी गीतिको नाम भिन्ना जांनिये । २ । तीसरी गीतिको नाम गौडी जांनिये ।३। चौथी गीतिको नाम वेसरा जांनिये ।४। पांचमी गीतिको नाम साधारणि जांनिये । ५ । इन प्रकार पांच गीतिनके लछन कहेहें । सो समझिये ॥ इति पांच गीतिनके नाम लछन संपूर्णम् ॥

अथ संगीत रत्नाकरके मतसों पांचो गीतिनके लछन लिख्यते ॥ तहां प्रथम शुद्धा गीतिनको लछन कहतहें ॥ जहां रागके स्वर सुधेही उच्चार

कीजिये ॥ समानता कहतें । घट वध नहीं होय बराबर होय अरु मनोहर स्वर होय ॥ काननकों आछो लगे । अरु जामें बहुत कंप नही होय। सो गीति शुद्धा जांनिये ॥ १ ॥ **इति शुद्धा गीतिके लछन संपूर्णम् ॥**

अथ दूसरी गीति भिन्ना ताको लछन लिख्यते ॥ जहां स्वरकों ऱ्हस्व कहतें थोडो उच्चार होय । ओर स्वर विषम होय । विषम कहतें बांके होय । ओर ज्यामें मधुर कंप होय । चित्तकौं एकाग्र करे सो गीति भिन्ना गीति जांनिये ॥ **इति भिन्ना गीति संपूर्णम् ॥**

अथ तीसरी गीति गौडी ताको लछन लिख्यते ॥ जहां रागके स्वर बराबर उच्चार कीजिये ॥ अरु मनोहर होय ओर मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इण तीनों स्थाननमें अत्यंत कंपयुत होय । ओर ज्याकी स्थिति अखंडजुत कहिये । टूटती नहीं होय । अरु तीनों स्थाननमें कानकों प्यारि लग । ओर गोड देशमें प्रसिद्ध होय सो गीति गौडी जांनिये ॥ **इति गौडी गीति संपूर्णम् ॥**

अथ गौडी गीतिको भेद ओहाटी ताको लछन लिख्यते ॥ जहां रागके बराबर स्वरको मृदु उच्चार कीजिये । ओर क्रमसों स्वरनको जलदीजलदी उच्चार कीजिये ऐसे द्रुत द्रुततर वेगजुत स्वर होय स्वरको कंप मनोहर होय । ओर ओकार ओर हकारको वेगस्वर उच्चार होय । अरु ज्याके गायवेकी बेठीकमें व्यति लगति ठाडी रहे । अरु अवाजतामें गहकाकी होय । सिगरेनके मनमें घणी प्यारि लगे सो गौडी ओहाटी जांनिये ॥ **इति ओहाटीको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ चोथी गीति वेसरा ताको लछन लिख्यते ॥ जहां रागके स्वरहे सों द्रुत वेगेसों जलदि जलदि उच्चार कीजिये । अरु स्थाई आदि च्यारों वरननमें । घणो अनुरंजन होय । सो गीति वेसरा जांनिये ॥ **इति वेसरा गीतिको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ पांचमी गीति साधारणि ताको लछन लिख्यते ॥ जहां च्यारों गीतिनके लछन आप मिले । अरु उन लछनके मिलायतें कोईक सुंदर

अनुरंजन जांनोंजाय। सो गीति साधारणि जांनिये ॥ इति पांचो गीतिके नाम लछन संपूर्णम् ॥ ५ ॥

इन पांचों गीतिनके नांवमें गायेहे । एक एक राग पांच प्रकारको जांनिये ॥ तहां शुद्धा गीतिमें गायो राग शुद्धा नाम जांनिये ॥ १ ॥ भिन्नामें गायो राग भिन्नानाम जांनिये ॥ २ ॥ गौडी गीतिमें गायो राग गौडी नाम जांनिये ॥ ३ ॥ वेसरा गीतिमें गायो राग वेसरा नाम जांनिये ॥ ४ ॥ साधारणि गीतिमें गायो राग साधारणि नाम जांनिये ॥ ५ ॥ तहां स्वराध्यायमें मागधी ॥ १ ॥ अर्द्ध मागधी ॥ २ ॥ संभाविता ॥ ३ ॥ पृथुला ॥ ४ ॥ ये च्यारि गीति हे । तिनमें शुद्धादिक गीतिनमें जो भेद हे । ताको लछन कहतहें ॥

जो मागधी आदि च्यारि गीतितो चंचतपुट आदिक मारगी तालनके एक एक आदि भेदनसों होतहे । तासों मागधी आदि गीति है । सो ताल प्रधान गीति है । ताल जिनमें मुख्य होय सो ताल प्रधान जांनिये ॥ ओर ये शुद्धादिक पांच गीति हे सो ऱ्हस्व दीर्घ उच्चारतें । अरु मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इण तीनों स्थाननके कंपतें होत हे । यातें सातों स्वरनमें ये गीति कहीजे हे । तातें ये पांचो स्वर प्रधान गीति हे । ये पांच शुद्धादि गीति दुर्ग आचारिजके मतसों सात गीति कही हे। अरु भरतमुनिके मतमें च्यारों गीति कहीजे हे । याष्टिक आचारिजनें तीन गीति कहीजे हे । अरु शार्दूल मुनिनें एक गीति कही हे ॥ इति गीतिनके लछन वरनन संपूर्णम् ॥

अथ नव प्रकारके रागनके लछन लिख्यते ॥ तहां प्रथमतो ग्राम राग ॥ १ ॥ दूजी उपराग ॥ २ ॥ तीजी भाषाराग ॥ ३ ॥ चोथी विभाषाराग ॥ ४ ॥ पांचमी अंतरभाषाराग ॥ ५ ॥ छटी रागांगराग ॥ ६ ॥ सातमी भाषांगराग ॥ ७ ॥ आठमी क्रियांगराग ॥ ८ ॥ नवमी उपांगराग ॥ ९ ॥ यह नव प्रकारके रागहे ९ एकतो शुद्ध ॥ १ ॥ छायालग ॥ २ ॥ संकीरन ॥ ३ ॥ इण भेदनसों तीन तीन प्रकारके राग जांनिये ॥ ऐसे नव प्रकारके रागनसें सताईस २७ भेद जांनिये ॥ ओर ये सताईस भेद हे । सो संपूरन ॥ १ ॥ षाडव ॥ २ ॥ औडव ॥ ३ ॥ इण तीन भेदनसों तीन प्रकारके हे । सो सगरे रागनके भेद ॥ ८१ ॥ ईक्यासी भेद होत हें ॥

अथ अनुपविलास अनुपांकुश अनुपरत्नाकर चंद्रोदय वा सारंगदेवके मतसों रागके नव ९ भेद लिख्यते ॥ तहां सात स्वरको राग संपूरण जांनिये ॥ १ ॥ छह स्वरको षाडव जांनिये ॥ २ ॥ पांच स्वरको राग ओडव जांनिये ॥३॥ पूरण ओडव ॥४॥ पूरण षाडव ॥५॥ ओडव पूरण ॥६॥ षाडव पूरण ॥ ७ ॥ षाडव ओडव ॥ ८ ॥ ओडव षाडव ॥ ९ ॥ **इति भावभट मतसों नवराग भेद संपूर्णम् ॥**

अथ राग भेदनकी संख्या लिख्यते ॥ तहां ग्राम रागनके तीस भेद हे ॥ ३० ॥ उपरागनके नव भेद हे ॥ ९ ॥ भाषारागनके बीस भेद हे ॥ २० ॥ विभाषा रागनके बीस भेद हे ॥ २० ॥ अंतर भाषा रागनके च्यारि भेद हे ॥ ४ ॥ रागांग रागनके आठ भेद हे ॥ ८ ॥ भाषांगके ग्यारह भेद हे ॥ ११ ॥ क्रियांगके बारह भेद हे ॥ १२ ॥ उपांगके तीन भेद हे ॥ ३ ॥ एसे मार्गी रागनके भेद जांनिये ॥ ओर देशी रागतो अनंतहे जातें देशी रागनकी संख्याको प्रमाण नही ॥ इति **राग भेदनकी संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ ग्राम रागादिकके अनुक्रमसुं लछन लिख्यते ॥ जो षड्ज ग्रामके मध्यम ग्रामके मिलेतें उपजे होय अरु अठारह ॥ १८ ॥ जातिको संबंधी होय। भाषा राग आदिसों न्यारो होय। सो ग्राम राग जांनिये ॥ इति **ग्राम राग लछन संपूर्णम् ॥ १ ॥**

अथ उपरागको लछन लिख्यते ॥ जो ग्रामरागको समीपी होय अरु जातिनतें ओर जाति उतपत्ती होय सो उपराग जांनिये ॥ इति **उपराग लछन संपूर्णम् ॥ २ ॥**

अथ भाषारागको लछन लिख्यते ॥ जो ग्रामरागके आलापको प्रकार जा रागमें रचिके गाईये । सो भाषाराग जांनिये ॥ इति **भाषाराग संपूर्णम् ॥ ३ ॥**

अथ विभाषाको लछन लिख्यते ॥ जो भाषारागको आलाप लोकानुरंजनके अरथ गाइये । सो विभाषा राग जांनिये ॥ **इति विभाषाराग संपूर्णम् ॥ ४ ॥**

अथ अंतरभाषाको लछन लिख्यते ॥ जो विभाषा रागको आलाप

लोकानुरंजनके अरथ गाइये। सो अंतरभाषा जांनिये॥ **इति अंतरभाषा लछन संपूर्णम्॥ ५॥**

अथ रागांगको लछन लिख्यते॥ जो रागमें ग्राम रागकी छाया आवे अरु ग्रामरागतें न्यारो होय ताकों मतंगादि मुनि रागांग कहेहें॥ **इति रागांग राग संपूर्णम्॥ ६॥**

अथ भाषांगको लछन लिख्यते॥ जो रागमें भाषा रागकी छाया बांधिये सो वह राग भाषा रागनतें कछूक जुदो होय ताको भाषांग जांनिये॥ **इति भाषांग राग संपूर्णम्॥ ७॥**

अथ क्रियांगको लछन लिख्यते॥ जा रागके सुनेतें चिंता। १। उछाह। २। करुणा। ३। आदि अनेक क्रिया उपजे। सो क्रियांग जांनिये॥ **इति क्रियांग संपूर्णम्॥ ८॥**

अथ उपांगको लछन लिख्यते॥ जो रागमें उपरागकी छाया वरते सो उपांग जांनिये॥ **इति उपांग राग संपूर्णम्॥ ९॥**

इति मार्गीरागनके नव भेद लछन संपूर्णम्॥

अथ देशीरागको लछन लिख्यते॥ तहां कोईक आचारिज यह कहे हैं। रागांग। १। भाषांग। २। उपांग। ३। क्रियांग। ४। ये च्यार भेद देशी रागनमे जांनिये॥ तहां देसी कहिये जो अपनी इछासों लोकानुरंजनके लिये। च्यार श्रुतिके स्वरको। १। अथवा तीन श्रुतिके स्वरको। २। अथवा दोय श्रुतिके स्वरको। ३। घटि वधि श्रुतिनसों उच्चार कीजिये। जामें शास्त्रको नेम नहि होय ऐसें कहूं कोमल। १। अथवा तीव्र। २। अथवा तीव्रतर। ३। अथवा तीव्रतम। ४। अथवा अति कोमल। ५। अपनी बुद्धि बलसों कीजिये सो रागमें देशी भाव जांनिये॥ अरु शास्त्रकी रीतिसों जहां स्वरनको उच्चार कीजिये सो रागमें मारगी भाव जांनिये॥ ओर देसी रागनको भरतादिक मुनि अनिबद्ध कहे हैं। अनिबद्ध कहिये। शास्त्र रीति जामें नहीं होय यातें देसी राग अनंत है इनकी संख्या नहीं। इनका मारगी रागनमें जब कोई स्वर श्रुति घटि वधि कीजिये तब येही राग देसी राग होत हें॥ **इति देसी रागको लछन संपूर्णम्॥**

अथ शुद्ध । १ । छायालग । २ । संकीर्ण । ३ । इन तीनुको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें शास्त्ररीतिसों स्वरनको उच्चार होय । ओर वा रागकी जो जाति होय । ता जातिको प्रकार होय ऐसें लोकानुरंजन होय सो शुद्ध राग जांनिये ॥ **इति शुद्ध रागको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ छायालग रागको लछन लिख्यते ॥ या छायालगको लौकिकमे सालग कहत हैं जा रागमें लोकानुरंजनके लिये । ओर रागकी छायावरते सो राग छायालग जांनिये ॥ **इति छायालग राग लछन संपूर्णम् ॥**

अथ संकीर्ण रागको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें लोकानुरंजनके लिये शुद्ध ओर छायालग रागोंका मिश्रण करे । सो संकीर्ण राग जांनिये ॥ **इति संकीर्ण राग लछन संपूर्णम् ॥**

अथ रागके गायवेमें जे गति कहिये तिनके नाम लछन लिख्यते ॥ तामें पहली रागकी गति कांडारणा है ताको लछन लिख्यते ॥ जो रागके गायवेमें तारस्थानमें द्रुत वेगसों घणी जलदी कीजिये । अरु जलदीसोंही गमक कीजिये । अरु चतुराईसों राग बिगडे नहीं सो गति कांडारणा जांनिये ॥ **इति कांडारणा संपूर्णम् ॥**

अथ खुल्लगति लछन लिख्यते ॥ जो रागके गायवेमें मंद्रस्थानमें लोकानुरंजनके अरथ गमकनसों विस्तार कीजिये सो खुल्लगति जांनिये ॥ **इति खुल्लगति संपूर्णम् ॥**

अथ फुल्लगतिको लछन लिख्यते ॥ जो रागके गायवेमें मंद्रस्थानमें अरु तारस्थानमें दोऊ ठोर गमकनसों तान विस्तार कीजिये । सो फुल्लगति जांनिये ॥ **इति फुल्लगति संपूर्णम् ॥**

अथ शुद्ध आदिक पांच गीतिनमें गायवेमें शुद्ध आदिक पांच भेदको राग होतहे तिनके क्रमसों राग लिख्यते ॥ तहां षड्जग्राममें षड्ज । १ । कैशिक । २ । मध्यम । ३ । शुद्धसाधारित । ४ । राम शुद्धहै । ओर मध्यमग्राममें पंचम । १ । मध्यमग्राम षाडव । २ । शुद्धकैशिक । ३ । ये राग शुद्धहै । ऐसे दोऊ ग्रामनके मिलिके सात राग शुद्ध जांनिये ॥ **इति सात शुद्ध रागनके नाम संपूर्णम् ॥**

अथ भिन्नरागको लछन लिख्यते ॥ भिन्न गीतिमें गाये ते राग भिन्न नामको होत हे सो राग पांच प्रकारको जांनिये ॥ तहां षड्ज ग्राममें कैशिक मध्यम । १ । भिन्न षड्ज । २ । होतहै । ओर मध्यम ग्राममें तान । १ । कैशिक । २ । भिन्न पंचम । ३ । होतहै । ऐसे दोऊ ग्रामनके मिलिके पांच राग भिन्न जांनिये ॥ **इति भिन्न रागको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ गौड रागके नाम लिख्यते ॥ गौडी गीतिमें गाईये राग गौड जांनिये ॥ सो राग तीन है । ३ । तहां षड्ज ग्राममें गौड । १ । मध्यम कैशिक । २ । होत है ओर मध्यम ग्राममे गौड कैशिक होत है ।१। ऐसे दोऊ ग्रामनके तीन राग गौड जांनिये ॥ **इति गौड रागनके नाम संपूर्णम् ॥**

अथ वेसरा गीतिमें गाये ते राग वेसर जांनिये ॥ सो राग आठ हे । ८। तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां षड्ज ग्राममें टक्क । १ । वेसर षाडव । २ । सौवीर । ३ । ये राग होत है । ओर मध्यम ग्राममें बोट्ट । १ । मालव कैशिक । २ । मालव पंचम । ३ । यह राग होत हे । ओर टक्क कैशिक । १ । हिंदोल । २ । यह राग दोऊ ग्रामनमें होत हे । ऐसे एक एक ग्रामके तो तीन तीन = छह ।६। ओर दोऊ ग्रामके दोय ।२। ये सब मिलके आठ रागके वेसर जांनिये ॥ **इति वेसर नाम राग संपूर्णम् ॥**

अथ साधारणि गीतिमें गाये ते राग साधारणि जांनिये ॥ सो साधारणि राग सात हे ॥ ७ ॥ तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां षड्ज ग्राममें रूप साधार । १ । शक । २ । भस्माणपंच । ३ । यह राग होत हे । ओर मध्यम ग्राममें गांधार पंचम ॥ १ ॥ षड्जकैशिक ॥ २ ॥ यह राग होत है ॥ ककुभराग दोऊ ग्रामनतें होत हे । ऐसें एक ग्रामके ॥३॥ दूसरे ग्रामके ॥२॥ ओर दोऊ ग्रामको एक ऐसें मिलिकें सात ॥७॥ राग साधारणि जांनिये । ऐसें पांच गीतिनमें तीस राग जांनिये । इन तीसों रागनको ग्राम राग जांनिये॥

इहां जा जा गीतींमें जो जो राग कहेहे सोहि राग उन गीतिनमें गाइये । यातें न्यारि न्यारि गीतिके न्यारे न्यारे राग कहते हें सो जांनिये ॥ ये राग दोऊ ग्रामनकी शुद्ध ॥ १ ॥ विकृत ॥ २ ॥ अठारह जातिसों होतहे । यातें उनको ग्राम राग कहे हें ॥ **इति ग्राम राग नाम लछन संख्या समाप्त ॥**

अथ उपरागके अठाईस ॥ २८ ॥ नाम संख्या लिख्यते ॥ यह उपराग षाडज आदिक अठारह रागनसों उपजे हें । परंतु ग्राम रागनके निकट वरति हे । यातें इनकों उपराग कहतहें । तहां प्रथम शकतिलक ।१। टक्कसेंधव । २ । कोकिलापंचम । ३ । रेवगुप्त । ४ । पंचमषाडव । ५ । भावनापंचम । ६ ।नागगांधार । ७ । नागपंचम । ८ । **इति आठ मुख्य उपराग संपूर्णम् ॥**

अथ उपराग बीस ॥ २० ॥ लिख्यते ॥ श्रीराग ।१। नट्ट ।२। बंगाल । ३ । बंगाली । ४ । भास । ५ । मध्यम षाडव ।६। रक्तहंस ।७। कोल्हहास ।८। प्रसव । ९ । भैरव । १० । ध्वनि । ११ । मेघराग । १२ । सोमराग । १३ । कामोद । १४ । कामोदी । १५ । आभ्रपंचम । १६ । कंदर्प । १७ । देशाख्य । १८ । कैशिककुभ । १९ । नट्टनारायण ।२०। **इति बीस ।२०। उपराग संपूर्णम् ॥** ऐसे पहले आठ ओर ये बीस मिलिकें। उपराग अठाईस ।२८। जांनिये ॥

अथ भाषाराग पंद्रह ॥१५॥ तिनके नाम लिख्यते ॥ सौवीर ।१। ककुभ । २ । टक्क । ३ । पंचम । ४ । भिन्न पंचम ।५। टक्ककैशिक । ६ । हिंदोल । ७ । बोट्ट । ८ । मालव । ९ । कैशिक । १० । गांधार पंचम । ११ । भिन्नषड्ज । १२ । वेसर षाडव । १३ । गालव पंचम । १४ । पंचमषाडव ।१५। भाषा कहिये ग्राम रागनके आलाप ताके उपजावे ग्यारहहै । यातें इनको भाषा राग कहत हे । याष्टिकमुनिके मतसों भाषा राग कहे हें ॥ **इति भाषाराग पंद्रह संपूर्णम् ॥**

ओर मतंग मुनिके मतसों छह ग्राम राग भाषारागनकों उपजावें हें । ओर कश्यपके मतसों बारह राग भाषारागनके करता जांनिये ॥ शार्दूल मतमें च्यार ग्राम रागनके करता जांनिये ॥ इति ॥

अथ सकल आचारजके मतसों जुदे जुदे रागनके भाषाराग ।१। विभाषा-राग । २ । अंतरभाषाराग । ३ । तिनके नाम संख्या लिख्यते ॥ तहां प्रथम सौवीर रागकी च्यारि च्यारि भाषाराग, तिनके नाम लछन कहत हें सो जांनो सौवीरी । १ । वेगमध्यमा । २ । साधारिता । ३ । गांधारी । ४ । ओर ककुभ रागके भाषाराग छह तिनके नाम । भिन्न पंचमी । १ । कांबोजी । २ । मध्यमग्रामा । ३ । रगंती । ४ । मधुरी । ५ । शकमिश्रा । ६ ।

ओर याहि ककुभ रागके तीन विभाषाराग है तिनके नाम। भोगवर्धनी । १ । आभीरिका । २ । मधुकरी । ३ । जांनिये ॥

ओर या ककुभरागकी एक अंतर भाषाराग शालिवाहनि । १ । जांनिये ॥

अथ त्रिवणरागकी इकीस ॥२१॥ भाषारागके नाम लिख्यते ॥ टक्कवणा । १ । वैरंजी । २ । मध्यमग्रामा । ३ । देहा । ४ । मालववेसरी । ५ । छेवाटी । ६ । सैंधवी । ७ । कोलाहला । ८ । पंचमलक्षिता । ९ । सौराष्ट्री । १० । पंचमी । ११ । वेगरंजी । १२ । गांधारपंचमी । १३ । मालवी । १४ । तानवलिता । १५ । ललिता । १६ । रविचंद्रिका । १७ । ताना । १८ । वाहेरिका । १९ । दोह्या । २० । वेसरी । २१ ॥ **इति इकीस भाषारागके नाम संपूर्णम् ॥**

या त्रिवणरागकी च्यार विभाषाराग तिनके नाम । देवारवर्धनी । १ । आंध्री । २ । गुर्जरी । ३ । भावनी । ४ । जांनिये ॥

पंचम रागके दस १० भाषा राग तिनके नाम कैशिकी ।१। त्रावणी । २ । तानोद्भवा । ३ । आभीरी ।४। गुर्जरी । ५ । सैंधवी । ६ । दाक्षिणात्या । ७ । आंध्री । ८ । मांगली । ९ । भावनी । १० । जांनिये ॥

या पंचम रागके विभाषा राग दोय तिनके नाम । भस्मानी । १। अंत्रालिका । २ । जांनिये ॥

ओर भिन्न पंचम रागके च्यार भाषाराग तिनके नाम शुद्धधैवतभूषिता । १ । भिन्नधैवतभूषिता । २ । वाराटी । ३ । विशाला । ४ । जांनिये ॥

अथ या भिन्न पंचमरागके विभाषा । १ । तिनके नाम लिख्यते ॥ या भिन्न पंचमरागको विभाषाराग कैशिकी जांनिये ॥

अथ टक्ककैशिक रागके भाषाराग दोय ।२। तिनके नाम लिख्यते ॥ मालवी । १ । भिन्नवलिता । २ । जांनिये ॥

या टक्ककैशिक रागका विभाषाराग द्राविडी । १ । जांनिये ॥

अथ हिंदोल रागके भाषाराग नव ।९। तिनके नाम लिख्यते ॥। वेसरी । १ । चूतमंजरी । २ । षड्ज मध्यमा ।३। मधुरी ।४। भिन्न पौराली ।५। गौडी । ६ । मालव वेसरी । ७ । छेवाटी । ८ । पिंजरी । ९ । जांनिये ॥

अथ वोट्टरागको भाषाराग ॥ मांगली । १ । जांनिये ॥

अथ मालवकौशिक रागके भाषाराग तेरह ।१३। तिनके नाम लिख्यते ॥ बंगाली । १ । मांगली । २ । हर्षपुरी । ३ । मालव वेसरी । ४ । खंजिनी । ५ । गुर्जरी । ६ । गौडी । ७ । पौराली । ८ । शुद्धा । ९ । मालवरूपा । १० । अर्धवेसरी ।११। सैंधवी । १२ । आभीरी । १३ । जांनिये ॥

या मालवकौशिककी विभाषा राग दोय ।२। तिनके नाम कांबोजी । १ । देवारवर्धिनी । २ । जांनिये ॥

गांधार पंचमरागको भाषाराग गांधारी । १ । जांनिये ॥

अथ भिन्न षड्ज रागके भाषाराग १७ तिनके नाम लिख्यते ॥ गांधारवल्ली । १ । कछेली । २ । स्वरवल्ली । ३ । निषादिनी । ४ । त्रवणा । ५ । मध्यमा । ६ । शुद्धा । ७ । दाक्षिणात्या । ८ । पुलिंदिका । ९ । तुंबुरा । १० । षड्जभाषा । ११ । कालिंदी । १२ । ललिता ।१३। श्रीकंठिका ।१४। बंगाली । १५ । गांधारी । १६ । सैंधवी । १७ । जांनिये ॥

अब या भिन्न षड्ज रागके च्यारि विभाषा राग तिनके नाम । पौराली । १ । मालवी । २ । कालिंदी । ३ । देवारवर्धिनी । ४ ।

अथ वेसरषाडव रागके भाषाराग २ तिनके नाम लिख्यते ॥ बाह्या । १ । बाह्यषाडवा । २ । जांनिये ॥

या वेसरषाडवके विभाषाराग ।२। तिनके नाम । पार्वती । १ । श्रीकंठी । २ । जांनिये ॥

अथ मालवपंचम रागके भाषाराग तीन । ३ । तिनके नाम लिख्यते ॥ वेगवती । १ । भाविनी । २ । विभाविनी । ३ । जांनिये ॥

ओर तानरागकी भाषाराग तानोद्भवा । १ । जांनिये ॥

ओर पंचमषाडव रागको भाषाराग पोता । २ । जांनिये ॥

ओर रेवगुप्ति रागको भाषाराग भाषांशका । ३ । जांनिये ॥

ओर याहि रेवगुप्तिको विभाषाराग पल्लवी । ४ । जांनिये ॥

ओर रेवगुप्ति रागहीके अंतरभाषाराग तिनके नाम । भासवलिता । १ । किरणावली । २ । शंकावलिता । ३ । जांनिये ॥

ओर कोईक आचार्य ऐसे कहे जो पल्लवी ।१। भासवलिता । २ । किरणावली । ३ । शंकावलिता । ४ । ईन च्यारों रागनको उपजायवेवारो कोऊराग नही है ये राग आपही स्वच्छंद कहतें न्यारे है ॥ इनको रेवगुप्तिकी विभाषा अंतरभाषा नहिं जांनिये ॥

ऐसे सब रागनके भाषाराग ।९६। ओर विभाषाराग ।२०। ओर अंतरभाषा । ४ । ये सब मिलिके एकसोबीस । १२० । राग होतहे ॥ ऐसे सारंगदेवनें संगीत रत्नाकरमें कहे हैं ॥

तहां मतंगमुनिनें भाषाराग च्यार । ४ । प्रकारके कहे हें ॥ प्रथम मुख्य भाषा । १ । स्वरभाषा । २ । देसभाषा । ३ । उपराग भाषा । ४ । जांनिये ॥

अथ तहां मुख्य भाषाको लछन लिख्यते ॥ जा भाषारागमें षड्जादिक स्वर ।१। गौडादिक देस ईन दोउनको नाम नहि आवे सो भाषाराग मुख्य जांनिये ॥ **इति मुख्य भाषाको लछन संपूर्णम्** ॥

अथ स्वरभाषाको लछन लिख्यते ॥ जा भाषारागमें षड्जादिक सात स्वरनमें एक एक स्वरको वा दोय स्वरको नाम आवे । जिन स्वरनको नाम आवे ते स्वरघणे वरते जाय । सो स्वरभाषा राग जांनिये ॥ **इति स्वरभाषाको लछन संपूर्णम्** ॥

अथ देसभाषाको लछन लिख्यते ॥ जा भाषारागमें गौड आदि देशनको नाम आवे । जा देसको नाम आवे ता देसकी रीतिसों आछि तरह राग गायो जाय । सो देसभाषा जांनिये ॥ **इति देसभाषाको लछन संपूर्णम्** ॥

अथ उपराग भाषाको लछन लिख्यते ॥ जा भाषारागमें तीनो भाषारागनमें न्यारी न्यारी रीति होय । अथवा तीननको लछन मिलतो होय । सो उपराग भाषा जांनिये ॥ **इति च्यार प्रकारके भाषाको लछन संपूर्णम्** ॥

अब ईन च्यारों भाषनके याष्टिक मुनिनें न्यारे नाम कहेहैं मुख्य भाषाको नाम मूलभाषा । १ । स्वरभाषाको नाम संकीर्ण भाषा । २ । देसभाषाको नाम देसभाषा । ३ । उपराग भाषाको नाम छायाभाषा । ४ । ऐसे च्यारोनके नाम जांनिये ॥

तहां बीस भाषाराग है तिनमें शुद्धा । १ । आभीरी । २ । रगंती । ३ । मालववेसरी तीन । ३ । ये छह भाषाराग मुख्यभाषा जांनिये ॥ बाकीके चोदह । १४ । रागनमें सो देसभाषा जांनिये ॥ जो राग स्वरके नामसों होय । सो स्वरभाषा जांनिये ॥ ओर जो राग देसके नामसों होय । सो देसभाषा जांनिये । ३ । जो भाषारागमें स्वरको अथवा देसको नाम नहि होय। सो भाषाराग उपरागभाषा जांनिये ॥

इहां भाषा । १ । विभाषा । २ । अंतरभाषा । ३ । इनके राग एकसोबीस । १२० । कहें तिनमें कोईक दोय रागनको एक नाम है ताको अटकाव नही । नाम दोय च्यारनको एक नाम भलेंही होय ये राग न्यारे न्यारे जांनिये ॥ यातें एक नामके दोय राग अथवा तीन राग होय । तहां संदेह नही करनों जैसें गुर्जरी यहां नाम दोय तीनवार आयो तो यहां गुर्जरी नामके न्यारे न्यारे राग जांनिये ॥ **इति रागाध्यायमें ग्रामराग, उपराग, भाषाराग, विभाषाराग, अंतर-भाषारागनके नाम–लछन–भेद संपूर्णम् ॥**

अथ रागांग । १ । भाषांग । २ । क्रियांग । ३ । उपांग । ४ । राग-नके अनुक्रमसों नाम–संख्या लिख्यते ॥ तहां पहले सत्ययुग । १ । त्रेता । २ । द्वापार । ३ । युगनमें प्रसिद्ध गाये ते जे रागांग । १ । भाषांग । २ । क्रियांग । ३ । उपांग । ४ । राग तिनके नाम कहे हैं ॥

अथ प्रथम रागांगके नाम लिख्यते ॥ शंकराभरण । १ । घंटारव । २ । हंसक । ३ । दीपक । ४ । रीति । ५ । पूर्णाटिका । ६ । लाटि । ७ । पल्लवी । ८ । ये राग आठ । ८ । रागांग जांनिये ॥

अथ भाषांगरागके नाम लिख्यते ॥ गंभीरी । १ । वेहारी । २ । खशिक । ३ । उत्पली । ४ । गोल्ली । ५ । नादांतरी । ६ । नीलोत्पली । ७ । छाया । ८ । तरंगिणी । ९ । गांधारगति । १० । वैरंज्या । ११ । ये ग्यारह राग । ११ । भाषांग जांनिये ॥ **इति भाषांग राग संपूर्णम् ॥**

अथ क्रियांग रागनके नाम लिख्यते ॥ भावक्री । १ । स्वभावक्री । २ । शिवक्री । ३ । मरुकक्री । ४ । त्रिनेत्रक्री । ५ । कुमुदक्री । ६ । अनुक्री । ७ ।

ओजक्री । ८ । इंद्रक्री । ९ । नागक्री । १० । धन्यक्री । ११ । विपायक्री । १२। ये बारह । १२ । राग क्रियांग जांनिये ॥ **इति क्रियांग रागके नाम संपूर्णम् ॥**

अथ उपांग रागके नाम लिख्यते ॥ पूर्णाट । १ । देवाल । २ । गुरुंजिका । ३ । ये तीन राग उपांग जांनिये ॥ ऐसे च्यारों अंगनके मिलिके चोतीस । ३४ । रागहैं । ते भरत मतंग याष्टिक आदि मुनिस्वरननें आगले जुगनगे गाये है ॥

अब या कलियुगमें इनके स्वरूपनको भेद कोई नहीं जाने । जो आगिले पुरुष अपने धरममें सावधानहू तैसो शास्त्र रीतिसों इन रागनको गाम करतेथे कलिजुगमे धरमपर जादा आचरण करते नहिं ॥ लोकमनगाने चलेछे धर्मसूं डरते नहीं है ॥ तोहू इन रागनके गान मंगल करताहै ॥

अथ रागांग । १ । भाषांग । २ । क्रियांग । ३ । उपांग । ४ । इन च्यारों अंगनके अब कलियुममें जे प्रसिद्ध नाम हैं तिनके संख्या लिख्यते ॥

तहां प्रथम रागांग रागनके नाम कहे हैं ॥ मध्यमादि । १ । मालवश्री । २ । तोडी । ३ । बंगाल । ४ । भैरव । ५ । वराटि । ६ । गुर्जरी । ७ । गौड । ८ । कोलाहल । ९ । वसंत । १० । धनाश्री । ११ । देशी । १२ । देशाख । १३ । ये राग तेरह जांनिये ॥ **इति रागांग नाम संपूर्णम् ॥**

अथ भाषांग रागके नाम लिख्यते ॥ तहां प्रथम डोंबक्री याको लोकिकमे भूपाली कहतहैं । १ । आसावरी । २ । वेलावली । ३ । प्रथम मंजरी । ४ । आडिकामोदिका । ५ । नागध्वनि । ६ । शुद्धवराटि । ७ । नट्टा कर्णाट । ८ । बंगाल । ९ । ये राग नव भाषांग जांनिये ॥ **इति भाषांग रागके नाम संपूर्णम् ॥**

अथ क्रियांग रागके नाम लिख्यते ॥ रामकरी । १ । गौडकरी । २ । देवकरी । ३ । ये राग तीन क्रियांग जांनिये ॥ **इति क्रियांग रागनके नाम संपूर्णम् ॥**

अथ उपांग रागके नाम लिख्यते ॥ कौंतलि ॥ १ ॥ द्राविडी ॥ २ ॥ सैंधवी ॥ ३ ॥ स्थानवराटि ॥ ४ ॥ हतस्वरवराटि ॥ ५ ॥ प्रतापवराटि ॥ ६ ॥ छायातोडी ॥ ७ ॥ तुरुष्कतोडी ॥ ८ ॥ महाराष्ट्रीगुर्जरी ॥ ९ ॥ सौराष्ट्रीगुर्जरी

॥ १० ॥ दक्षणागुर्जरी ॥ ११ ॥ द्राविडीगुर्जरी ॥ १२ ॥ भुंछिका ॥ १३ ॥ स्तंभतीर्थिका ॥ १४ ॥ छायाविलावली ॥ १५ ॥ मतापवेलावली ॥ १६ ॥ भैरवी ॥ १७ ॥ कामोदासिंहली ॥ १८ ॥ छायानट्टा ॥ १९ ॥ रामकृति॥२०॥ वल्लातिका ॥ २१ ॥ मल्हारी ॥ २२ ॥ मल्हार ॥ २३ ॥ गौड ॥ २४ ॥ देशवाल याको लौकीकमे कर्णाट कहतहै ॥ २५ ॥ तुरष्क याको लोकिकमे मालवगौड कहतहै ॥ २६ ॥ द्राविड ॥ २७ ॥ ये राग सत्ताईस ॥ २७ ॥ उपांग जांनिये ॥

ये च्यारों अंगनके राग कोईकोईक प्रसिद्ध कहे हैं अरु इनतें ओरहु राग प्रसिद्ध अनेक कहे हैं । सो मतंगमुनिनें ऐसें कहें हैं ॥

जो देसी राग अनंत हैं इनको अनिबद्ध जांनिये ॥ शास्त्रमे बांधे नहीं है। यातें इनकी संख्या नहि परंतु कहे जे च्यारो अंगनके कलियुगमे प्रसिद्ध राग ते सब मिलिके बावन । ५२ । होते हैं ॥ पहलि कहै जो राग अरु ये रागसों सिगरे मिलिके दोयसोचोसठि । २६४ । होतहै ॥ ऐसे संगीत रत्नाकरके करता सारंगदेव कहतहै ॥ इति च्यारो **अंगनके प्रसिद्ध राग-नाम संपूर्णम् ॥**

तहां ग्रामरागादिक नव प्रकारके रागनमें प्रथम तीन ग्राम कहे है ॥ तिन ग्राम रागनमें प्रसिद्ध देशीभाषा विभाषा । अंतरभाषा रागांग । भाषांग क्रियांग । उपांग रागनके उपजायवे । वारे जे ग्रामराग तिनको लछन प्रथम कहे हैं ओर बाकीके ग्राम रागनको लछन । उन रागनके जहां जहां देशीराग आदिराग आंवेंगे तहां तहां कहेंगे ॥

अब देसी रागनके कारण जे ग्रामराग तिनके प्रथम भिन्न षड्ज नामको ग्रामराग है । ताको लछन कहिवेको पहले जाति जाति सामान्य रागको लछन कहेहै ॥ ये जाति सामान्य राग संगीत पारिजातमे कहे है ॥

अथ संगीत पारिजातके मतसों रागनके नाम-संख्या लिख्यते ॥

सैंधव ॥ १ ॥ धनाश्रीके तीन भेद संपूर्ण ॥ २ ॥ षाडव ॥ ३ ॥ औडव ॥ ४ ॥ मेघमल्हार ॥ ५ ॥ नीलांबरी ॥ ६ ॥ मालश्री ॥ ७ ॥ रक्तहंस ॥ ८ ॥ गौरी ॥ ९ ॥ मल्लारी ॥ १० ॥ पंचम ॥ ११ ॥ वसंत ॥ १२ ॥ देसाख्य ॥ १३ ॥ देसकारी ॥ १४ ॥ मुखारी ॥ १५ ॥ भैरवी ॥ १६ ॥ भूपाली ॥ १७ ॥ प्रसभ ॥ १८ ॥ वसंतभैरव ॥ १९ ॥

कोल्हहास ॥ २० ॥ भैरव ॥ २१ ॥ मध्यमादि ॥ २२ ॥ बंगाली ॥ २३ ॥ नारायणी ॥ २४ ॥ विभास ॥ २५ ॥ कानडी ॥ २६ ॥ मेघनाद ॥ २७ ॥ छायातोडी ॥ २८ ॥ तोडि ॥ २९ ॥ मार्गतोडि ॥ ३० ॥ घंटाराग ॥ ३१ ॥ वराटि ॥ ३२ ॥ शुद्धवराटि ॥ ३३ ॥ तोडिवराटि ॥ ३४ ॥ नागवराटि ॥ ३५ ॥ पुन्नागवराटि ॥ ३६ ॥ प्रतापवराटि ॥ ३७ ॥ शोक वराटि ॥ ३८ ॥ कल्याण-वराटि ॥ ३९ ॥ खंभावति ॥ ४० ॥ कल्याण ॥ ४१ ॥ आभीर ॥ ४२ ॥ रामकली ॥ ४३ ॥ मालव ॥ ४४ ॥ सारंग ॥ ४५ ॥ गुणकरी ॥ ४६ ॥ शंकराभरण ॥ ४७ ॥ बृहत ॥ ४८ ॥ बडहंस ॥ ४९ ॥ ककुभ ॥ ५० ॥ गोपिकां-बोधी ॥ ५१ ॥ वेलावली ॥ ५२ ॥ केदारी ॥ ५३ ॥ कांबोधी ॥ ५४ ॥ दीपक ॥ ५५ ॥ पटमंजरी ॥ ५६ ॥ ललिता ॥ ५७ ॥ बहुली ॥ ५८ ॥ गुर्जरी ॥ ५९ ॥ दक्षिणागुर्जरी ॥ ६० ॥ रेवगुप्त ॥ ६१ ॥ गौड ॥ ६२ ॥ केदारगौड ॥ ६३ ॥ कर्णाटगौड ॥ ६४ ॥ सारंगगौड ॥ ६५ ॥ रीतिगौड ॥ ६६ ॥ नारायण-गौड ॥ ६७ ॥ मालवगौड ॥ ६८ ॥ देसी ॥ ६९ ॥ हिंदोल ॥ ७० ॥ मार्ग-हिंदोल ॥ ७१ ॥ टक्क ॥ ७२ ॥ नाट ॥ ७३ ॥ नाटनारायण ॥ ७४ ॥ सालगनाट ॥ ७५ ॥ छायानाट ॥ ७६ ॥ कामोदनाट ॥ ७७ ॥ आभीरनाट ॥ ७८ ॥ कल्याणनाट ॥ ७९ ॥ केदारनाट ॥ ८० ॥ वराटि ॥ ८१ ॥ नाट ॥ ८२ ॥ पूर्या ॥ ८३ ॥ श्रीराग ॥ ८४ ॥ पहाडि ॥ ८५ ॥ सावेरी ॥ ८६ ॥ पूर्वी ॥ ८७ ॥ सारंग ॥ ८८ ॥ सालंग ॥ ८९ ॥ विहंगड ॥ ९० ॥ सामंत ॥ ९१ ॥ नादनामक्री ॥ ९२ ॥ गौण ॥ ९३ ॥ मंगलकौशिक ॥ ९४ ॥ कुडाई ॥ ९५ ॥ देवगांधार ॥ ९६ ॥ त्रिवर्ण ॥ ९७ ॥ कुरंग ॥ ९८ ॥ सौदामिनी ॥ ९९ ॥ देवगिरी ॥ १०० ॥ वैजयंती ॥ १०१ ॥ हंस ॥ १०२ ॥ कोकिल ॥ १०३ ॥ जयश्री ॥ १०४ ॥ सुरालय ॥ १०५ ॥ अर्जुन ॥ १०६ ॥ ऐरावत ॥१०७॥ कंकण ॥१०८॥ कुमुद ॥ १०९ ॥ कल्पतरु ॥११०॥ रत्नावली ॥ १११ ॥ सोरठ ॥ ११२ ॥ मारू ॥ ११३ ॥ चक्रधर ॥ ११४ ॥ मंजुघोष ॥ ११५ ॥ सिंहरव ॥ ११६ ॥ शिववल्लभ ॥ ११७ ॥ आनंदभैरव ॥ ११८ ॥ मनोहर ॥ ११९ ॥ मानवी ॥ १२० ॥ राजधानि ॥ १२१ ॥ रामराज

॥ १२२ ॥ शंकरानंद॥ १२३ ॥ शर्वरी ॥ १२४ ॥ **इति संगीत पारिजातके मतसों रागनकी संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ संगीत रत्नाकरके मतसों नाटरागनकी संख्या लिख्यते ॥
कान्हारनाट । १ । हीरनाट । २ । हमीरनाट । ३ । कामोदनाट । ४ । शुद्धनाट । ५ । मेघनाट । ६ । सारंगनाट । ७ । केदारनाट । ८ । नाट । ९ । **इति नव नाट संपूर्णम् ॥**

अथ अनुपविलासके मतसों सोलह नाटके नाम लिख्यते ॥
शुद्धनाट । १ । सालंगभाट । २ । छायानाट । ३ । केदारनाट । ४ । कल्याण-नाट । ५ । आभीरनाट । ६ । कर्णाटनाट । ७ । वरालीनाट । ८ । सारंगनाट । ९ । कामोदनाट । १० । वर्णनाट । ११ । बिभासनाट । १२ । हम्मीरनाट । १३ । कदंबनाट । १४ । पूर्णनाट । १५ । पूर्यानाट । १६ । **इति अनुप-विलास मतसों सोलह नाट संपूर्णम् ॥**

अथ याष्टिकके मतसों चोदह । १४ । प्रकारके कान्हाडाके नाम-संख्या लछन लिख्यते ॥ शास्त्रमे कान्हाडेको नाम कर्णाट कहे हैं ॥

सुद्धराग मिलीते सो कान्हडोदर बार जांनिये ॥ १ ॥
जामें मल्हारको मेल होय सो कान्हडो नायकी जांनिये ॥ २ ॥
जामें धनासिरीको मिलाप होय सो कान्हडो वागेसरी जांनिये ॥ ३ ॥
जामें मेघरागको मिलाप होय सो कान्हडो अडाना जांनिये ॥ ४ ॥
जामें फरोदस्तरागको मिलाप होय सो कान्हडो शहाणा जांनिये ॥ ५ ॥
जामें जेतसिरीको मिलाप होय सो कान्हडो पूरिया जांनिये ॥ ६ ॥
या पूरियाको मंगलाष्ट कहतहै ॥ जामें मुद्रिकरागको मिलाप होय सो कान्हडा मुद्रिक कान्हडो जांनिये ॥ ७ ॥

जामें गारा रागको मिलाप होय सो कान्हडो गारा कान्हडो जांनिये ॥८॥
जामें हुसेनी रागको मिलाप होय सो कान्हडो हुसेनी कान्हडो जांनिये॥९॥
जामें काफी रागको मिलाप होय सो कान्हडो काफी कान्हडो जांनिये ॥ १० ॥

जामें सोरठ रागको मिलाप होय सो कान्हडो सोरठ कान्हडो जांनिये ॥११॥

जामें खम्बायती रागको मिलाप होय सो कान्हडो, खम्बायती कान्हडो जांनिये ॥ १२ ॥

जामें गौडरागको मिलाप होय सो कान्हडो, गौड कान्हडो जांनिये। याको कान्हडो गौड कहत है ॥ १३ ॥

जामें ओर रागको मिलाप न होय सो कान्हडो कर्णाट जांनिये ॥ १४ ॥ इति चोदह कान्हडाको नाम संपूर्णम् ॥

अथ सारंगदेव राजऋषिके मतसो संपूर्ण । १ । षाडव । २ । औडव । ३ । इन तीन तीन प्रकारके जितने राग है तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां अनुष्टुप् चक्रवर्तिके मतसों नव प्रकारके भैरव भेद लिख्यते ॥ सुद्धगांधार ग्रह संपूर्णम् । १ । अंतर गांधार ग्रह संपूर्णम् । २ । साधारण गांधार ग्रह संपूर्णम् । ३ । वसंत भैरव । ४ । आनंद भैरव । ५ । नंद भैरव । ६ । गांधार भैरव । ७ । स्वर्गाक भैरव । ८ । पंचम भैरव । ९ । ये नव प्रकारके भैरव राग संपूर्णम् ॥ संपूर्ण । १ । षाडव । २ । औडव । ३ । ऐसें तीन प्रकारके भैरव जांनिये ॥ इति नव प्रकारके भैरव संपूर्णम् ॥

अथ नव प्रकारकी गुर्जरी । तहां षड्ज ग्राम आदि लेके सब रागनके उपजायनवारे ग्राम राग कहे है तिन जातिमें लोकीकमें भैरव राग प्रसिद्ध है। ताके कहिवेको अठारह जातिनमें अनुक्रमसों षाड्जी आदि सुद्ध सात जाति छोडिके विकृति जाति जो षड्जोदीच्यवा । ताको लछन स्वराध्यायमें अठारह । १८ । जाति लछननमेंसो तहां देखी लीजिये ॥

अथ जातिनके वरतिवेकी रीति लिख्यते ॥ ये अठारह जाति वरतिवेको संपूर्ण जांनिये कोई जाति एक स्वरके घटाये षाडव होत है। दोय स्वर घटाये तें औडव होत है ताको उदाहरण संपूर्णको भावभटने कह्यो सो कहतहैं । सासा मम गग गगपम गममध पमरिसा धध पध धधसा । ऐसेही षाडवके उदाहरण जांनिये ॥ इति षड्जोदीच्यवती जाति संपूर्णम् ॥

अथ भिन्न षड्ज रागको लछन लिख्यते ॥ षड्जोदीच्यवती जातिसों जाकी उत्पत्ति होय । ओर जामें रिषभ पंचम नहीं होय । जाको अंशस्वर ग्रहस्वर धैवत होय प्रथम स्वर जाको न्यास होय । जाकी उत्तरायता

मूर्छनामें वरताव होय । जामें संचारी वरन सुंदर होय जामें प्रसन्नांत अलंकार होय । जामें काकली निषाद अरु अंतर गांधार होय । जाको देवता ब्रह्माजी है । हेमंतऋतु कहतें । मागसिर पौष इन दोय महिनामें दिनके पहले पहरमें गावनों । ओर जामें बीभच्छ रस भयानक रस मुख्य होय । चक्रवर्ती राजाके राजतिलकके समैं राजाकी सभामें गावनों ऐसो जो राग सो भिन्न षड्ज राग जांनिये ॥

या रागके स्वरनमें षड्ज स्वर भिन्न कहतें विकृत है यातें याको भिन्न षड्ज कहे हैं । ऐसेंही जहां ओर कोउ स्वर भिन्न होय । तहां ऐसेंही विकृत स्वरकी भिन्न संज्ञा जांनिये ॥ सो भिन्न राग च्यार प्रकारको है श्रुति भिन्न । १ । जाति भिन्न । २ । सुद्ध भिन्न । ३ । स्वर भिन्न । ४ । ऐसे च्यार भिन्न जांनिये ॥ भिन्न कहिये विकृत ऐसे बारह । १२ । विकृत अथवा बाईस । २२ । अथवा बियाचालीसनमें । ४२ । जो स्वर विकृत होय सो भिन्न जांनिये ॥ यातें भिन्न षड्ज रागमें षड्ज विकृत जांनिये ॥

अथ प्रथम स्वर भिन्नको लछन लिख्यते ॥ जामें अपनी जातीको वादीस्वरतो लीजिये । अरु संवादीस्वर छोडि दीजिये । अथवा संवादी न्यास स्वर कीजिये । ओर विवादी स्वर अनुवादीस्वरहुं लीजिये । सो राग वा जातितें भिन्न स्वर जांनिये ॥ ऐसे रागहू ते राग भिन्न स्वर जांनिये जैसे शुद्ध षाडवराग । १। तें भिन्न षड्जराग अरु भिन्न पंचमरागको स्वरसमूह न्यारो है ऐसे भिन्न षड्ज भिन्न पंचम शुद्ध षाडवतें भिन्न जांनिये ॥ **इति स्वर भिन्नको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ जाति भिन्नको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें अपनी जातिको अंशस्वर स्वल्पता कहिये । थोडेपनतें अथवा बहूत कहिये । बहूतपनेतें वह अंश स्वर स्थाई वरण होय के ग्रहस्वर होय । ओर बाकीके स्वर सूक्ष्म अथवा अति सूक्ष्म होय अरु कुटिलतालीये होय । सो राग जाति भिन्न जांनिये ॥ कहूंक रागनतेंहू जाति भिन्न होत है । जैसे सुद्ध कैसिक मध्यम रागके ओर भिन्न कैसिक रागके अंशस्वर ग्रहस्वर एकही है तोहू अपनी जातिके स्थाई आदिवर्ण सूक्ष्म अतिसक्ष्म स्वर प्रयोगके भेदतें ये दोउ राग आपसमें जाति भिन्न जांनिये ॥ **इति जाति भिन्नको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ शुद्ध भिन्नको लछन लिख्यते ॥ ओर रागके मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । स्थानके स्वरसमूह छोडि करिके जुदे स्थानके स्वरसमूह जा रागमें होय । ओर वह स्वरसमूह एकही है परंतु स्थानको भेद होय । सो सुद्ध भिन्न जांनिये ॥ जैसे सुद्ध कैसिक रागको ओर भिन्न कैसिक रागको स्वरसमूह एकही है । परंतु शुद्ध कैसिकरागमें वह स्वरसमूह मंद्रस्थानको लीजिये ऐसे स्थान भेदतें शुद्ध कैसिक ओर भिन्न कैसिक । ये दोऊ आपसमें शुद्ध भिन्न जांनिये ॥ **इति शुद्ध भिन्नको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ श्रुति भिन्नको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें च्यार श्रुतिको स्वर विकृत होयके दोय श्रुतिको रहे ओर दोय श्रुतिको गांधार होय सो राग श्रुति भिन्न जांनिये ॥ जैसें भिन्न तानरागमें निषादस्वर काकली होयके षड्जकी पहली दोय श्रुति लेतहे तब च्यारि श्रुतिको षड्ज सो दोय श्रुतिको होत है । ओर गांधार स्वर भिन्न तानरागमें दोय श्रुतिकोही है । यातें भिन्न तानराग श्रुति भिन्न जांनिये ॥ ऐसे काकली निषाद अंतर गांधार भिन्न षड्जमेंहूं कहे हें । तातें भिन्न षड्ज रागहूं श्रुति भिन्न जांनिये ॥ **इति च्यार प्रकारके भिन्न लछन संपूर्णम् ॥**

अथ भिन्न षड्ज रागको ध्यान लिख्यते ॥ जा रागको पीतवरनहै ओर वीर रसमें मगन हैं । संग्राममें हाथमें खड्ग लेके वैरीके माथे काटे हैं। बार बार शस्त्रको चलावे हे ओर कायर पुरुषको देखिके वांके उपर शस्त्र नहि चलावे है । ऐसो जो राग तांहि भिन्न षड्ज जांनिये ॥

अब इहां रागके वरतिवेके जो स्वरसमूह सो पांच प्रकारको हे ॥ आलाप । १ । रूपक । २ । करण । ३ । वर्तिनी । ४ । आक्षिप्तका । ५ । तिनके नाम-लछन कहत है ॥

अथ प्रथम आलापको लछन लिख्यते ॥ रागके जा वरतवेमें ग्रह-स्वर । १ । अंशस्वर । २ । तारस्वर । ३ । मंद्रस्वर । ४ । न्यासस्वर । ५ । अपन्यासस्वर । ६ । इनको थोडापनेको बहुतपनेको अथवा षाडव । १ । औडव । २ । इनको इहां आछीतरह ग्यान नही होय । अरु रागतो आछीतरह वरत्यो जाय सो वरताव आलाप जांनिये ॥

अथ भिन्न षड्जके आलापको उदाहरण लिख्यते ॥ ध गा मा म गा सा सा स ग म धा धा नि ध म ग मा मा मां मां म म ध मा ग सा स स । स ग सं स म धा धा धा स नि सा सा स सा स सा । सा नी सा नी ग नीं सा नी धा धा स नि स सां स स संग संग म धा धा नि धा म ग मा म ध ध नी नी मा गा म गा सा ॥ इति आलाप उदाहरण–लछन संपूर्णम् ॥

अथ रूपकको लछन लिख्यते ॥ जा आलापमें रागके विभागनमें विश्राम करिके स्वरको उच्चार होय । ओर अपन्यास स्वरनको जान्यों जाय ऐसो जो आलाप होय ताको रूपक जांनिये ॥ यह रूपक नाम आलाप भाषा आदिक रागनमें कीजिये ॥ ग्रामराग । १ । उपराग । २ । रागनमें यह मतंम मुनिके मत हैं । ओर इहां करणवर्तनके नाम कहें । परंतु इनके लछन प्रबंधनकी अध्यायमें कहेंहैं । ये दोउ करण । १ । वर्तिनी । २ । प्रबंधरूपही हे । यातें इनको लछन नही कह्यो । यह सारंगदेव राजऋषिके मत है ॥ इति रूपकको लछन संपूर्णम् ॥

अथ आक्षिप्तकाको लछन लिख्यते ॥ जहां जातिनमें कही जे कला तिमकी रीतिसों स्वरनको उच्चार कीजिये । फेर उन स्वरनमें रामकृष्ण आदि शब्दको उच्चार कीजिये । ऐसे जितनी कला होय तितनी कलानमें कीजिये । ओर उन कलानमें चित्र मार्ग । १ । वार्तिक मार्ग । २ । दक्षिण मार्ग । ३ । इन तीनों मार्गनसों चंचतपुट आदि मार्गी तालनके एक कल । १ । द्विकल । २ । चतुष्कल । ३ । भेद होय । ऐसे जो स्वर ओर अक्षर इन दोउनकी रचना रागनमें कीजिये सो आक्षिप्तका जांनिये ॥ इति आक्षिप्तकाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ आक्षिप्तकाको उदाहरण लिख्यते ॥ ध ध ध नि प प म ग स ग म नि ध ध ध नि ध प म ग स ग म ध ॥ जल ०० तरं ०० ग ०० भं ०० गुरं ०० अने ०० करेणु ॥ इति आक्षिप्तकाको उदाहरण संपूर्णम् ॥

अब संगीत रत्नाकरके मतसों भिन्न षड्ज नामके ग्राम रागसों भैरवराग उत्पन्न भयो है सो सब रागको राजा है ॥

अथ श्रीमत् हनुमानजीके मतसों भैरव आदि राग रागीनीनकी उत्पत्ति स्वरूप लछन जंत्र लिख्यते ॥ तहां प्रथम भैरव रागकी उत्पत्ति

लिख्यते ॥ श्रीशिवजीनें तांडव नृत्य रच्यो ता समय सकल देवता, मुनि, असुर, नाग आदि सिगरे आये । ता समय दैत्यनके त्रास देवेके वास्ते श्रीशिवजीके अघोर मुखतें भैरव राग प्रगट भयो । ताको श्रवण करिके दैत्य सब भाग गये देवतानको हर्ष भयो ॥

अथ भैरवरागको स्वरूप लिख्यते ॥ स्वेत जाको रंग है । स्वेत वस्त्रको पहरे हैं । अरु गजचर्मको ओढे हैं । सर्पनके गहणे पहरे हैं । जटाजूटमें गंगाको धरे हैं । ओर चंद्रकलाको ललाटपे धरे हैं । तीन जाके नेत्र है। नरमुंडनकी माला पहरे हैं । अरु जाके हातमें त्रिशूल है । सब रागनके आदि । भैरवराग शास्त्रमें तो यह पांच स्वरनसें गायो है । ध नि स ग म ध । यातें औडव हैं । ओर लोकीकमें अनुरंजनके अरथ ऋषभ । पंचम ये दोऊ स्वरभी वरते हैं । यातें संपूरनहूं है । याको च्यार घडीके सबेरेतें दोय घडीके तडके ताईं । गावनो यहतो याको बखत है । ओर चाहो जब गावो यह राग सदाही मंगलीक है ॥

अथ भैरवरागकी परीक्षा लिख्यते ॥ घाणीमें तील डारि वामें लाठि मेलिके बलध जोते नहीं । ओर भैरवराग गाईये जो वांके गायवेसों घाणीकी लाठि । आपहीसों फिरवे लगे । तब भैरवराग सांचो जांनिये ॥

अब याकी आलाप चारी सात स्वरनमें कीजिये ॥ राग वरतेसो जंत्र लिखिये है। तासों समझिये ॥ यामें ग्रहां सन्यास धैवत है ॥ नृत्य निर्णयके मतसों षड्ज न्यास राख्यो। यह संगीतदर्पणके मतसों भैरवराग है पांच स्वरनसों गायो है। यातें संगीतदर्पणके मतसों औडव जांनिये ॥ ओर राग विबोध चंद्रोदय। नृत्य निर्णय । ओर बगैर ग्रंथनमें यह भैरवराग सात स्वरनमें गायो है षड्ज स्वरमें ग्रह अंशन्यास राखे है । याते भैरवराग संपूर्ण है । यह भैरवराग साक्षात् भैरव स्वरूप है । जो कोई पुरुष श्रद्धा भक्तीसों पवित्र होयके शास्त्र रीतिसों पंचायतन पूजामें देवतानकी स्तुतिमें ये रचि गावे । अथवा नित्य नियमसों सुनें ताको च्यारु पदार्थ शिवजी प्रसन्न होयके देत हैं । यातें मुक्तीकी इच्छा करिके । श्रीशिवजी हनुमानजी नारदजी आदि देवऋषि । भरत आदि ब्रह्मर्षि । सारंगदेव आदि राजर्षि । संगीतशास्त्रके जानिवेवारेनें गायो हे ॥

प्रथम राग भैरव (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक
स	षड्ज असली, मात्रा एक तक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय तक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय तक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय तक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	नि	निषाद अंतर, मात्रा एक तक
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक तक

प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असली, मात्रा एक तक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक तक		

॥ इति भैरव राग संपूर्णम् ॥

अथ इन रागनकी रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ ये छहो राग अपने अपने कारिज करिके। शिवजीके आगे ठाढें भये ता समय पार्वतीजीनें कह्यो तुमको क्या कामनाहे तब रागननें सहाई मांग्यो हमकों स्त्रीरूप सहाई दीजिये। तब पार्वतीनें शिवजीसों विनंति करी महाराज इनकुं स्त्री दीजिये। तब शिवजीनें पार्वतीजीके बचन सुनी। डेरूमेंसो काढी इन छहो रागनको पांच पांच रागनी दीनी। तब रागनी डेरुमेसों निकसि करिके। नृत्यसों शिवजीको प्रसन्न किये। तब शिवजीनें वरदान दीनों जो तुमकों गावेंगे ताके सकल मनोरथ सफल होवेंगे ॥ **इति सकल रागनीनकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥**

अथ भैरवरागकी पांचो रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें डेरूमेंसें सब रागनीनको उत्पन्न करिके। उनमेंसों विभाग करिवेको अघोर मुखसों गायके। प्रथम मध्यमादि नाम रागनी भैरवकी छाया जूक्ति देखी भैरवको दीनी ॥ अथ मध्यमादि रागके स्वरूप लिख्यते ॥ सुवरनको जाको रंग हे। केसरसों चरचित जाको सरीर हे। अरु कमलपत्रसें विसाल जाके नेत्र है। अरु जाके पतिनें हसिके आलिंगन कर जाके मुखको चूंबन कियो है। ऐसी जो रागनी तांहि मध्यमादि जांनिये ॥ ओर लोकिकमें याको मधुमाधव कहे हैं। शास्त्रमें तो यह सात स्वरनसों गाई है। म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण हे। अथवा म प नि स ग म । यातें औडव याको दोय घडीके सबेरेते लें घडीके सबेरे तांई गावनी। एक घडीको प्रमान है यह तो याको बखत हैं। ओर याको दिनके प्रथम पहरमें चाहो जब गावो। याकी आलाप चारी सात स्वरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥ अनूप विलाससें ग्रहांस रिषभ न्यास षड्ज ॥

भैरवरागकी मध्यमादि (मधुमाधवी) रागनी १ संपूर्ण.

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय तक	ध	धैवत असलि, मात्रा दोय तक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय तक	प	पंचम असलि, मात्रा एक तक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक तक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक

(मधुमाधव–ओडव.)

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक
प	पंचम असली, मात्रा एक तक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक	प	पंचम असलि, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक		

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक

अथ भैरवरागकी दूसरी भैरवीरागनी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वाकी रागनीनमेसों विभाग करिवेको । अघोरमुखसों गायकें दूसरी

भैरवी नाम रागनी भैरवकी छाया जुक्ति देखी भैरवको दीनी ॥ अथ भैरवी रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ पीरो जाको रंगहे बडे जाके नेत्रहै। अरु सुंदर कैलासके शिखरमें स्फटिकके सिंहासनपे विराजमान फूले कमलके पत्रनसों शिवका पूजन करतहे । हाथसों ताल बजावतेहै ॥ ऐसी जो भैरवकी रागनी ताहि भैरवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तों यह सात स्वरनसों गाईहै। म प ध नि स रि ग म। यातें संपूरन है ॥ अथवा ध नि स ग म ध । यातें औडव हूंहे ॥ याको घडिके तडके तलक दिन उगें ताई गावनों । दिनके दोय पहर ताई चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरतेसो जंत्रसों समझिये । अनूपविलाससें ग्रहांस न्यास षड्ज ॥

भैरव रागकी द्वितीय रागनी भैरवी २ (संपूर्ण).

म	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक तक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय तक	प	पंचम असलि, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाध उतरी, मात्रा एक तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक तक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय तक

ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक

अथ भैरव रागकी तीसरी बंगाली रागनी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें बाकी रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । अघोर मुखसों गायके तीसरी बंगाली नामरागनी भैरवकी छाया जुक्ति देखी भैरवको दीनी ॥

अथ बंगाली रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर रंग मनोहर जाकी मूर्ति हे । अरू सुंदर मुंजकी कणगती पहरे हे । ओर वृक्षकी वल्कके वस्त्र पहरे हें । लंबो जाको शरीर हे अरू बडो जामें क्रोध हे । अरू सामवेदको गान करत है। ऐसी जो रागनी ताहि बंगाली जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच स्वरनसों गाई हे । स ग म प नि स यातें औडव है अथवा म प ध नि स रि ग म यातें संपूरन है। याको दिनऊगतें ले घडी एक दिनचडे जहां तांई गावनी । यह तो याको वखत हे । दिनके प्रथम पहरमें चाहो जब गावो याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरतेसो जंत्रसों समझिये ॥ अनूपविलाससें ग्रहांस न्यास धैवत ॥

भैरव रागकी तृतीय रागनी बंगाली (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय तक
नि	निषाध उतरी, मात्रा एक तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा च्यार	ग	गांधार उतरी, मात्रा च्यार
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

अथ भैरव रागकी चोथी वरारी नाम रागनी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । अघोर मुखसों गायके वरारी नामरागनी भैरवकी छाया जुक्ति देखे भैरवको दीनी ॥

अथ वरारी रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर रंग सुंदर जाको सरीर है । हाथनमें कंकण पहरे हैं । और अपनें पतिके उपर चवर ढुलावत है । सुंदर जाके केंस है । कल्पवृक्ष फूल काननमें पहरे है । एसी जो रागनी तांहि

वरारी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात स्वरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स यातें संपूरन है । याको दिनके दूसेर पहरकी घडी एक बाकी रहे जब गावनी यहतो याको बखत है । दुसेर पहरमें चाहो जब गावो । अब याकी आलाप चारी सात स्वरनमें किये राग वरेतसो जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें ग्रहांस न्यास षड्ज ॥

भैरव रागकी चतुर्थ रागनी वरारी ४ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

नि	निषाध चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

अथ भैरव रागकी पांचई सैंधवी रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनीमेंसों विभाग करिवेको । अघोर मुखसों गायके । पांचवी सैंधवी नाम रागनी । भैरवकी छाया जुक्ति देखि भैरवकों दीनी । याकों लोकी-कमें सैंधवीको नाम सिंधू कहत हैं ॥ अथ सैंधवीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर सुंदर जाको स्वरूप हैं । कसूमल वस्त्र पहेरे हैं । मिजनाके फूलनको धारे हैं । हाथमें जाके त्रिशूल हैं । शिवजीकी भक्तीमें जाको चित्त आसक्त हैं । प्रचंड जाको कोप हे । वीर रसमें मग्न हैं । ऐसी जो रागनी तांहि सैंधवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात स्वरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूरन है । अथवा स ग म प ध नि स यातें षाडवहूं हैं । याके दिनके दूसरे पहरकी दूसरी घडीमें गावनों ओर संग्राम समेंमें चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें कीये राग वरते सो जंत्रसों समझिये । अनूपविलाससें ग्रहांस धैवत न्यास षड्ज ॥

भैरव रागकी पांचवी रागनी सैंधवी ५ (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाध उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

इति सैंधवी रागनी संपूर्णम् ॥ इति भैरव रागकी सब रागनी संपूर्ण ॥

अथ मालकोंस रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीके वामदेव नाम दूसरे मुखतें मालकोंस भयो । देवतानको अंग दैत्यनके जूद्धतें । छिन्न भिन्न भये तिनके यथायोग्य करिवेके लिये । यह राग अमृतरूप हैं । याके श्रवण करिके देवतानके अंग यथायोग्य भये कौशिक रागको नाम शास्त्रमें मालकौसिक । अरू लोकीकमें मालकोंस कहत है । अथ मालकोंसको स्वरूप लाल जाको रंग है । ओर हाथमें पीरे रंगकी छडी लीये है । आप बडो बीर है । ओर वीरपुरुषनमें जाको परिचय है । वीरपुरुष जाके संग है । वैरीनकी माथानकी माला पहेरे है। एसो जो होय तांहि मालकोंस राग जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स यातें संपूरन है । याको छे घडीके सवेरे तलक च्यार घडीके सवेरे तांई गावनों । यहतो याको बखत है । ओर यह राग मंगलीक है चाहो तब गावो ॥ अथ मालकोंस रागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जोसिघडीमें आरणा छाणा धरीके मालकोंस राग गाईये जो गाईवेसों बिनाही अग्नि डार सिघडी प्रज्वलित होई । तब मालकोंस राग साचो जांनिये ॥ याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें ग्रहांस न्यास षड्जमें ॥

अथ द्वितीय राग मालकोंस २ (संपूर्ण).

म	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम चढी, मात्रा एक	नि	निषाध उतरी निचली सप्तककी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाध उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाध उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मालकौंस राग संपूर्णम् ॥

अथ मालकौंसकी पांचो रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वाकी रागनीनमें विभाग करिवको वामदेव नाम मुखसों गायके । प्रथम रागनी टोडी मालकौंसकी छाया जुक्ति देखी मालकौंसकों दीनी ॥ अथ प्रथम टोडी रागिनीको स्वरूप लिख्यते ॥ याको लोकिकमें मीयाकी टोडी कहे है । जाके अंगतुसार ओर मोगरेके फूल समान ऊज्जल जाको अंग है । ओर केसर

कपूरको अंग राग लगाये है । बनमें हिरनसों विहार करे है । और हाथमें बीण बजावे हैं । ऐसो जो राग तांहि टोडी कहियें । म ध नि स रि ग म । अथवा स रि ग म प ध नि स । यह शास्त्रको मत है । यह सात स्वरनसों गाई है । यातें संपूर्ण है । अरू दिनके दूसरे पहरकी चौथी घडीमें गावनी यहतो याको बखत है । अरू दूसरे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये । अनूपविलाससें ग्रहांस गांधार न्यास षड्जमें ॥

अथ मालकोंसकी प्रथम रागनी टोडी १ (संपूर्ण)

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाध उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम अंतर, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा चार

॥ इति टोडी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मालकोंसकी द्वितीय रागनी खंबायची याको लोकिकमें खंबायती कहत हैं ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याहूकों शिवजीनें वामदेव मुखसों गायके मालकोंसकी छाया जुक्ति देखि मालकोंसकों दीनी ॥ अथ

खंबायतीको स्वरूप लिख्यते ॥ सुंदरता अरू लावण्य जुक्त गौर जाको अंग है। ओर रागकी धूंनी जाको प्यारी है। कोकिलके समान जाके कंठको नाद है। ओर प्रिय वचन कहे हैं। सुखको देह ओर बडी रसज्ञ है । ऐसी जो रागनी तांही खंबायती कहिये। शास्त्रमेंतो यह छ सुरनमें गाई है। ध नि स रि ग म ध। यातें षाडव है याको रात्रिकी दूसरे पहरकी पीछली घडीमें गाईये। ओर रात्रिके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलाप चारी छ सुरनमें किये। राग वरत, सो जंत्रसों समझिये ॥ संगीत दरपनकें मतसें। ग्रहांश। धैवत। न्यास। षड्ज ॥

मालकोंसकी द्वितीय रागनी खंबायती २ (षाडव).

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति मालकोंसकी दूसरी रागनी मारगी खंबायती संपूर्णम् ॥

अथ देसी खंबायतीको जंत्र लिख्यते ॥ ग्रहांश गांधार न्यास षड्ज ॥

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति देशी खंबायती रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मालकोंसकी तीसरी रागनी गौरी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ गौरीहूकों शिवजीनें वामदेव मुखसों गायके मालकोंसकी छाया जुक्ति देखी मालकोंसको दीनी ॥ अथ गौरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर वरण तरुण जाकी अवस्था है । मधुर वचन बोले हें । ओर कानमें आंबके मोर धरे हैं । कोकिलकेसे जाको कंठ स्वर है । ऐसी जो रागनी ताही गौरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है ॥ या रागिनीकों दिन मूंदेसूं लेके घडी एक राति जाय । तहां ताई गाईयें ॥ यहतो

याको बखत है । अरू रात्रिको पहले पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये। राग बरतेंसों जंत्रसों समझिये ॥ अनुपविलाससें संपूरण । ग्रहांश रिषभ न्यास षड्ज ॥

मालकोंसकी तृतीय रागनी--गौरी ३ (संपूर्ण).

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, उपरली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
म	मध्यम चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मालकौंस रागकी तीसरी रागनी गौरी संपूर्णम् ॥

अथ मालकौंसकी चोथी रागनी गुनकरी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ गुणकरीकों शिवजीनें वामदेव मुखसों गायके । मालकौंसकी छाया जुक्ति देखी मालकौंसको दीनी ॥ अथ गुणकरीको स्वरूप लिख्यते ॥ शोक करिके व्याप्त ओर लाल जाके नेत्र है । ओर दीनताईसों देखे हैं नीचो जाको मुख हें । अरू धूमरमें लोटवेसों धूमर जाको देह है । चोटि जाकी खुली रही है। पीयके संगमकी चाहसों पीडित है । ओर करुण रसमें मग्न है । दूबरो जाको अंग है । ऐसी जो रागनी तांहि गुनकरि जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनमें गाई है । स रि म प ध सा । यातें ओडव है । याको दिनके तीसरे पहरके प्रथम एक घडीमें गाईये । यहतो याको वखत है । ओर तीसरे पहरमें चाहो जब गावो । याकी आलाप चारी पांच सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये । संगीत पारीजातसें । ग्रहांश । धैवत । न्यास । षड्ज ॥

मालकौंसकी चोथी रागनी गुनकरी ४ (ओडव).

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, उपरलि सप्तककी मात्रा तीन
स	षड्ज असलि, ऊपरलि सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मालकौंसकी गुनकरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मालकौंसकी पांचई रागनी ककुभा ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याहूकों शिवजींनें वामदेव मुखसों गायके मालकौंसकी छाया जुक्ति देखी मालकौंसको दीनी ॥ अथ ककुभाको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर सुंदर पुष्ट जाके अंग है । अरू रतिके चिन्ह जाके अंगमें है । ओर विचित्र जाको मुख है । चंपाके फूलकी माला पहरे है । कटाक्षयुक्त जाके नेत्र है । ओर पैलेके चित्तकों हावभाव करिके वस करे है । सुंदर जाको स्वरूप है । ऐसी जो रागनी ताहि ककुभा जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गाई है। ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनमें दूसरे पहरमें गावनी । यहतो याको बखत है । ओर दिनके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये । राग वरतेंसों जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें । ग्रहांश । धैवत । यनस । षड्ज ॥

अथ मालकौंसकी पांचमी रागनी ककुभा ५ (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

नि	निषाध चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मालकोंसकी रागनी ककुभा पांचमी संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोल रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीके प्रथम सद्यो-जात नाम मुखतें हिंडोल राग भयो । सो देवतानमें सतो गुणके उदयके अरथ । यह राग आनंदरूप है । याके श्रवण करिके देवतानको चित्त आनंदरूपी । हिंडोलमें झुल्यों यातें हिंडोल कहत है । अथ हिंडोल रागकों स्वरूप लिख्यते ॥ ठेंगनों जाको श्यामरूप हैं।ओर कपोतके कंठकेसी द्युतिको धरे हैं। बडो कामी है। ओर तरुण स्त्री जाको मंद झोला दे हैं । ऐसे हिंडोरामें बेठिके झूलिवेके सुखको धरे है । ऐसो जो राग ताहि हिंडोल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गायो है । स ग म ध नि स । स नि ध म ग स । यातें औडव है। याको दोय घडी दिन चढे उपरांत च्यार घडी दिन चढे जहां तांई गावनों । यहतो याको बखत है । दिनमें चाहो जब गावो ॥ अथ हिंडोल रागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जो हिंडोराको साजि करिके राखिये । ओर वाके आगें हिंडोल राग गाईये । जो गाईवेसों हिंडोरा विनाहि । झोला दीये हाले तब हिंडोल राग सांचो जांनिये ॥ अब याकी आलापचारि पांच सुरनमें किये । राग वरतेसो जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें । ग्रहांश । न्यास । षड्जमें ॥

अथ तृतीय राग हिंडोल ३ (ओढव).

सं	षड्ज असलि,पूरण मात्रा च्यार	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा चार	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज पूरन, मात्रा चार
नि	निषाद चढी, मात्रा एक		

॥ इति तृतीय राग हिंडोल राग संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोल रागकी पांचो रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें वाकी रागनीनमंसों विभाग करिवेकों । पांच रागिनी सद्यो जात नाम मुखसों गायके । हिंडोलकी छाया युक्ती देखि हिंडोल रागको दीनी ॥ अथ बिलावली हिंडोलकी प्रथम रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें पांचो रागनीनेंसों विभाग करिवेकों प्रथम बिलावली सद्यो जात नाम मुखसों गाईके । हिंडोलकी छाया युक्ति देखि हिंडोल रागकों दीनी ॥ अथ बिलावलीको स्वरूप लिख्यते ॥ संकेतमें पियके पास जायवेको । अंगनमें आभूषन पहरे हैं । ओर अपनो इष्ट देव जो कामदेव ताको वारंवार स्मरण करे है ॥ नीले कमलको सो जाको शरीरको रंग है । ऐसी जो रागिनी ताहि बिलावली जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसो गाई है ॥ ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरकी पांचवी घडीमें गावनों ॥ यहतो याको बखतहे । ओर प्रथम पहरमें चाहो तब गावों । याकी आलाप चारि सात सुरनमें किये । राग वरतेसो जो जंत्रसो समझिये । संगीत दरपनसें । ग्रहांश धैवत । न्यास षड्ज । अनूप विलाससें ॥

हिंडोलरागकी प्रथम विलावली रागनी १ (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोलरागकी प्रथम रागनी बिलावली संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी दूसरी रागनी रामकली ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेकों । सद्यो जात नाम मुखसों गाईके । हिंडोलकी छाया युक्ती देखी हिंडोल रागकों दीनी ॥ अथ रामकलीको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेको जाको शरीरको रंग है । अरु देदीप्यमान आभूषन पहरे है । नीले पीतांबरको शरीरमें पहरे है । ओर अपने पतीकेपास बेठी है । मनोहर जाको कंठस्वर है । बडो जाको मान स्वर है । ऐसी जो रागिनी तांहि रामकली जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । याते संपूर्ण है । ओर कोईक याको रिषभ धैवतहीन कहे है । स ग म प नि स । याते ओडव है । ओर कितने ऋ याको पंचम स्वरहीन कहे है । स रि ग म ध नि स । यातें षाडव है । याको दिनके प्रथम पहरकी दूसरी घडीमें गाईये । यह तो याको बखत है । ओर प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें वा छ सुरनमें वा पांच सुरनमें किये राग बरतेतो जंत्रसों समाझिये ॥ संगीत दरपनसें ग्रहांश न्यास षड्ज ॥

हिंडोल रागकी दूसरी रामकली रागनी २ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असली, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक.

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति हिंडोलरागकी दूसरी रागनी रामकली संपूर्णम् ॥

रामकलीको देसी जंत्र रागनी रामकली (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा तीन
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद अंतरकी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति रामकली रागको देसी जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी तीसरी देसाख नाम रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें वाकी रागनीनमेंसों विभाग करिकें । सद्यो जात नाम मुखसों गायकें देसाखको हिंडोलकी छाया जुक्त देखी हिंडोलको देसाख दीनी ॥ अथ देसाखको

स्वरूप लिख्यते ॥ गौर उज्जल वीररससों जाके शरीरमें रोमांच भयो है । मल्ल-जुद्धके संबंधसों विलासयुक्त जाके बाहू है । लंबो जाको स्वरूप है ओर उग्र है । ओर चंद्रमासो जाको मुख है । ऐसी जो रागिनी तांहि देसाख जांनिये ॥ शास्त्रमें तो छ सुरनमें गाई है । ग म प ध नि स ग । यातें षाडव है । ओर कोईक याको संपूर्ण कहे है । ग म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें पांचवी घडीमें गावनी । यहतो याको बखत है । अरु दूसरे पहरमें चाहो जब गावो । याकी आलाप चारी छ सुरनमें वा सात सुरनमें किये राग बरतेसों जंत्रसों समझिये ॥ संगीत पारिजातसें संपूर्ण । ग्रहांश । गांधार । न्यास षड्ज ॥

हिंडोल रागकी तृतीय देसाख रागनी ३ (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मध्यमसों मिं-डीके मात्रा चार
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि॒	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, उपरली सप्तककी मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, निषादसों मिंडि मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोल रागकी तीसरी देसाख रागनी संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी चोथी रागनी पटमंजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

शिवजीनें वाकी रागनीनमेंसों विभाग करिवेकों। सद्यो जात नाम मुखसों पटमंजरी गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखी हिंडोल रागकों दीनी ॥ अथ पटमंजरीको स्वरूप लिख्यते ॥ पतिके वियोगसों अंग जाके दूबरे हैं ओर सुंदर है। ओर जाके कंठमे फूलनकी माल विरहके संतापसों सूकि रही है। प्यारी सखी जाको धिरज बधावे है। ओर धूलिसों धूमर जाको अंग है। ऐसी जो रागनी तांहि पटमंजरी जांनिये। शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है। प ध नि स रि ग म प। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरकी छटी घडीमें गाईये। यह तो याको बखत है। अरु दिनके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलाप चारि। सात सुरनमें किये। राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें। ग्रहांश पंचम संगीत पारिजातसें न्यास षड्ज ॥

इति हिंडोल रागकी चतुर्थ पटमंजरी रागनी ४ (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाध उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाध उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोल रागकी रागनी चोथी पटमंजरी संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी पांचवी रागनी ललितकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उनमेसों विभाग करिवेकों । सद्यो जात नाम मुखसों गाईके । वाको ललित हिंडोलकी छाया युक्ति देखी हिंडोल रागकों दीनी ॥ अथ ललितको स्वरूप लिख्यते ॥ फूले सतपराके फूलनकी माला पहरे है । अरु तरुण जाकी अवस्था है । गोरो जाको रंग है । फूले शोभायमान जाके नेत्र है । विलासमें चतुर है । ऐसो जो राग तांहि ललित जांनिये । शास्त्रमें यह पांच सुरनसों गायो है । स ग प ध नि स । यातें औडव है । अथवा स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । ओर कोईक याको आरंभ धैवतसों कहत है । ध नि स ग प ध । ऐसे हूं औडव है । याको सूरजके उदय पहले एक घडीमें गाईये । यह तो याको वखत है । अरु रातिके चोथे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें ग्रहांश न्यास षड्जमें ॥

हिंडोल रागकी पांचवी ललित रागनी ५ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाध चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति हिंडोलकी पांचवी रागनी ललित संपूर्णम् ॥

अथ ललित रागको मारगी जंत्र लिख्यते (ओडव) ॥

स	षड्ज असलि, ऊपरलि सप्तककी, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	नि	निषाध चढी, मात्रा एक

॥ इति हिंडोल रागकी पांचो रागनी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीके तत्पुरुष चौथे मुखतें दीपक राग भयो आनंद करिके । देवता जड होगये तिनके चेतनाके अरथ । यह राग चैतन्यरूप अग्निमय है । याके श्रवण करिके देवता सावधान भये ॥ अथ दीपककों स्वरूप लिख्यते ॥ बाला स्त्रीसों सुरत करिवेको दीपक युक्त जो घर तामें बेठो है । ओर सुंदर जाको गौर स्वरूप है । तहां नाईकाके सीस फूलके जे रत है । तिनसों अत्यंत प्रकास भयो जांनिके लज्जासों दीपककों बडोकरतो जो राग तांहि दीपक राग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको संध्याके समयमें एक घडी घटतें गांवनो । रातिके तीसरे पहरतांई गांवनो । यह तो याको बखत है । अरु कोई याको बखत सायंकालमें कहे है । अरु दिवालीके दिन चाहो जब गावों सदा मंगलीक है ॥ अथ दीपक रागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जो दीवामें बाति तेल धरि वाकों जोवे नही । अरु दीपक राग गाईये । जो गायवेसों दीया आपहीसों जुपवेलगिजाय तब दीपक राग सांचो जांनिये । यह राग देवलोकमें बरत्योजाय है । मनुष्यलोकमें याको वरतवेकी काहूकी सामर्थ्य नही याते ॥

अथ दीपक रागकी पांचो रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वाकी रागनीनमेसों विभाग करिवेकों । तत्पुरुष नाम मुखसों । पांचो रागनी गाईके ईन रागनीनको दीपककी छाया युक्ति देखी । दीपक रागका दीनी ॥ अथ दीपककी प्रथम रागनी केदारिको स्वरूप लिख्यते ॥ अंग गौर

जिसके माथेमें जटा विराजे है। अरु चंद्रमा जाके भालमें विराजे है। जाके सापनके आभूषन है। और योगपटको धारन करे है। जाको चित्त शिवके ध्यानमें मगन है। ऐसी जो रागनी ताहि केदारी जानिये। शास्त्रमें तो यह पांच सुरमें गाई है। नि स ग म प नि। नि प म ग स नि। यातें औडव है। याको रातिके दूसरे पहरकी प्रथम घडीमें गावनी। यह तो याको बखत है। अरु रातिके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें। ग्रहांश न्यास निषाद॥

अथ दीपक रागकी प्रथम रागनी केदारी १ (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा तीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, ऊपरली सप्तककी मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक